



देश का जल
बचाने के लिए
अब

जल सत्याग्रह ज़रूरी

Testar, Prasad, Jaiswal

देश का जल बचाने
के लिए अब

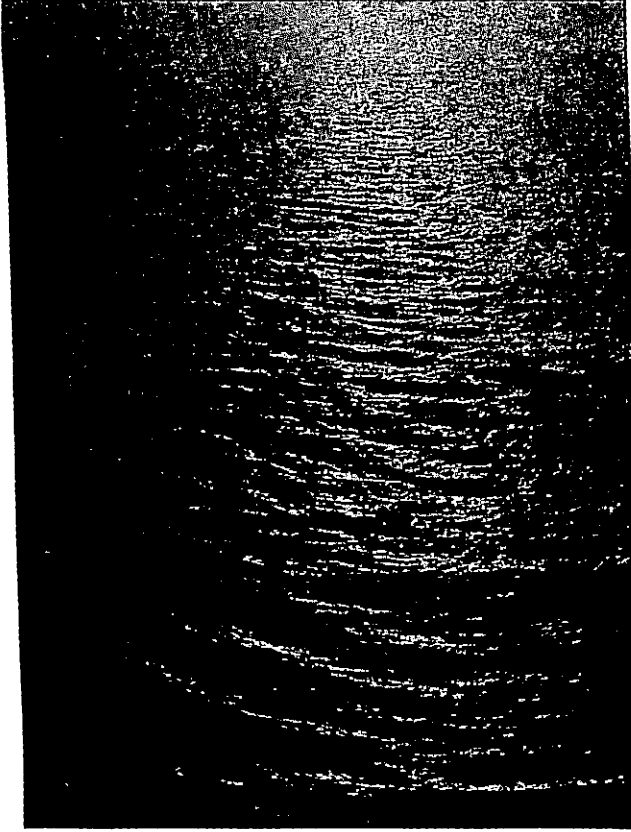
जल सत्याग्रह ज़रूरी



सभी सरल कामों को निरन्तर कठिन
करते जा रहे समाज के नाम

तरुण भारत संघ

अलवर - राजस्थान



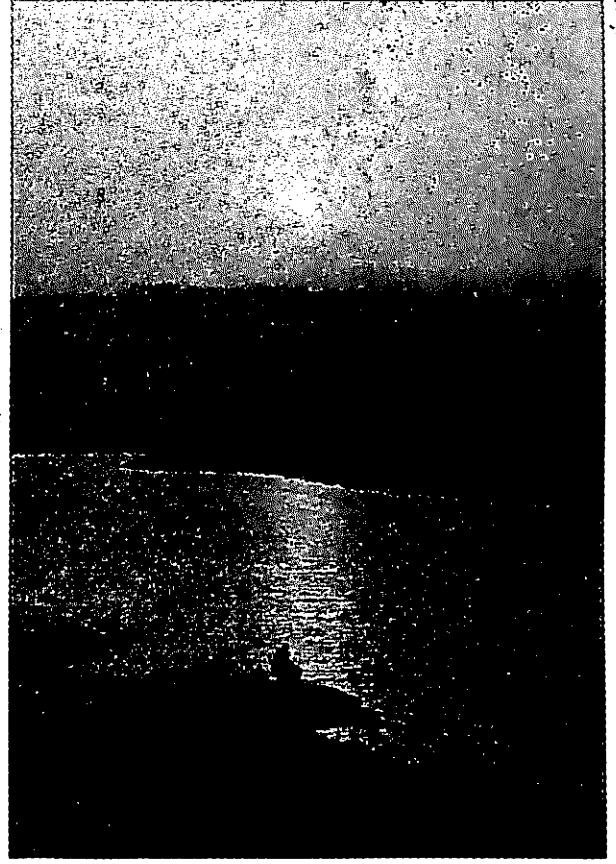
आवरण चित्र	:	अनुपम मिश्र
चित्र	:	तरुण भारत संघ
संयोजन एवं संपादन	:	सुरेन्द्र बांसल
प्रथम संस्करण	:	वर्ष 2005
प्रकाशक	:	तरुण भारत संघ भीकमपुरा, थानागाजी, अलवर 01465-225043, 0141-2393178
मूल्य	:	51/-
मुद्रक	:	कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर

भीतर उपयोग किए गए सभी उद्धरण गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, दिल्ली द्वारा छापी पुस्तकों 'नदियां और हम' तथा 'हमारा पर्यावरण' से साभार

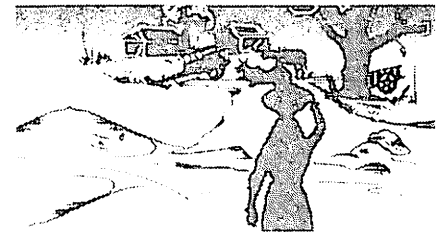
सरिता-संस्कृति

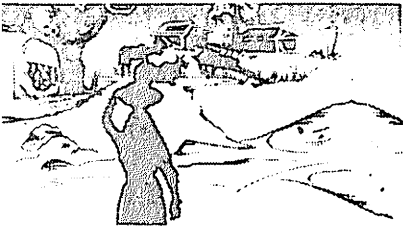
जो भूमि केवल वर्षा के पानी से ही सींची जाती है और जहां वर्षा के आधार पर ही खेती हुआ करती है, उस भूमि को 'देव मातृक' कहते हैं। इसके विपरीत, जो भूमि इस प्रकार वर्षा पर आधार नहीं रखती, बल्कि नदी के पानी से सींची जाती है और निश्चित फ़सल देती है, उसे 'नदी-मातृक' कहते हैं। भारतवर्ष में जिन लोगों ने भूमि के इस प्रकार दो हिस्से किये, उन्होंने नदी को कितना महत्व दिया था, यह हम आसानी से समझ सकते हैं। पंजाब का नाम ही उन्होंने सप्तसिंधु रखा। गंगा-यमुना के बीच के प्रदेशों को अंतर्वेदी (दो-आब) नाम दिया। सारे भारतवर्ष के 'हिन्दुस्तान' और 'दक्खन' जैसे दो हिस्से करने वाले विन्ध्याचल या सतपुड़े का नाम लेने के बदले हमारे लोग संकल्प बोलते समय 'गोदावर्यः दक्षिणे तीरे' या 'रवायाः उत्तरे तीरे' ऐसे नदी के द्वारा देश के भाग करते हैं। कुछ विद्वान ब्राह्मण-कुलों ने तो अपनी जाति का नाम ही एक नदी के नाम पर रखा है- सारस्वत। गंगा के तट पर रहने वाले पुरोहित और पंडे अपने-आपको गंगापुत्र कहने में गर्व अनुभव करते हैं। राजा को राज्यपद देते समय प्रजा जब चार समुद्रों का और सात नदियों का जल लाकर उससे राजा का अभिषेक करती, तभी मानती थी कि अब राजा राज्य करने का अधिकारी हो गया। भगवान की नित्य की पूजा करते समय भी भारतवासी भारत की सभी नदियों को अपने छोटे से कलश में आकर बैठने की प्रार्थना अवश्य करेगा :

गंगे ! च यमुने ! चैव गोदावरि ! सरस्वति !
नर्मदे ! सिन्धु ! कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥



अब शासक वर्ग का नया संदेश यह है कि अधिकार सब हमारे हैं, पर तुम कर्तव्य अवश्य करो।





कवि जिस माटी के गुण गाते थकते नहीं थे, आज वह माटी ही थक चली है। सुजला, सुफला, शस्य श्यामला धरती बंजर बनती जा रही है।

भारतवासी जब तीर्थयात्रा के लिए जाता है, तब भी अधिकतर वह नदी के ही दर्शन करने के लिए जाता है। तीर्थ का मतलब है नदी का पैछला या घाट। नदी को देखते ही उसे इस बात का होश नहीं रहता कि जिस नदी में स्नान करके वह पवित्र होता है उसे अभिषेक की क्या आवश्यकता है? गंगा का ही पानी लेकर गंगा को अभिषेक किये बिना उसकी भक्ति को संतोष नहीं मिलता। सीता जी जब रामचंद्र जी के साथ वनवास के लिए निकल पड़ी, तब वे हर नदी को पार करते समय मनौती मनाती जाती थीं कि 'वनवास से सकुशल वापस लौटने पर हम तुम्हारा अभिषेक करेंगे'। मनुष्य जब मर जाता है, तब भी उसे वैतरणी नदी को पार करना पड़ता है। थोड़े में, जीवन और मृत्यु दोनों में आर्यों का जीवन नदी के साथ जुड़ा है।

उनकी मुख्य नदी तो है गंगा। वह केवल पृथ्वी पर ही नहीं, बल्कि स्वर्ग में भी बहती है और पाताल में भी बहती है। इसीलिए वे गंगा को त्रिपथगा कहते हैं।

पाप धोकर जीवन में आमूलाग्र परिवर्तन करना हो, तब भी मनुष्य नदी में ही जाता है और कमर तक पानी में खड़ा रहकर संकल्प करता है, तभी उसको विश्वास होता है कि अब उसका संकल्प पूरा होने वाला है। वेद काल के ऋषियों से लेकर व्यास, वाल्मीकि, शुक, कालिदास, भवभूति, क्षेमेंद्र, जगन्नाथ तक किसी भी संस्कृत कवि को ले लीजिये, नदी को देखते ही उसकी प्रतिभा पूरे वेग से बहने लगती है। हमारी किसी भी भाषा की कविताएं देख लीजिये, उनमें नदी के स्रोत अवश्य मिलेंगे और हिन्दुस्तान की भोली जनता के लोकगीतों में भी आपको नदी के वर्णन कम नहीं मिलेंगे।

गाय, बैल और घोड़े जैसी उपयोगी पशुओं की जातियां तय करते समय भी हमारे लोगों को नदी का ही स्मरण होता है। अच्छे-अच्छे घोड़े सिंधु के तट पर पाले जाते थे; इसलिए घोड़ों का नाम ही सैंधव पड़ गया। महाराष्ट्र के प्रख्यात टडू भीमा नदी के किनारे पाले जाते थे; अतः वे भीमथड़ी के टडू कहलाए। महाराष्ट्र की अच्छा दूध देने वाली और सुन्दर गायों को अंग्रेज़ आज भी 'कृष्णावेली ब्रीड' कहते हैं।

जिस प्रकार ग्राम्य पशुओं की जाति के नाम नदी पर रखे गये हैं, उसी प्रकार कई नदियों के नाम पशु-पक्षियों के नाम से रखे गये हैं। जैसे : गो-दा, गो-मती, साबर-मती, हाथ-मती, बाघ-मती, सरस्वती, चर्मण्यवती आदि।



महादेव की पूजा के लिए प्रतीक के रूप में जो गोल चिकने पत्थर (बाण) उपयोग में लाए जाते हैं, वे नर्मदा के ही होने चाहिए।

नर्मदा का महात्म्य इतना अधिक है कि वहां के जितने कंकर उतने सब शंकर होते हैं। और वैष्णवों के शालिग्राम गंडकी नदी से आते हैं।

तमसा नदी विश्वामित्र की बहन मानी जाती है, तो कालिन्दी यमुना प्रत्यक्ष काल भगवान यमराज की बहन है। प्रत्येक नदी का अर्थ है संस्कृति का प्रवाह। प्रत्येक की खूबी अलग है। मगर भारतीय संस्कृति विविधता में एकता उत्पन्न करती है। अतः सभी नदियों को हमने सागर पत्नी कहा है। समुद्र के अनेक नामों में उसका सरित्पति नाम बड़े महत्व का है। समुद्र का जल इस कारण पवित्र माना जाता है कि सब नदियां अपना-अपना पवित्र जल सागर को अर्पण करती हैं। 'सागरे सर्वतीर्थानि'।

जहां दो नदियों का संगम होता है, उस स्थान को प्रयाग कहकर हम पूजते हैं। यह पूजा हम केवल इसलिए करते हैं कि संस्कृतियों का जब मिश्रण या संगम होता है तब उसे भी हम शुभ संगम समझना सीखें। स्त्री-पुरुष के बीच जब विवाह होता है तब वह भिन्न गोत्री ही होनी चाहिए, ऐसा आग्रह रखकर हमने यही सूचित किया है कि एक ही अपरिवर्तनशील संस्कृति में सड़ते रहना श्रेयस्कर नहीं है। भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के बीच मेलजोल पैदा करने की कला हमें आनी ही चाहिए। लंका की कन्या घोषा (सौराष्ट्र) के लड़कों के साथ विवाह करती है, तभी उन दोनों में जीवन के सब प्रश्नों के

जल संपदा के मामले में कुछेक संपन्नतम देशों में गिने जाने के बाद भी हमारे यहां जल का संकट बढ़ता जा रहा है। आज गांव की बात तो छोड़िए, बड़े शहर और राज्यों की राजधानियां और देश की राजधानी तक इससे जूझ रही है।





एक समय में समाज अपने से जुड़े कामों को स्वधर्म की तरह निभाता था, आज वे सभी काम विशेषज्ञों की शोध का विषय बन गए हैं।

प्रति उदार दृष्टि से देखने की शक्ति आती है। भारतीय संस्कृति पहले से ही संगम-संस्कृति रही है। हमारे राजपुत्र दूर-दूर की कन्याओं से विवाह करते थे। केकय देश की कैकयी, गांधार की गांधारी, कामरूप की चित्रांगदा, ठेठ दक्षिण की मीनाक्षी मीनल देवी, बिल्कुल विदेश से आयी हुई उर्वशी और माहेश्वरी, इस तरह कई मिसालें बताई जा सकती हैं। आज भी राजा-महाराजा यथासंभव दूर-दूर की कन्याओं से विवाह करते हैं। हमने नदियों से ही यह संगम-संस्कृति सीखी है।

अपनी-अपनी नदी के प्रति हम सच्चे रहकर चलेंगे, तो अंततः समुद्र में पहुंच ही जाएंगे। वहां कोई भेदभाव नहीं रह सकता। सब कुछ एकाकार, सर्वाकार और निराकार हो जाता है। 'साकाष्ठा सा परा गतिः'।

सरिता-पूजक
काका कालेलकर के भक्तिपूर्ण वंदेमातरम्



सप्त सरिता संस्कृति

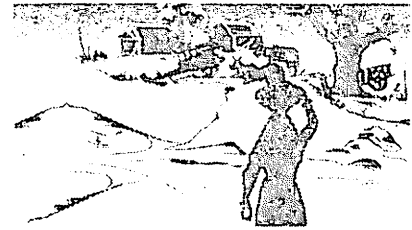
नदी-भक्ति हम भारतीयों की असाधारण विशेषता है। नदियों को हम 'माता' कहते हैं। इन नदियों से ही हमारी संस्कृतियों का उद्गम और विकास हुआ है। नदी देखते ही उसमें स्नान करना, उसके जल का पान करना और हो सके तो उसके किनारे संस्कृति-संवर्धन के लिए दान देना, ये तीनों प्रवृत्तियां नदी दर्शन के अंग हैं। स्नान, पान और दान के द्वारा ही नदी पूजा होती है। कई नदी-भक्त पुरोहितों की मदद लेकर देवी की शास्त्रोक्त पूजा करते हैं। उसमें 'नदी का ही पानी लेकर अभिषेक करना' यह क्रिया भी आ जाती है।

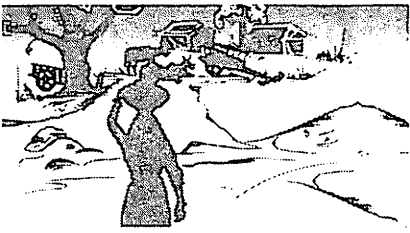
ये नदियां या तो किसी पहाड़ से निकलती हैं या किसी सरोवर से निकलती हैं। दूसरे प्रकार की नदियों को 'सरोजा' कहना चाहिए। तब पहले प्रकार की नदियों को 'गिरिजा' ही कहना पड़ेगा। छोटी नदियां बड़ी नदियों को अपना जल देकर उनमें समा जाती हैं और बड़ी नदियां वह सारा विशाल जल समुद्र को अर्पण करके कृतार्थ होती हैं। इसीलिए समुद्र को अथवा सागर को 'नदीपति' कहने का रिवाज है।

हम जैसे नदी-भक्त हैं, वैसे ही पहाड़ों के पूजक भी हैं। हमारे कई उत्तमोत्तम तीर्थ पहाड़ों के आश्रय में बसे हुए हैं और जब किसी नदी का उद्गम भी किसी पहाड़ में से होता हो तब तो पूछना ही क्या ! वह स्थान पवित्रतम गिना जाता है।

ऐसे पहाड़ों के, ऐसी नदियों के, ऐसे सरोवरों के और ऐसे समुद्रों के नाम कण्ठ करना और पूजा के समय उनका पाठ करना, यह भी बड़ा पुण्य माना गया है।

वर्षा के पानी को छोटे-बड़े तालाबों में एकत्र करने की परंपरा अंग्रेजी राज के दिनों में खूब उपेक्षित हुई और फिर आज़ादी के बाद भी इसकी तरफ ध्यान नहीं दिया गया। कहा जाता है देश की 3 प्रतिशत भूमि पर बने तालाब बरसने वाली कुल वर्षा का 25 प्रतिशत जमा कर सकते हैं। नए तालाब बनाना तो दूर, पुराने तालाब भी उपेक्षा की गाद से पुरते जा रहे हैं।





बारिश या किसी झरने के पानी को रोकने के लिए बनाए जाने वाले तालाबों का चलन हमारे यहां बहुत पुराना है। देश में ऐसे हजारों पुराने तालाब आज भी मौजूद हैं। इलाहाबाद के पास श्रृंगवेरपुर में 5000 साल से ज़्यादा पुराना तालाब मिला है। यही वह तालाब है जहां से श्री राम ने अपने 14 साल के वनवास का आरम्भ निषादराज गुह की नाव से गंगा पार की थी।

जब ऐसे स्थानों के नाम हम कण्ठ करना चाहते हैं तब उनकी संख्या भी हम केवल भक्ति-भाव से निश्चित कर देते हैं। एक, तीन, पांच, सात, नौ, दस, बारह, बीस, एक सौ आठ, हजार, ये सब हमारे अत्यन्त पुण्यात्मक पवित्र आंकड़े हैं।

हमारी सारी पृथ्वी को हम 'सप्तखण्ड' कहते हैं। 'सप्त द्वीपा वसुन्धरा' ये शब्द धर्म साहित्य में आपको जगह-जगह मिलेंगे।

पृथ्वी के खण्ड अगर सात हैं तो उनको घेरने वाले समुद्र भी सात ही होने चाहिए-सप्त सागर। फिर तो भारत की प्रधान नदियां भी सात होनी चाहिए। भारत में नदियां भले ही असंख्य हों, लेकिन हम सात नदियों की ही प्रार्थना करेंगे कि हमारे पूजा के कलश में अपना-अपना पानी लेकर उपस्थित रहो। भारत में तीर्थ-क्षेत्र असंख्य हैं, किन्तु हम लोग उनमें से कण्ठ करने के लिए सात ही नाम पसन्द करेंगे और फिर कहेंगे, शेष सब तीर्थ-स्थान इन्हीं के पेट में समा जाते हैं।

महीने के दिन निश्चित करने का भार सूर्य और चन्द्र ने ले लिया और दोनों ने मिलकर हमारा द्वादश मासिक वर्ष तैयार किया। हमने एक साल के बारह महीने तुरन्त मान्य किये। द्वादश आंकड़ा है ही पवित्र। फिर महीने के दिन हो गए तीस, लेकिन इसमें दिन का हिसाब थोड़ा-थोड़ा कमोबेश करके अमावस्या और पूर्णिमा के दिन संभालने ही पड़ते हैं। एक साल के बारह महीने और हरेक महीने के दो पक्ष, हमने तय नहीं किये। यह व्यवस्था कुदरत ने ही हमारे लिए तय कर दी। अब पक्ष के दो विभाग करना हमारे हाथ में था। हम लोगों ने सूर्य-चंद्र के साथ पांच ग्रहों को पसन्द करके महीने के चार 'सप्ताह' बना दिये।

हम पूजा में खाने-पीने की चीज़े चाहे जितनी रखते होंगे, लेकिन उसके लिए सात धान्यों के ही नाम पसन्द करेंगे।

हम जानते हैं कि नदियों को जन्म देने वाले बड़े-बड़े आठ पहाड़ हैं। ऐसे पहाड़ों को हम 'कुलपर्वत' कहते हैं। अष्टकुल पर्वत को मान्य किए बिना चारा ही नहीं था, तो भी सप्तद्वीप, सप्तसरिता, सप्तसागर (उनको 'सप्तार्णव' भी कहते हैं) और सप्तपाताल के साथ पहाड़ों को भी सप्तपर्वत बनना ही

पड़ा। सप्तभुवन, सप्तलोक और सप्तपाताल के साथ अपने सूर्य को हमने सात घोड़े भी दिये। हमारी देवियां भी सात। यह तो ठीक, लेकिन गीता, रामायण, भागवत आदि हमारे राष्ट्रीय ग्रंथों का सार भी हमने सात-सात श्लोकों में रख दिया। सप्तश्लोकी गीता, सप्तश्लोकी रामायण और सप्तश्लोकी गीता, सप्तश्लोकी रामायण और सप्तश्लोकी भागवत कण्ठ करना बड़ा आसान होता है। आसेतु-हिमाचल भारत में तीर्थ की नगरियां असंख्य हैं। ऐसी अनेकानेक नगरियों के महात्म्य भी लिखे गए हैं। तो भी हम कण्ठ करेंगे :

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।

पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका ॥

(माया याने आज का हरिद्वार, पुरी याने जगन्नाथपुरी नहीं, लेकिन द्वारावती ही सातवीं पुरी है।)

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा के प्रति हार्दिक निष्ठा अर्पण करके हमने भारतीय नदियों के अपने इस स्मरण को और उनके उपस्थान को 'सप्तसरिता' नाम दिया। बचपन में जब हमने पिता जी के चरणों में बैठकर भगवान की पूजा-विधि के मंत्र सीख लिये, तब सात नदियों की पूजा के कलश में आकर बैठने की प्रार्थना भी सीख ली थी :

गंगे! च यमुने! चैव गोदावरि! सरस्वति!

नर्मदे! सिंधु! कावेरी! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

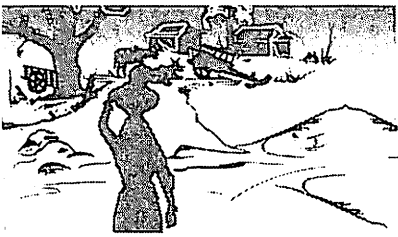
तब नदी-भक्ति के हमारे इस नये ढंग के स्तोत्र को 'सप्तसरिता' नाम दिये बिना नदियों को संतोष कैसे हो सकता है ?

भारत की नदियों में कृष्णा नदी कोई छोटी नदी नहीं है। उसकी लम्बाई, उसके पानी की राशि और उसका सांस्कृतिक इतिहास भारत की किसी भी नदी से कम महत्व का नहीं है। मेरा जन्म इसी नदी के किनारे हुआ। फिर भी ऊपर की सूची में कृष्णा का नाम नहीं है और जिसका रूप और स्थान आजकल कहीं दीख नहीं पड़ता, ऐसी सरस्वती नदी का नाम ऊपर की सूची में मध्य स्थान पर है।

बचपन में और युवावस्था में भी जिसके किनारे खेलता रहा और खेती का परिचय पाने के लिए हल चलाने की मेरी क्रीड़ा भी जिसने देखी थी, ऐसे

देश में जल प्रबन्ध की स्थिति का अंदाज़ा सिर्फ़ इसी से लग जाएगा कि आज तक ऐसा एक भी विस्तृत सर्वेक्षण नहीं हो सका है कि देश में सचमुच कितना पानी है।





पंजाब में लगभग साढ़े
चौदह लाख तथा हरियाणा
में लगभग आठ लाख
सबमर्सिबल धरती के गर्भ
का पानी उलीच रहे हैं।
इन दोनों राज्यों की धरती
सबमर्सिबलों की शर-शय्या
पर टिक चुकी है।

छोटे जल प्रवाह को भले नदी का नाम न दो। भारत की सौ-दो-सौ नदियों के नामों में भी जिसको स्थान नहीं मिलेगा, ऐसी छोटी मार्कण्डी नदी को याद किये बिना मेरा काम कैसे चलेगा? उसको याद करते, प्रारंभ से ही मैंने कहा, “सब नदियों को मैं अपनी माता समझता हूँ और उनकी भक्ति भी करता हूँ लेकिन मार्कण्डी को माता नहीं, सखी ही कहूँगा। वह चाहे जितनी छोटी हो, नगण्य हो, मेरी ओर से किये हुए मेरे उपस्थान में उसको स्थान होना ही चाहिए। नदियों की फेहरिस्त में नहीं, तो मेरी इस प्रस्तावना में ही, उसे आदर और प्रेम का स्थान दूँगा।

अपने सब नदी-भक्त पूर्वजों की दलील का उपयोग करके कहूँगा कि देश की सब नदियाँ इन सातों के भिन्न-भिन्न अवतार ही हैं। सात की संख्या तो रहेगी ही। एक दफे तो विचार हुआ था कि संख्या सत्रह करके पुस्तक का नाम रखूँ- ‘सप्तदशा सरिता’ का नाम छोड़ने को तैयार नहीं हुआ, सो नहीं ही हुआ।

सप्तसरिता की इस आवृत्ति में मेरी भारत-भक्ति ने एक नये विचार को स्वीकार किया है। ये नदियाँ जब पहाड़ की लड़कियाँ हैं तो उनके उपस्थान में उनके पिता को भी श्रद्धांजलि मिलनी ही चाहिए।

हमारे पूर्वजों की नदी-भक्ति आज भी क्षीण नहीं हुई है। आज भी यात्रियों की छोटी-बड़ी मानव-नदियाँ अपने-अपने स्थान से इन नदियों के उद्गम, संगम और समुद्र-मिलन की ओर बह-बहकर उसी प्राचीन भक्ति के उतने ही ताज़े, सजीव और जागृत होने का प्रमाण दे रही हैं।

हम हृदय से चाहते हैं कि हरेक भक्त-हृदय इन भक्ति के उद्गारों को सुनकर प्रसन्न हो और देश के युवकों में अपनी लोकमाताओं का दुग्धपान करके अपनी समृद्ध संस्कृति को, और भी पुष्ट करने की अभिलाषा जाग उठे।

‘सर्वधर्मा एकादशी’

13.4.73

सरिता पूजक
काका कालेलकर के
भक्तिपूर्ण वंदेमातरम्

यह है भयावह नदी जोड़ो योजना

देश में नदियों को जोड़ने का विचार, जो बहुत दिनों से शान्त पड़ा था, खासकर वर्ष 2002 के कावेरी विवाद एवं उसी वर्ष देश के विभिन्न हिस्सों में पड़े सूखे के कारण एक बार फिर चर्चा में आ गया है। एक जनहित याचिका के जवाब में उच्चतम न्यायालय ने इच्छा जतायी है कि भारत में नदियों को जोड़ने की परियोजना आगे बढ़ायी जा सकती है। प्रधानमंत्री ने परियोजना के अमलीकरण के तौर-तरीके पर विचार करने के लिए एक कार्यदल के गठन की घोषणा की एवं घोषित किया है कि इस काम को 'युद्ध गति' से आगे बढ़ाया जाएगा। सरकार द्वारा इसे भावी जल समस्या के स्थायी हल के प्रयास के तौर पर प्रस्तुत किया गया। इस निर्णय पर बहुत गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है एवं इस पर आगे बढ़ने से पहले सरकार द्वारा बहुत सावधानीपूर्वक पुनर्विचार की आवश्यकता है।

योजना का प्रस्ताव

भारत की नदियों को जोड़ने की राष्ट्रीय परिदृश्य योजना दो भागों में विभाजित है। प्रायद्वीपीय नदी विकास भाग और हिमालयी नदी विकास भाग।

प्रायद्वीपीय नदी विकास भाग में एनडब्ल्यूडीए ने 137 नदी घाटियों/ उपघाटियों का जल संतुलन एवं 52 दिशांतरण बिन्दुओं, 58 जलाशयों एवं 18 नदी जोड़ों का स्थलाकृति अध्ययन पूरा कर लिया है।

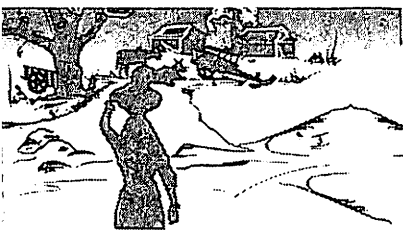
हिमालयी नदी विकास भाग के अंतर्गत 19 दिशांतरण बिन्दुओं का जल संतुलन अध्ययन, 16 जलाशयों का स्थलाकृति अध्ययन, 19 जोड़ों का स्थलाकृति अध्ययन पूरा कर लिया है।

प्रस्तावित नदी जोड़

हिमालयी भाग के प्रस्तावित नदी जोड़ : 1. ब्रह्मपुत्र-गंगा (मानस-शंखोश-तीस्ता-गंगा), 2. कोशी-घाघरा, 3. गंडक-गंगा, 4. घाघरा-यमुना,

नोट- नदी जोड़ो योजना के इस प्रारूप को सम्पादित करने, इसकी भाषा ठीक करने की हिमाकृत हम नहीं कर सके। हम चाहते हैं कि आप इस प्रारूप की भाषा, वाक्य सभी गौर से देखें ताकि आप महसूस कर सकें कि जिन योजनाओं के द्वारा हमारी सरकारें देश के दुःख हरने की बात करती हैं, उन योजनाओं में ममता का, अपनत्व का आखिर एक वाक्य भी क्यों नहीं होता?
- सम्पादक





5. शारदा-यमुना, 6. यमुना-राजस्थान, 7. राजस्थान - साबरमती, 8. चुनार-सोन बैराज, 9. सोन बांध-गंगा की दक्षिणी सहायक नदियां, 10. गंगा-दामोदर-सुवर्ण रेखा, 11. सुवर्ण रेखा-महानदी, 12. कोशी-मेची, 13. फरक्का-सुन्दरवन और 14. ब्रह्मपुत्र-गंगा (जोगीघोपा-तीस्ता-फरक्का)।

प्रायद्वीपीय (पेनिनस्यूलर) भाग में : 15. महानदी (मनिभद्र) - गोदावरी, 16. गोदावरी (इचमपल्ली निचला बांध) - कृष्णा (नागार्जुनसागर छोर तालाब), 17. गोदावरी (इचमपल्ली) - कृष्णा (नागार्जुनसागर), 18. गोदावरी (पोलावरम) - कृष्णा (विजयवाड़ा), 19. कृष्णा (अलमाटी) - पेन्नार, 20. कृष्णा (श्रीसीलम) - पेन्नार, 21. कृष्णा (नागार्जुनसागर) - पेन्नार (सोमासिला), 22. पेन्नार (सोमासिला - कावेरी ग्रैंड एनिकट), 23. कावेरी (कट्टालाई) - वैगाई - गुण्डर, 24. केन - बेटवा, 25. पार्वती - कालीसिंध - चम्बल, 26. पार-तापी - नर्मदा, 27. दमनगंगा - पिंजाल, 28. बेडती - वरदा, 29. नेत्रवती - हेमवती और 30. पम्बा - अचनकोविल - वैप्पार नदी जोड़ प्रस्तावित हैं।

प्रस्तावित नदी जोड़ एवं उनके विवरण

प्रायद्वीपीय भाग : एन डब्ल्यू डी ए ने महानदी, गोदावरी, कृष्णा, पेन्नार, कावेरी, वैगाई, केरल व कर्नाटक की पश्चिमी प्रवाही नदियों, मुम्बई की उत्तरी एवं तापी की दक्षिणी एवं यमुना की दक्षिणी सहायक नदियों सहित विभिन्न प्रमुख नदी घाटियों के जलसंतुलन का अध्ययन किया है। इन अध्ययनों से संकेत मिलता है कि महानदी एवं गोदावरी जलबहुल नदी घाटियां हैं जबकि प्रायद्वीपीय नदियों में कृष्णा, पेन्नार, कावेरी एवं वैगाई जलाभाव वाली घाटियां हैं। अगले क्रम के तौर पर 16 संभावित नदी जोड़ों के लिए पूर्वसंभाव्यता अध्ययन किया गया, जिसमें से 7 के लिए एन डब्ल्यू डी ए ने संभाव्यता अध्ययन भी पूरा कर लिया है। इन अध्ययनों से यह भी संकेत मिलता है कि यह जलबहुल नदी घाटियों से जलाभाव वाली नदी घाटियों में पानी स्थानांतरण के लिए तकनीकी रूप से संभव एवं आर्थिक रूप से व्यवहार्य है। यहां पर प्रत्येक नदी जोड़ के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है। यह जानकारी अस्थायी है एवं डी पी आर के चरण में यह बदल सकता है।

महानदी-गोदावरी नदी जोड़

महानदी पर मनिभद्र जलाशय से 111760 लाख घनमीटर पानी एक सम्पर्क नहर द्वारा गोदावरी नदी के दोलाइस्वरम् जलाशय में डाला जाना प्रस्तावित है। यह नदी जोड़ मार्ग में 4.54 लाख हेक्टेयर ज़मीन की सिंचाई करेगा, जिसमें से 1.02 लाख हेक्टेयर आंध्र प्रदेश में एवं 3.52 लाख हेक्टेयर उड़ीसा में प्रस्तावित है। इस प्रक्रिया में 38540 लाख घनमीटर पानी इस्तेमाल होगा। इस सम्पर्क नहर की कुल लम्बाई 932 किलोमीटर होगी, जिसमें 6.30 किलोमीटर लम्बी सुरंग शामिल है। नहर के मार्ग में रिसाव से 8220 लाख घनमीटर पानी क्षति का आकलन किया गया है। शेष बचे 65000 लाख घनमीटर को दक्षिणी इलाके में मांग पूरा करने के लिए गोदावरी नदी में स्थानांतरित किया जाएगा। इस नदी जोड़ में मनिभद्र बांध पर 966 मेगावाट बिजली बनाने का भी प्रस्ताव है।

महानदी से गोदावरी में पानी स्थानांतरित करने के विचार से उड़ीसा सरकार का महानदी पर मनिभद्र में बांध बनाने का विचार है। जलाशय की सकल एवं सजीव भंडारण क्षमता क्रमशः 93750 लाख घनमीटर एवं 42900 लाख घनमीटर है। स्थानांतरित पानी आंध्र प्रदेश में दोलाइस्वरम् में मौजूदा सर आर्थर कॉटन बैराज में ग्रहण किया जाएगा। सम्पर्क नहर की कुल लम्बाई 932 किलोमीटर होगी, जिसके प्रारम्भ एवं अंतिम जलाशय की ऊंचाई समुद्रतल से क्रमशः 74 मीटर एवं 13.81 मीटर होगी। निकास स्थल पर नहर की डिस्चार्ज क्षमता 627 क्यूमेक्स होगी एवं नहर को पूरे साल संचालित करने का प्रस्ताव है।

मनिभद्र जलाशय से कुल 86 मीटर की जलाशय स्तर पर 45900 हेक्टेयर ज़मीन डूब में आएगी। इस जलाशय में 4881 हेक्टेयर वनभूमि डूब में आने की उम्मीद है। प्रस्तावित मनिभद्र जलाशय के डूब से करीब 90582 लोग प्रभावित होंगे।

इचमपल्ली-नागार्जुनसागर नदी जोड़

गोदावरी नदी का अतिरिक्त पानी एवं महानदी से प्राप्त 65000 लाख घनमीटर पानी सहित कुल 215200 लाख घनमीटर तीन सम्पर्क नहरों के माध्यम से कृष्णा नदी घाटी में स्थानांतरण का प्रस्ताव है, जिसमें से





इचमपल्ली-नागार्जुनसागर पहला सम्पर्क होगा। इसमें 9 किलोमीटर सुरंग सहित 299 किलोमीटर लम्बी सम्पर्क नहर द्वारा 164260 लाख घनमीटर पानी स्थानांतरित किया जाएगा। यह सम्पर्क मार्ग में कुल 3.19 लाख हेक्टेयर ज़मीन की सिंचाई करेगी, जिसमें से 1.98 लाख हेक्टेयर श्रीरामसागर परियोजना की ककतिया नहर चरण-2 के अंतर्गत पड़ता है एवं 1.21 लाख हेक्टेयर श्रीसैलम बायीं तट नहर के अंतर्गत पड़ता है। इसमें 18500 लाख घनमीटर पानी मार्ग में इस्तेमाल होगा एवं 3760 लाख घनमीटर पानी मार्ग में रिसाव से क्षति हो जाएगी। इस नदी जोड़ में पानी को 116 मीटर ऊंचाई पर चढ़ाने के लिए 1705 मेगावाट बिजली की आवश्यकता होगी। इसमें इचमपल्ली बांध पर परिवर्तनीय टरबाइन स्थापित करके 975 मेगावाट बिजली उत्पादन का भी प्रस्ताव है। अंततः दक्षिणी क्षेत्र में ले जाने के लिए करीब 142000 लाख घनमीटर पानी कृष्णा नदी पर नागार्जुनसागर जलाशय में स्थानांतरित किया जाएगा।

इस प्रस्ताव के लिए दो जलाशय प्रस्तावित हैं, उनमें से एक आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा गोदावरी नदी पर 112.77 मीटर जलाशय स्तर वाला इचमपल्ली बांध एवं दूसरा मौजूदा नागार्जुनसागर बांध 179.83 मीटर जलाशय स्तर पर विचार किया गया है। इचमपल्ली बांध की सकल एवं सजीव भंडारण क्षमता क्रमशः 103740 लाख घनमीटर एवं 42850 लाख घनमीटर है। नागार्जुनसागर बांध की सकल एवं सजीव भंडारण क्षमता क्रमशः 115600 लाख घनमीटर एवं 57330 लाख घनमीटर है। इचमपल्ली एवं नागार्जुनसागर के बीच सम्पर्क नहर की कुल लम्बाई 299 किलोमीटर होगी, जिसमें गोदावरी-कृष्णा पहाड़ी को पार कराने के लिए 9 किलोमीटर की सुरंग शामिल है। सम्पर्क नहर के शीर्ष एवं अंतिम छोर की ऊंचाई क्रमशः 142.00 मीटर एवं 182.765 मीटर होगी। डिज़ाइन के अनुसार 1219 क्यूमेक्स निकास क्षमता वाली नहर को वर्ष में 195 दिन संचालित करने का प्रस्ताव है।

इचमपल्ली जलाशय के अंतर्गत कुल डूब 92555 हेक्टेयर होगा, जिसमें से 21734 हेक्टेयर आरक्षित वन होगा, इसके लिए क्षतिपूरक वनीकरण किया जाएगा। जलाशय से लगभग 1 लाख लोग प्रभावित होंगे।

इचमपल्ली निचला बांध-नागार्जुनसागर

अंतिम जलाशय नदी जोड़

गोदावरी को कृष्णा से जोड़ने वाली यह दूसरी नदी जोड़ है। इस नदी जोड़ में 419 किलोमीटर लम्बी सम्पर्क नहर द्वारा 52180 लाख घनमीटर पानी स्थानांतरित किया जाएगा।

इस सम्पर्क नहर में गोदावरी एवं कृष्णा के बीच पहाड़ी को पार करने के लिए 13 किलोमीटर लम्बी सुरंग बनायी जाएगी। इस सम्पर्क नहर के मार्ग में 17570 लाख घनमीटर पानी का इस्तेमाल करते हुए 2.97 लाख हेक्टेयर ज़मीन की सिंचाई एवं मार्ग में 2480 लाख घनमीटर रिसाव के बाद 32130 लाख घनमीटर पानी अंतिम छोर जलाशय में डाला जाएगा। सम्पर्क नहर द्वारा इचमपल्ली दायीं तट नहर के अंतर्गत 0.72 लाख हेक्टेयर की सिंचाई होगी, मार्ग में 0.15 लाख हेक्टेयर नये इलाके एवं नागार्जुनसागर में स्थानांतरण द्वारा उपलब्ध पानी एवं पानी की अदला-बदली से 6.50 लाख हेक्टेयर की सिंचाई प्रस्तावित है। इस प्रस्ताव में पानी को प्रारम्भ में 21 मीटर ऊपर चढ़ाने के लिए 147 मेगावाट बिजली की आवश्यकता होगी।

इस नदी जोड़ में दो बांध प्रस्तावित हैं। उनमें से पहला गोदावरी पर 95.0 मीटर ऊंचे जलाशय स्तर वाला इचमपल्ली बांध एवं दूसरा कृष्णा नदी पर 75.50 मीटर ऊंचे जलाशय स्तर वाला नागार्जुन सागर अंतिम छोर जलाशय के बारे में विचार किया गया है। इचमपल्ली बांध की सकल एवं सजीव भंडारण क्षमता क्रमशः 9760 लाख घनमीटर एवं 29.55 लाख घनमीटर है। जबकि नागार्जुनसागर बांध की सकल एवं सजीव भंडारण क्षमता क्रमशः 9010 लाख घनमीटर एवं 295.50 लाख घनमीटर प्रस्तावित है। इचमपल्ली निचले बांध के पानी को ज़मीन स्तर से 107 मीटर ऊपर उठाने के लिए पानी 21 मीटर ऊंचा उठाना पड़ेगा। इसके बाद पानी गुरुत्वीय भार से आगे बढ़ेगा। सम्पर्क नहर को मार्ग में सिंचाई के लिए पूरे साल संचालित करने एवं नागार्जुनसागर अंतिम छोर जलाशय में स्थानांतरित करने के लिए 153 दिन संचालित करने का प्रस्ताव है।

इचमपल्ली निचले बांध के अंतर्गत करीब 17900 हेक्टेयर ज़मीन डूब में आयेगी, जो कि नदी के हिस्से तक ही सीमित है। पुनर्वास की किसी





समस्या की उम्मीद नहीं है। इस क्षेत्र में अच्छी जलनिकास सुविधा होने के कारण किसी किस्म के जलजमाव एवं इससे संबंधित समस्याओं की उम्मीद नहीं है। नदी के पानी की गुणवत्ता में किसी भी नकारात्मक असर को रोकने के लिए नदी जोड़ के डाउनस्ट्रीम में पर्याप्त प्रवाह सुनिश्चित किया जाएगा।

पोलावरम्-विजयवाड़ा नदी जोड़

गोदावरी से कृष्णा को जोड़ने हेतु यह तीसरा सम्पर्क नहर प्रस्तावित है। यह सम्पर्क नहर गोदावरी के दाहिने तट पर प्रस्तावित पोलावरम् जलाशय से निकलेगी एवं 174 किलोमीटर सम्पर्क नहर द्वारा 53250 लाख घनमीटर पानी स्थानांतरित करेगी। यह नहर आंध्र प्रदेश में कुल 5.82 लाख हेक्टेयर ज़मीन को सिंचाई सुविधा प्रदान करेगी। यह सम्पर्क नहर मार्ग में घरेलू एवं औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए 1620 लाख घनमीटर कृष्णा डेल्टा के मौजूदा लाभ क्षेत्र के लिए 12360 लाख घनमीटर की पूर्ति एवं 2600 लाख घनमीटर रिसाव से क्षति के बाद 22650 लाख घनमीटर पानी कृष्णा डेल्टा में स्थानांतरित करेगी। एन डब्ल्यू डी ए ने इस नदी जोड़ के लिए संभाव्यता अध्ययन पूरा कर लिया है।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा प्रस्तावित पोलावरम् परियोजना का इस्तेमाल सम्पर्क नहर के माध्यम से गोदावरी के पानी को स्थानांतरित करने के लिए किया जाएगा, जो कि विजयवाड़ा में कृष्णा नदी पर मौजूदा प्रकाशम् बराज पहुंचेगा। पोलावरम् जलाशय का स्तर 45.72 मीटर होगा एवं इसकी सकल एवं सजीव भंडारण क्षमता क्रमशः 55110 लाख घनमीटर एवं 21300 लाख घनमीटर है। पोलावरम् बांध स्थल से प्रकाशम् बराज तक सम्पर्क नहर की कुल लम्बाई 174 किलोमीटर होगी। पोलावरम् जलाशय से निकलने वाली सम्पर्क नहर की समुद्रतल से ऊंचाई 40.232 मीटर एवं प्रकाशम् बराज पर नहर की समुद्र तल से ऊंचाई 27.965 मीटर होगी। सम्पर्क नहर को पूरे साल संचालित करने का प्रस्ताव है। नहर के शीर्ष में निकास क्षमता 405.12 क्यूमेक्स आकलन किया गया है। पूरा स्थानांतरण गुरुत्वीय भार से होगा।

पोलावरम् जलाशय से 63691 हेक्टेयर जमीन डूब में आएगी, जिसमें आंध्र प्रदेश की 60063 हेक्टेयर, छत्तीसगढ़ की 2398 हेक्टेयर एवं उड़ीसा की 1230 हेक्टेयर ज़मीन शामिल है। सम्पूर्ण डूब क्षेत्र में 30650 हेक्टेयर कृषि

भूमि एवं 3705 हेक्टेयर वन भूमि शामिल है। जलाशय के डूब से आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं उड़ीसा के 250 गांवों के 1.45 लाख लोग प्रभावित होंगे।

अलमाटी-पेन्नार नदी जोड़

कृष्णा नदी को पेन्नार से जोड़ने के लिए तीन सम्पर्कों पर विचार किया गया है। अलमाटी-पेन्नार पहली सम्पर्क नहर होगी। यह सम्पर्क नहर 19800 लाख घनमीटर पानी स्थानांतरित करेगी एवं मार्ग में 2.35 लाख हेक्टेयर (1.61 लाख हेक्टेयर आंध्र प्रदेश में एवं 0.74 लाख हेक्टेयर कर्नाटक में) ज़मीन को सिंचाई प्रदान करेगी। इस सम्पर्क नहर द्वारा स्थानांतरण के लिए पानी की मात्रा अलमाटी में उपलब्ध कराया जाएगा, जो कि गोदावरी से नागार्जुनसागर में महानदी व गोदावरी नदी घाटी के जलाधिक्य के स्थानांतरण के बदले उपलब्ध कराया जाएगा। इस सम्पर्क नहर की कुल लम्बाई 564 किलोमीटर होगी, जिसमें 36.2 किलोमीटर की पांच सुरंग शामिल हैं।

यह नदी जोड़ कृष्णा नदी घाटी में निर्माणाधीन अलमाटी जलाशय को इस्तेमाल करने के लिए प्रस्तावित है, जो सकल भंडारण क्षमता 11950 लाख घनमीटर एवं 512.256 मीटर ऊंची जलाशय स्तर वाली निर्माणाधीन अपर कृष्णा परियोजना चरण-1 का हिस्सा है। इस परियोजना के साथ सम्पर्क नहर के हैडवर्क के लिए आवश्यक कल्वपल्ली में एक अतिरिक्त जलाशय एवं पेन्नार नदी घाटी में बुकापट्टनम् में मौजूदा जलाशय प्रस्तावित है। पूरी नहर प्रणाली की लम्बाई 564 किलोमीटर होगी, जिसमें पहाड़ी में भारी मोड़ों को टालने के लिए 5 सुरंग भी शामिल हैं। शीर्ष स्थल पर 208.12 क्यूमेक्स निकास क्षमता वाली सम्पर्क नहर साल में जून से नवम्बर तक 180 दिन संचालित होगी। समुद्र तल से 510 मीटर ऊंचे अलमाटी जलाशय से नहर निकलकर तुंगभद्र एवं वेदावती नदियों को पार करके पेन्नार नदी पर प्रस्तावित कल्वपल्ली जलाशय में मिलेगी एवं उसके बाद आगे बहते हुए मौजूदा बुकापट्टनम् जलाशय के माध्यम से पेन्नार की उपनदी मडिलेरू से मिलेगी। यह स्थानांतरण पूरी तरह गुरुत्वीय भार पर आधारित होगा।

अलमाटी जलाशय कुल 25206 हेक्टेयर ज़मीन को डुबोएगा, जिसमें 2295 हेक्टेयर वनभूमि शामिल है। इस परियोजना की वजह से 101 गांवों





के 1.2 लाख लोग प्रभावित होंगे। कर्नाटक सरकार प्रभावित होने वाले लोगों के लिए 50 नये केन्द्रों में पुनर्वास की व्यवस्था कर रही है एवं मूलभूत सुविधाओं सहित प्रभावित लोगों को रोजगार देते हुए नये आदर्श गांव विकसित कर रही है।

श्रीसैलम-पेन्नार नदी जोड़

कृष्णा को पेन्नार से जोड़ने वाली यह दूसरी नदी जोड़ है, इसमें 23100 लाख घनमीटर पानी स्थानांतरण प्रस्तावित है। इस सम्पर्क मार्ग में कोई सिंचाई प्रस्तावित नहीं है। मार्ग में नहरों द्वारा ऊपर से गिरते पानी को इस्तेमाल करने के लिए कुल 17 मेगावाट क्षमता की 4 लघु पनबिजली परियोजनाएं प्रस्तावित हैं। इस सम्पर्क नहर द्वारा पेन्नार नदी में स्थानांतरित किये जाने वाले पानी को सोमासिला में उठाया जाएगा एवं पेन्नार नदी से आगे दक्षिण में पानी ले जाने के लिए इसे नागार्जुनसागर-सोमासिला सम्पर्क नहर के साथ स्थानांतरित किया जाएगा। सम्पर्क नहर की कुल लम्बाई 204 किलोमीटर होगी। एन डब्ल्यू डी ए ने इस नदी जोड़ के लिए संभाव्यता अध्ययन तैयार कर लिया है।

इस नदी जोड़ में कोई बांध या जलाशय बनाने का विचार नहीं है। पानी को मौजूदा श्रीसैलम जलाशय से मोड़ा जाएगा एवं पेन्नार नदी तक यह प्राकृतिक धाराओं से पहुंचेगा। श्रीसैलम जलाशय से पेन्नार नदी पर अपने पहुंच तक सम्पर्क नहर की कुल लम्बाई 204 किलोमीटर होगी। श्रीसैलम नहर प्रणाली के मौजूदा ढांचों जैसे प्रवेश चैनल, पोथीरेड्डीपाडु पर हैड नियंत्रक, श्रीसैलम दार्यी तट मुख्य नहर एवं बनाकाचेरला पर क्रास नियंत्रक का उपयोग पानी के स्थानांतरण के लिए किया जाएगा। बनाकाचेरला पर क्रास नियंत्रक के केन्द्रीय निकास से पानी को पेन्नार नदी पर अदिनीमायापल्ली एनिकट तक पहुंचने तक निपुलावागु, गलेरू एवं कुंडेरू जैसी प्राकृतिक धाराओं में डाला जाएगा। 145 क्यूसेक निकास क्षमता वाली सम्पर्क नहर को 184 दिन संचालित करने का प्रस्ताव है। इस सम्पर्क नहर के मार्ग में कोई सिंचाई का प्रस्ताव नहीं है, क्योंकि वे इलाके मौजूदा एवं निर्माणाधीन परियोजनाओं के लाभ क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं, जबकि मार्ग में सम्पर्क नहर के प्राकृतिक प्रपात को इस्तेमाल करने के लिए कुल 17 मेगावाट स्थापित क्षमता की पनबिजली परियोजना लगाने का प्रस्ताव है।

इस नदी जोड़ के कारण कोई भी नया डूब क्षेत्र नहीं होगा, क्योंकि प्रस्तावित सम्पर्क में मौजूदा श्रीसैलम जलाशय का इस्तेमाल होना है।

नागार्जुनसागर-सोमासिला नदी जोड़

यह कृष्णा नदी एवं पेन्नार नदी को जोड़ने वाली तीसरी सम्पर्क नहर होगी, इसमें 121460 लाख घनमीटर पानी स्थानांतरण का प्रस्ताव है। सम्पर्क नहर की कुल लम्बाई 393 किलोमीटर होगी। सम्पर्क नहर मार्ग में 32640 लाख घनमीटर पानी इस्तेमाल करके आंध्र प्रदेश में 5.81 लाख हेक्टेयर ज़मीन की सिंचाई करेगी। इसमें से 9080 लाख घनमीटर पानी गुंडलाकम्मा एवं पेन्नार के बीच 1.68 लाख हेक्टेयर की सिंचाई के लिए एवं 23560 लाख घनमीटर पानी नागार्जुनसागर के दायीं तट नहर के क्षेत्र में 4.13 लाख हेक्टेयर सिंचाई के लिए इस्तेमाल होगा। मार्ग में पेयजल के लिए 1240 लाख घनमीटर पानी इस्तेमाल होगा एवं 3320 लाख घनमीटर पानी रिसाव से क्षति होगा। सोमासिला में शेष बचे हुए 84260 लाख घनमीटर पानी को कावेरी एवं वैगाई में स्थानांतरण के लिए सोचा गया है। इस सम्पर्क नहर की शुरुआत में 90 मेगावाट की स्थापित क्षमता की पनबिजली परियोजना प्रस्तावित है। एन डब्ल्यू डी ए ने इस प्रस्ताव के लिए संभाव्यता अध्ययन पूरा कर लिया है।

इस नदी जोड़ में किसी नये जलाशय के निर्माण का विचार नहीं है। इसमें मौजूदा जलाशयों, जैसे कृष्णा नदी पर नागार्जुनसागर एवं पेन्नार नदी पर सोमासिला का उपयोग किया जाना प्रस्तावित है। नागार्जुनसागर जलाशय की सकल भंडारण क्षमता 197.83 मीटर जलाशय स्तर पर 115600 लाख घनमीटर है एवं सजीव भंडारण क्षमता 57330 लाख घनमीटर है। सोमासिला में जलाशय की सकल भंडारण क्षमता 100,58 मीटर जलाशय स्तर पर 22080 लाख घनमीटर है एवं सजीव भंडारण क्षमता 19940 लाख घनमीटर है। नागार्जुनसागर से सोमासिला जलाशय तक पहुंचने में सम्पर्क नहर की कुल लम्बाई 393 किलोमीटर है। नागार्जुनसागर की दायीं तट नहर जवाहर नहर के नाम से जानी जाती है, जो नागार्जुनसागर जलाशय से 151.67 मीटर की ऊंचाई से निकलती है, यही नागार्जुनसागर-सोमासिला सम्पर्क नहर होगी। पहले 203 किलोमीटर के लिए सम्पर्क नहर मौजूदा नागार्जुनसागर दायीं तट नहर के समानांतर प्रवाहित होगी एवं 81460 लाख घनमीटर पानी ले जाएगी। इसके बाद





नागार्जुनसागर दायीं नहर द्वारा 16440 लाख घनमीटर पानी स्थानांतरण सहित नयी व्यवस्था द्वारा 97900 लाख घनमीटर पानी ले जाया जाएगा। नागार्जुनसागर दायीं तट नहर की वहन क्षमता 40000 लाख घनमीटर है एवं 16230 लाख घनमीटर पानी इचमपल्ली-पुलिचिंताला सम्पर्क नहर द्वारा प्राप्त करना प्रस्तावित है। नागार्जुनसागर दायीं तट नहर की आवश्यकता 39790 लाख घनमीटर है, जबकि 16440 लाख घनमीटर (40000+16230-39790) पानी 203 किलोमीटर बाद सम्पर्क नहर में स्थानांतरित किया जाना है। यह सम्पर्क नहर सोमासिला जलाशय में 84260 लाख घनमीटर पानी डालेगी। 565 क्यूसेक निकास क्षमता वाली सम्पर्क नहर को पूरे साल में 240 दिनों तक संचालित करने का प्रस्ताव है।

इस नदी जोड़ में कोई नया क्षेत्र डूब में नहीं आएगा, क्योंकि मौजूदा नागार्जुनसागर एवं सोमासिला जलाशय का इस योजना में इस्तेमाल होगा। स्थानांतरण बिन्दु के डाउनस्ट्रीम में पानी की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए पर्याप्त प्रवाह सुनिश्चित की जाएगी।

सोमासिला-ग्रैंड एनिकट नदी जोड़

इस नदी जोड़ के अंतर्गत पेन्नार नदी घाटी में सोमासिला जलाशय से पेन्नार के दक्षिणी हिस्से में पानी स्थानांतरण का विचार है। इस सम्पर्क नहर से सोमासिला जलाशय में पहुंचने वाले 107430 लाख घनमीटर (नागार्जुनसागर-सोमासिला 86480 लाख घनमीटर एवं श्रीसैलम-पेन्नार 20950 लाख घनमीटर) में से 85650 लाख घनमीटर पानी गुरुत्वीय भार से बहेगा। तेलगू गंगा परियोजना की सिंचाई के लिए आवश्यक 8900 लाख घनमीटर पानी की मात्रा सोमासिला-कंडालेरू बाढ़ प्रवाही नहर द्वारा कंडालेरू जलाशय में स्थानांतरित किया जाएगा एवं 12880 लाख घनमीटर का इस्तेमाल पेन्नार डेल्टा के अभाव को पूरा करने के लिए होगा। यह सम्पर्क नहर 538 किलोमीटर प्रवाहित होगी एवं 4.91 लाख हेक्टेयर (आंध्र प्रदेश में 0.49 लाख हेक्टेयर, तमिलनाडु में 4.36 लाख हेक्टेयर एवं पांडिचेरी में 0.06 लाख हेक्टेयर) जमीन को सींचेगी। सम्पर्क नहर द्वारा कुल 85650 लाख घनमीटर पानी स्थानांतरण प्रस्तावित है, जिसमें से मार्ग में सिंचाई के लिए 31700 लाख घनमीटर, मार्ग में घरेलू उपयोग के लिए 2790 लाख घनमीटर, चेन्नई शहर में घरेलू एवं औद्योगिक उपयोग के लिए

8760 लाख घनमीटर, कावेरी नदी में स्थानांतरण के लिए 38550 लाख घनमीटर एवं रिसाव से क्षति 3850 लाख घनमीटर शामिल है।

सोमासिला परियोजना 100.58 मीटर की जलाशय स्तर की पेन्नार नदी पर मौजूदा बहुउद्देशीय परियोजना है। इसकी सकल एवं सजीव भंडारण क्षमता क्रमशः 22080 लाख घनमीटर एवं 19940 लाख घनमीटर है। कावेरी नदी पर ग्रैंड एनिकट या कल्लानी एक बहुत पुरानी परियोजना है, जिसका जलाशय स्तर 59.22 मीटर है। सोमासिला से कावेरी नदी तक इसके पहुंचने तक सम्पर्क नहर की कुल लम्बाई 538 किलोमीटर है। सम्पर्क नहर समुद्रतल से 91.96 मीटर की ऊंचाई से निकलती है एवं गुरुत्वीय भार से बहते हुए समुद्रतल से 59.70 मीटर की ऊंचाई पर कावेरी नदी स्थित ग्रैंड एनिकट से मिलती है। सम्पर्क नहर को 616.38 क्यूसेक निकास क्षमता के साथ पूरे साल संचालित करने का प्रस्ताव है। पूरी सम्पर्क नहर सीमेंट परत से युक्त होगी।

इस नदी जोड़ में भी कोई पर्यावरणीय समस्या नहीं होगी, क्योंकि मौजूदा सोमासिला, कंडालेरू एवं ग्रैंड एनिकट में कल्लानी जलाशय का उपयोग इस जोड़ में किया जाएगा। इस क्षेत्र की स्थिति अच्छी ढलान वाली होने के कारण जलजमाव की समस्या नहीं होगी।

कट्टालाई-वैगाई-गुंडार नदी जोड़

प्रस्तावित जोड़ में कावेरी नदी स्थित मौजूदा कट्टालाई सतह नियंत्रक से 250 किलोमीटर लम्बी गुरुत्वीय भार वाली सम्पर्क नहर द्वारा तमिलनाडु में 3.53 लाख हेक्टेयर ज़मीन की सिंचाई के लिए 20070 लाख घनमीटर इस्तेमाल करते हुए 22520 लाख घनमीटर पानी स्थानांतरण का विचार है। यह नहर मार्ग में 1090 लाख घनमीटर घरेलू एवं औद्योगिक इस्तेमाल हेतु पानी प्रदान करेगी एवं मार्ग में रिसाव से 1360 लाख घनमीटर पानी की क्षति होगी।

मौजूदा कट्टालाई हैड नियंत्रक कावेरी नदी पर मेटुर बांध के डाउनस्ट्रीम में स्थित है। इसके शीर्ष की चौड़ाई 97.83 मीटर से 98.43 मीटर के बीच है एवं शटर का उच्चतम स्तर 98.54 मीटर है। सम्पर्क नहर के लिए हैडवर्क ढांचे की तरह उपयोग के लिए इस नियंत्रक को सुधार कर बराज बनाने का





प्रस्ताव है। सिंचाई के लिए पानी को उठाने के लिए गुंडार नदी पर एक बराज बनाने का प्रस्ताव है। सम्पर्क नहर की कुल लम्बाई 250 किलोमीटर है। सम्पर्क नहर कट्टालाई के पास कावेरी नदी के दाहिने किनारे के हैड नियंत्रक से समुद्रतल से 100.75 मीटर ऊंचाई से निकलती है एवं समुद्रतल से 78.865 मीटर की ऊंचाई पर गुंडार नदी से मिलती है। घरेलू व औद्योगिक आपूर्ति एवं कृषि आवश्यकता की पूर्ति के लिए सम्पर्क नहर को पूरे साल भर संचालित करने का प्रस्ताव है। पूरी सम्पर्क नहर को सीमेंट से प्लास्टर करने की योजना है।

इस सम्पर्क नहर में भी कोई पर्यावरणीय मुद्दा नहीं है। सम्पर्क नहर के जलाभाव वाले क्षेत्र से नहर गुज़रने के कारण जलजमाव की उम्मीद नहीं है। यह उस क्षेत्र में भू-जल के पुनर्भरण में लाभकारी होगा।

पम्बा-अचनकोविल-वैप्पार नदी जोड़

एन डब्ल्यू डी ए ने इस सम्पर्क नहर के लिए संभाव्यता अध्ययन पूरा कर लिया है। इस सम्पर्क नहर द्वारा केरल के पम्बा एवं अचनकोविल नदी घाटी में उपलब्ध जलाधिक्य को तमिलनाडु के सूखा प्रभावित तिरुनेलवेली, चिंदम्बरनर एवं कामाराजर में 91400 हेक्टेयर ज़मीन की सिंचाई के लिए वैप्पार नदी घाटी में 6340 लाख घनमीटर पानी स्थानांतरण का प्रस्ताव है। इसके अलावा परियोजना 508 मेगावाट बिजली उत्पादन करेगी एवं सूखे मौसम में पम्बा एवं अचनकोविल नदियों में प्रवाह को बढ़ाने एवं खारेपन को रोकने के लिए 1500 लाख घनमीटर नियंत्रित पानी छोड़ेगी।

इस नदी जोड़ परियोजना में पम्बा कालअर पर 150 मीटर ऊंचा कंक्रीट का बांध, अचनकोविल कालअर पर 160 मीटर ऊंचा कंक्रीट का बांध एवं अचनकोविल नदी पर 35 मीटर ऊंचा कंक्रीट का बांध शामिल है। पुन्नामेडु जलाशय से अचनकोविल कालअर जलाशय में पानी स्थानांतरण के लिए पुन्नामेडु एवं अचनकोविल कालअर बांध आपस में 5 मीटर व्यास एवं 8 किलोमीटर लम्बी सुरंग द्वारा जुड़े होंगे। अचनकोविल नदी का पानी अचनकोविल कालअर जलाशय में डाला जाएगा। अचनकोविल कालअर जलाशय का पानी 8 मीटर व्यास एवं 9 किलोमीटर लम्बी सुरंग द्वारा पश्चिमी घाट के पार भेजा जाएगा। वैप्पार की एक उपनदी अलागार ओडाई तक पहुंचने में मुख्य नहर 50.68 किलोमीटर लम्बी होगी। अचनकोविल

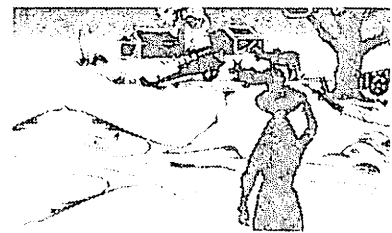
कालअर बांध के छोर में 500 मेगावाट की स्थापित क्षमता की उच्च मांग वाली पनबिजली परियोजना स्थित होगी। कुल 8.37 मेगावाट की स्थापित क्षमता की 6 लघु पनबिजली परियोजनाएं स्थापित होंगी, जो कि पुन्नामेडु एवं अचनकोविल कालअर को जोड़े जाने वाले सुरंग के शीर्ष पर, अचनकोविल बांध के छोर पर एवं मुख्य नहर के प्रपात पर चार पनबिजली परियोजनाएं स्थापित होंगी। उच्च मांग वाली पनबिजली परियोजना में 100 मेगावाट की 5 इकाइयां होंगी। तीन इकाइयां परिवर्तनीय क्रिस्म की होंगी। अचनकोविल कालअर जलाशय से 6 घंटे की उच्च मांग के लिए छोड़े जाने वाले 100 लाख घनमीटर पानी को अचनकोविल कालअर जलाशय में शेष समय में इस्तेमाल के लिए डाला जाएगा।

पुन्नामेडु जलाशय 440 हेक्टेयर ज़मीन को डुबोएगी, जो कि पूरा वनक्षेत्र है। इस डूब से कोई आबादी प्रभावित नहीं होगी। अचनकोविल कालअर बांध का डूब क्षेत्र 1241 हेक्टेयर है, जिसमें 872 एकड़ प्राकृतिक वन एवं शेष सागौन वृक्षारोपित इलाका है। अचनकोविल बांध 323 हेक्टेयर जमीन को डुबोएगा, जिसमें से 304 हेक्टेयर प्राकृतिक व वृक्षारोपित वन एवं 19 हेक्टेयर कृषि भूमि है। क्षतिपूरक वनीकरण के लिए आवश्यक प्रावधान किये जाने हैं। सूखे मौसम में 1500 लाख घनमीटर नियंत्रित पानी छोड़े जाने से नदी के प्रवाह में सुधार होगा एवं समुद्र के कारण होने वाला खारापन रुकेगा।

बेडती-वरदा नदी जोड़

इस नदी जोड़ प्रस्ताव के अन्तर्गत तुंगभद्र परियोजना के लाभ क्षेत्र में इस्तेमाल के लिए बेडती के 2420 लाख घनमीटर जलाधिक्य को जलाभाव वाले तुंगभद्र उप नदी घाटी में स्थानांतरित करने का प्रस्ताव है। इस सम्पर्क नहर के अन्तर्गत कर्नाटक के रायचूर ज़िले के सूखा प्रभावित क्षेत्र के 60200 हेक्टेयर ज़मीन को सिंचाई प्रदान करने का प्रस्ताव है। इसमें 1.8 मेगावाट की स्थापित क्षमता के दो बिजलीघर भी लगाने का प्रस्ताव है। पानी को 123.70 मीटर ऊपर उठाने के लिए तीन स्तरों में कुल 61.10 मेगावाट बिजली खर्च होने का अनुमान किया गया है।

इस परियोजना के हैडवर्क में मुख्यतः पट्टानडाहल्ला नदी पर पट्टानडाहल्ला बांध, सालमलाहल्ला नदी पर सालमलाहल्ला बांध एवं दोनों जलाशयों को





जोड़ना शामिल है। पट्टानडाहल्ला बांध का प्रस्तावित जलाशय स्तर 512.75 मीटर एवं सालमलाहल्ला बांध का जलाशय स्तर 480.4 मीटर है। इन दोनों बांधों की सजीव एवं स्थिर भंडारण क्षमता क्रमशः 130 लाख घनमीटर व 50 लाख घनमीटर एवं 725 लाख घनमीटर व 75 लाख घनमीटर निर्धारित है। सम्पर्क नहर की प्रवाह व्यवस्था मुख्यतः दो हिस्सों में बंटी हुई है, जिसमें पट्टानडाहल्ला व सालमलाहल्ला जलाशयों को आपस में जोड़ना एवं नहर/सुरंग को सालमलाहल्ला जलाशय से वरदा नदी की उपनदी से जोड़ना शामिल है। पहले हिस्से को जोड़ने वाले चैनल की लम्बाई 8.5 किलोमीटर होगी, जिसमें 2.2 किलोमीटर लम्बी सुरंग शामिल है। दूसरे हिस्से को जोड़ने वाले चैनल की लम्बाई 14.83 किलोमीटर होगी, जिसमें 6.8 किलोमीटर लम्बी सुरंग शामिल है। सम्पर्क नहर प्रारम्भ में 57.8 मीटर ऊपर उठाये जाने के बाद समुद्रतल से 520.3 मीटर की ऊंचाई से सालमलाहल्ला से निकलकर पुनः दो चरणों में 25.78 मीटर एवं 40.12 मीटर ऊपर उठकर समुद्रतल से 565.0 मीटर की ऊंचाई पर वरदा नदी की ओर जाने वाली धारा में मिलती है।

इस नदी जोड़ के अंतर्गत उत्तरी कन्नड़ ज़िले की 1005 हेक्टेयर ज़मीन डूब में आयेगी, जिसमें 787 हेक्टेयर वनभूमि, 130 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि एवं 88 हेक्टेयर गैर कृषि इस्तेमाल वाली भूमि शामिल है। डूब में आने वाले जंगलों के बदले क्षतिपूरक वनीकरण का प्रावधान है। कोई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारक व पुरातत्वीय ढांचा इससे नहीं डूबेगा। प्रस्तावित दो बांधों के कारण 967 लोगों की आबादी का एक गांव डूबेगा।

नेत्रवती-हेमवती नदी जोड़

इस नदी जोड़ प्रस्ताव में नेत्रवती नदी घाटी से 1880 लाख घनमीटर जलाधिक्य को जलाभाव वाली कावेरी नदी घाटी की हेमवती सिंचाई परियोजना के लाभ क्षेत्र के अंतर्गत कर्नाटक के सूखा प्रभावित तुमकुर, हसन एवं मंडया ज़िले में 33813 हेक्टेयर ज़मीन की सिंचाई हेतु स्थानांतरित करना प्रस्तावित है। इस परियोजना में दो चरणों में पानी को 81 मीटर ऊपर उठाने के लिए कुल 6 मेगावाट बिजली खपत होगी। सम्पर्क नहर की कुल लम्बाई 11 किलोमीटर होगी, जिसमें कुल 8.4 किलोमीटर लम्बाई की तीन सुरंग शामिल हैं।

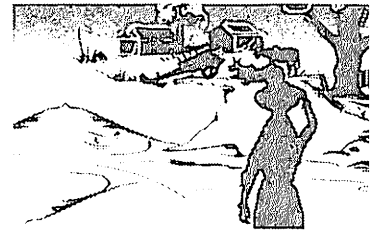
यह परियोजना दो चरणों में बंटी होगी। पहले चरण के अंतर्गत नेत्रवती नदी घाटी के यतिनहोल जलाशय के जलाधिक्य को हेमवती नदी में स्थानांतरित करने के लिए 19.50 मीटर ऊपर उठाया जाएगा। दूसरे चरण के अंतर्गत नेत्रवती नदी घाटी के केरीहोल एवं होंगधल्लाद होल जलाशय का संयुक्त पानी कावेरी नदी घाटी के हेमवती नदी में स्थानांतरित करने के लिए 61.31 मीटर ऊपर उठाया जाएगा। यतिनहोल से हेमवती नदी का प्रवाह चैनल 3.54 किलोमीटर लम्बा होगा, जिसमें 3.04 किलोमीटर लम्बी सुरंग शामिल है। केरीहोल से होंगधल्लाद होल जलाशय तक आपस में जोड़ने वाली सुरंग 3.98 किलोमीटर लम्बी होगी। होंगधल्लाद होल से हेमवती नदी तक प्रवाह चैनल 3.3 किलोमीटर लम्बा होगा, जिसमें 1.375 लम्बी सुरंग शामिल है।

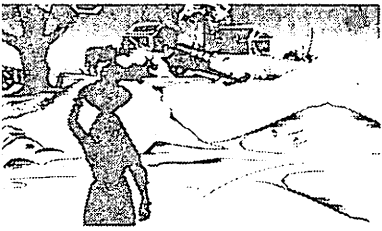
यतिनहोल जलाशय से 900 मीटर के जलाशय स्तर पर हसन ज़िले के सकलेसपुर तालुक की 295 हेक्टेयर ज़मीन डूब में आयेगी, जिसमें 78 हेक्टेयर वनभूमि, 173 हेक्टेयर कृषि भूमि एवं 44 हेक्टेयर गैर कृषि इस्तेमाल वाली ज़मीन शामिल है। केरीहोल जलाशय से 865.70 मीटर जलाशय स्तर पर 120 हेक्टेयर वनभूमि, 218 हेक्टेयर कृषि भूमि एवं 35 हेक्टेयर गैर कृषि इस्तेमाल वाली ज़मीन है। कोई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारक एवं पुरातत्वीय ढांचा डूब में नहीं आ रहा है। इस जलाशय से डूब में आने वाला क्षेत्र आबादी रहित है, इस डूब से कोई आबादी प्रवाहित नहीं होगी।

दमनगंगा-पिंजाल नदी जोड़

इस नदी जोड़ द्वारा दमनगंगा नदी घाटी में भुगड़ एवं खरगीहिल जलाशय में उपलब्ध जलाधिक्य का वैतरणा नदी घाटी में पिंजाल नदी पर पिंजाल बांध में स्थानांतरित करने का प्रस्ताव है। यह मुम्बई महानगर की घरेलू एवं औद्योगिक मांग को पूरा करने के लिए 9090 लाख घनमीटर पानी स्थानांतरित करेगी।

इस प्रस्ताव में तीन जलाशय भुगड़, खरगीहिल एवं पिंजाल बनाने का विचार है। सम्पर्क नहर की पूरी प्रवाह-व्यवस्था दो भागों में बंटी हुई है। पहले भाग में भुगड़ एवं खरगीहिल जलाशय को जोड़ने वाली 16.85 किलोमीटर लम्बी सुरंग होगी। दूसरे भाग में खरगीहिल जलाशय एवं पिंजाल जलाशय को जोड़ने वाली 25.70 किलोमीटर लम्बी सुरंग होगी। जबकि इस योजना का मुख्य उद्देश्य मुम्बई महानगरीय क्षेत्र में अतिरिक्त पानी आपूर्ति करना है,





इसके आगे पिंजाल जलाशय से मुम्बई महानगर में पानी स्थानांतरित करने की व्यवस्था मुम्बई नगर निगम एवं मुम्बई महानगरीय क्षेत्र विकास प्राधिकरण की योजना के अनुरूप तैयार होना है।

सम्पर्क नहर की प्रवाह-व्यवस्था में तीन जलाशयों को जोड़ने वाली सुरंगों भुगड़-खरगीहिल एवं खरगीहिल-पिंजाल को क्रमशः 16.85 किलोमीटर एवं 25.70 किलोमीटर की सुरंगों के माध्यम से स्थानांतरित करने का प्रस्ताव है। इस तरह प्रस्तावित सम्पर्क नहर के लिए कोई भूमि अधिग्रहण नहीं होगा। भुगड़ एवं खरगीहिल जलाशय से डूब में आने वाला क्षेत्र क्रमशः 1903 हेक्टेयर एवं 1558 हेक्टेयर होगा। पिंजाल जलाशय के मामले में डूब क्षेत्र 1900 हेक्टेयर होगा, जिसमें 1064 हेक्टेयर वनभूमि है।

पार्वती-कालीसिंध-चंबल नदी जोड़

इस नदी जोड़ के लिए दो विकल्पों का अध्ययन किया गया है। पहले विकल्प में 226 किलोमीटर लम्बी नहर (12.2 किलोमीटर लम्बी सुरंग सहित) द्वारा मार्ग में 218 हेक्टेयर (मध्य प्रदेश 1.93 लाख हेक्टेयर एवं राजस्थान 0.25 लाख हेक्टेयर) की सिंचाई के लिए 6040 लाख घनमीटर पानी स्थानांतरण का प्रस्ताव है, इसमें घरेलू एवं औद्योगिक उद्देश्य के लिए 130 लाख घनमीटर पानी शामिल है। दूसरे विकल्प में 243 किलोमीटर लम्बी नहर (21.8 किलोमीटर लम्बी सुरंग सहित) द्वारा मार्ग में मध्य प्रदेश (1.72 लाख हेक्टेयर) एवं राजस्थान (0.43 लाख हेक्टेयर) की 2.15 लाख हेक्टेयर ज़मीन की सिंचाई के लिए 5970 लाख घनमीटर पानी स्थानांतरण का प्रस्ताव है, इसमें घरेलू एवं औद्योगिक उद्देश्य के लिए 140 लाख घनमीटर पानी शामिल है। यह सम्पर्क नहर ऊपरी चम्बल नदी घाटी में इस्तेमाल के लिए भी 6760 लाख घनमीटर पानी प्रदान करेगी। पहले एवं दूसरे विकल्प से मार्ग में रिसाव से होने वाली क्षति क्रमशः 900 लाख घनमीटर एवं 970 लाख घनमीटर होगा। पहला विकल्प गांधीसागर में समाप्त होगा जबकि दूसरा राणाप्रतापसागर में समाप्त होगा। पहले विकल्प में पानी को 47.5 मीटर ऊपर उठाने के लिए 408 मेगावाट बिजली की आवश्यकता होगी, जबकि दूसरे में यह गुरुत्वीय भार से प्रवाहित होगा।

इस नदी जोड़ में पार्वती एवं कालीसिंध नदी के जलाधिक्य को चम्बल नदी पर बने गांधीसागर बांध/राणा प्रताप सागर में स्थानांतरित करने का विचार

है। इस परियोजना के अंतर्गत पार्वती नदी पर पाटनपुर बांध, नेवज नदी पर मोहनपुरा बांध एवं कालीसिंध नदी पर कुंडलिया बांध बनाकर तीन जलाशय बनाने का विचार है। इस नदी जोड़ प्रस्ताव में दो विकल्पों पर अध्ययन किया गया है, पहला गांधीसागर को जोड़ना एवं दूसरा राणाप्रताप सागर को जोड़ना। पाटनपुर बांध से गांधीसागर बांध तक सम्पर्क नहर की कुल लम्बाई 226.2 किलोमीटर होगी, जिसमें 12.2 किमी. लम्बी सुरंग एवं 20 किमी. तक ऊपर 47.5 मीटर पानी उठाना शामिल है। पाटनपुर बांध से राणाप्रताप सागर बांध तक सम्पर्क नहर कुल 242.8 किलोमीटर लम्बी होगी, जिसमें गुरुत्वीय भार से बहने वाली 21.8 किलोमीटर सुरंग शामिल है।

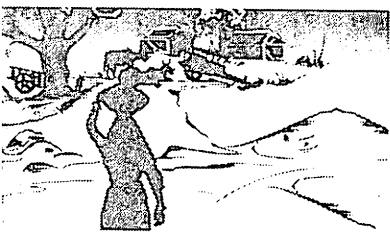
इस परियोजना में पार्वती नदी पर पाटनपुर बांध, नेवज नदी पर मोहनपुरा बांध एवं कालीसिंध नदी पर कुंडलिया बांध के निर्माण से कुल 17918 हेक्टेयर ज़मीन डूब से प्रभावित होगी, जिसमें 628 हेक्टेयर वनभूमि शामिल है। इससे 54 गांवों के 18310 लोग डूब से प्रभावित होंगे।

पार-तापी-नर्मदा नदी जोड़

एन डब्ल्यू डी ए ने इस नदी जोड़ परियोजना के लिए संभाव्यता अध्ययन पूरा कर लिया है। इस सम्पर्क नहर के माध्यम से पार एवं तापी नदियों के बीच उपलब्ध जलाधिक्य को उत्तरी गुजरात के जलाभाव वाले क्षेत्र में स्थानांतरित करने का प्रस्ताव है। यह योजना 401 किलोमीटर लम्बी सम्पर्क नहर द्वारा गुरुत्वीय भार से 13500 लाख घनमीटर पानी स्थानांतरित करेगी। सम्पर्क नहर 1900 लाख घनमीटर पानी रिसाव से क्षति के बाद मार्ग में 4600 लाख घनमीटर पानी से गुजरात की 1.63 लाख हेक्टेयर ज़मीन को सींचेगी। इसके अलावा यह गुजरात के सौराष्ट्र एवं कच्छ के इलाकों में 7000 लाख घनमीटर पानी आपूर्ति करेगी। इसके अलावा इसमें 32.5 मेगावाट बिजली उत्पादन का भी प्रावधान है।

परियोजना पश्चिमी तटीय मैदानी क्षेत्र के अंतर्गत आती है। परियोजना क्षेत्र के कुछ हिस्से प्रायद्वीपीय पठार एवं केन्द्रीय पहाड़ी के अंतर्गत आते हैं। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य पार, औरंगा, अंबिका, पूर्णा एवं तापी नदी घाटी के जलाधिक्य को मार्ग में सिंचाई प्रदान करते हुए नर्मदा नहर के लाभ क्षेत्र (मियागम एवं वदोदरा शाखाएं) में स्थानांतरण का प्रस्ताव है ताकि इस स्थानांतरण के कारण सरदार सरोवर परियोजना में बचे पानी को गुजरात के





कच्छ एवं सौराष्ट्र के जलाभाव वाले उत्तरी क्षेत्र के लाभ के लिए और आगे स्थानांतरित किया जा सके। इस सम्पर्क परियोजना में 7 जलाशय झेरी, मोहनकावचाली एवं पाइखेड पार नदी पर चशमांडवा औरंगा नदी पर चिक्कार एवं दाबदार अंबिका नदी पर एवं केलवान पूर्णा नदी पर प्रस्तावित है एवं इन सबको जोड़ने के लिए 401 किलोमीटर लम्बी नहर प्रस्तावित है। इस परियोजना में झेरी, पाइखेड, चशमांडवा एवं चिक्कार बांध के निचले हिस्से पर बिजलीघर प्रस्तावित है। सम्पर्क नहर की कुल लम्बाई दो भागों में बंटी हुई है, पहली पार-तापी (177 किलोमीटर लम्बी जिसमें 5.5 किलोमीटर सुरंग शामिल है) एवं दूसरी तापी-नर्मदा (224 किलोमीटर। पार से तापी को जोड़ने वाली सम्पर्क नहर मोहनकावचाली जलाशय को पाइखेड जलाशय से जोड़ने वाली सुरंग से प्रारम्भ होती है। खुली चैनल पाइखेड बराज से प्रारम्भ होकर उकाई जलाशय में गिरती है।

तापी-नर्मदा सम्पर्क उकाई जलाशय से प्रारम्भ होकर नर्मदा नदी को पार करते हुए मियागम शाखा नहर को जोड़ते हुए नर्मदा मुख्य नहर की बड़ौदा शाखा में गिरती है। इस सम्पर्क नहर के अंतर्गत कुल लाभ क्षेत्र 356843 हेक्टेयर सिंचाई का दावा किया गया है, जिसमें मार्ग में पार व तापी के बीच 17411 हेक्टेयर, तापी एवं नर्मदा के बीच 23940 हेक्टेयर एवं शेष 315492 हेक्टेयर निर्माणाधीन सरदार सरोवर परियोजना द्वारा नर्मदा के लाभ क्षेत्र में प्रस्तावित है। तापी के दक्षिणी एवं पार के उत्तरी क्षेत्र के बीच 6 नदी घाटियां पार, औरंगा, अंबिका, पूर्णा, मिंढोला एवं तापी हैं। वास्तव में मिंढोला नदी घाटी प्रस्तावित पार-तापी नदी जोड़ के बीच में पड़ती है। चार नदी घाटियां पार, औरंगा, अंबिका, पूर्णा, मिंढोला एवं तापी की सालाना सकल उत्पत्ति 52510 लाख घनमीटर है एवं विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद सतही जल उपलब्धता 30200 लाख घनमीटर है (75 प्रतिशत निर्भरता पर)।

इस सम्पर्क में सात प्रस्तावित जलाशयों (झेरी, मोहनकावचाली, पाइखेड, चशमांडवा, चिक्कार, दाबदार एवं केलवान) से 7559 हेक्टेयर ज़मीन डूब में आयेगी, जिसमें 3572 हेक्टेयर वनभूमि है। इन जलाशयों से 75 गांवों के 14832 लोग एवं 9029 पशु डूब से प्रभावित होंगे। डूब से प्रभावित होने वाले लोगों में 75% आबादी आदिवासियों की होगी। प्रभावित होने वाले लोगों के लिए आकर्षक पैकेज के माध्यम से पुनर्वास की व्यवस्था की जाएगी।

हिमालयी भाग

एन डब्ल्यू डी ए ने हिमालयी भाग के 14 नदी जोड़ों के लिए भी पूर्व संभाव्यता अध्ययन पूरा कर लिया है। चूंकि एन डब्ल्यू डी ए ने हिमालयी भाग के नदी जोड़ों के बारे में कोई विवरण उपलब्ध नहीं कराया है, इसलिए इस भाग के नदी जोड़ों में राज्य सभा एवं लोक सभा में पूछे गये प्रश्नों से उपलब्ध सामग्री को यहां उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है।

शारदा-यमुना राजस्थान जोड़

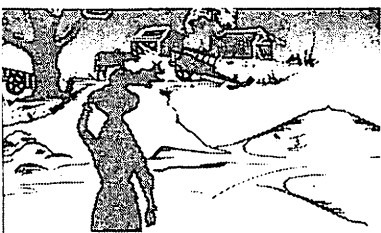
एन डब्ल्यू डी ए ने शारदा-यमुना राजस्थान जोड़ के लिए पूर्व संभाव्यता अध्ययन पूरा कर लिया है। एन डब्ल्यू डी ए की पूर्व संभाव्यता रिपोर्ट के अनुसार यमुना-राजस्थान जोड़ से राजस्थान को 2.4 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई का लाभ मिलने का अनुमान लगाया गया है। इस जोड़ की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट की तैयारी के लिए सर्वेक्षण एवं जांच कार्य एन डब्ल्यू डी ए द्वारा प्रारम्भ किया जा चुका है, जिसे 2007 तक पूरा करने का कार्यक्रम है।

राजस्थान सरकार ने मानसून में 100 दिन के लिए 1133 क्यूसेक गंगा जल हरिद्वार होते हुए एवं 566 क्यूसेक गंगा जल बिजनौर होते हुए राजस्थान में इस्तेमाल के लिए स्थानांतरित करने की संभावना के लिए किये गये अध्ययन में केन्द्रीय जल आयोग ने उजागर किया कि गंगा से राजस्थान स्थानांतरित करने के लिए इन दो स्थानों के समीप साल भर में 20-30 दिन से ज्यादा पर्याप्त पानी उपलब्ध नहीं होता।

ब्रह्मपुत्र-गंगा नदी जोड़

सूखे मौसम में ब्रह्मपुत्र के पानी को गंगा में स्थानांतरित करके गंगा के प्रवाह में वृद्धि की योजना के प्रथम चरण के अंतर्गत, केन्द्रीय जल आयोग ने 1982 में गुरुत्वीय प्रवाह से बांग्लादेश होते हुए जोगीघोपा बराज एवं ब्रह्मपुत्र-गंगा जोड़ नहर परियोजना पर एक संभाव्यता अध्ययन तैयार किया था। दूसरे चरण के प्रस्ताव में ब्रह्मपुत्र की प्रमुख उत्तरी सहायक नदियों दिहांग व सुबनसिरी पर जल संग्रहण के लिए दो बांध बनाने का अनुमान लगाया गया। यह प्रस्ताव भारत-बांग्लादेश संयुक्त नदी आयोग के समक्ष रखा गया, जबकि बांग्लादेश गणराज्य की सरकार द्वारा इस पर आशंका व्यक्त करने के बाद, प्रस्ताव को आगे नहीं बढ़ाया गया।





मानस-शंखोश-तीस्ता-गंगा नदी जोड़

ब्रह्मपुत्र की प्रमुख सहायक नदी शंखोश को भूटान में मोचू नाम से जाना जाता है, जो कि पोचू एवं मोचू के मिलने से बनी है। शंखोश नदी घाटी भूटान को पूर्वी एवं पश्चिमी क्षेत्रों में बांटती है। यह भूटान में 214 किलोमीटर एवं भारत में 107 किलोमीटर की दूरी तय करते हुए धूबरी के पास ब्रह्मपुत्र नदी से मिलती है। मानस-शंखोश-तीस्ता-गंगा नदी जोड़ परियोजना शंखोश बहुउद्देशीय परियोजना का ही नया स्वरूप है। इस परियोजना के लिए 265 मीटर ऊंचा कंक्रीट का मुख्य बांध, 62.5 मीटर ऊंचा लिफ्ट बांध एवं 141.70 किलोमीटर लम्बी नहर प्रस्तावित है, जो कि चार लाख हेक्टेयर ज़मीन को सींचेगी। मुख्य बांध भारत एवं भूटान की सीमा से 13 किलोमीटर की दूरी पर करबारी गांव के पास प्रस्तावित है। 390 मीटर जलाशय स्तर पर मुख्य बांध की सकल भंडारण क्षमता 63250 लाख घनमीटर एवं सजीव भंडारण क्षमता 44560 लाख घनमीटर प्रस्तावित है। जलाशय नदी के तट से 52 किलोमीटर के क्षेत्र में फैली होगी एवं अधिकतम जलाशय स्तर पर यह 6178 हेक्टेयर ज़मीन को डुबोएगी। परियोजना में प्रस्तावित लिफ्ट बांध से 821 हेक्टेयर एवं नहर के प्रवाह क्षेत्र में 2600 हेक्टेयर जमीन डूब में आएगी। परियोजना में 4000 मेगावाट की स्थापित क्षमता की पनबिजली परियोजना भी प्रस्तावित है।

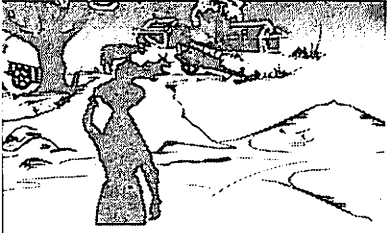
एन डब्ल्यू डी ए द्वारा किये गए पूर्व संभाव्यता अध्ययन में, राष्ट्रीय परिदृश्य योजना के अंतर्गत जोड़ योजना में मानस-शंखोश-तीस्ता-गंगा (एम एस टी जी), सुवर्ण रेखा-महानदी, गंगा-दामोदर-सुवर्ण रेखा एवं फरक्का-सुन्दरवन जोड़ से पश्चिम बंगाल में 11.1 लाख हेक्टेयर क्षेत्र सिंचित होने का अनुमान लगाया गया है। परियोजना की तकनीकी-आर्थिकी मूल्यांकन के लिए क्षेत्र सर्वेक्षण एवं परीक्षण का कार्य प्रगति पर है, जबकि मानस बाघ रिजर्व के अंतर्गत पड़ने वाले मानस से शंखोश जोड़ नहर के 114 किलोमीटर एवं रायदक रिजर्व वन, बक्सा बाघ रिजर्व एवं गोबुरबर्सा रिजर्व वन के अंतर्गत पड़ने वाले शंखोश से तीस्ता जोड़ के 24 किलोमीटर के हिस्से में पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा अनुमति न मिलने के कारण सर्वेक्षण एवं परीक्षण का कार्य प्रारम्भ नहीं हो सका है। पूर्व संभाव्यता रिपोर्ट के अनुसार, जोड़ नहर परियोजना के लिए 1994-95 की कीमत स्तर पर अनुमानित प्रारम्भिक लागत 116.70 अरब रुपये है, जिसमें मुख्य कार्य,

नहर व्यवस्था, नहर बिजलीघर एवं संचालन व्यय शामिल है। एन डब्ल्यू डी ए ने मानस व शंखोश नदियों, ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियों एवं तीस्ता के बीच पड़ने वाली नदियों के अतिरेक प्रवाह को फरक्का के अपस्ट्रीम में गंगा नदी में स्थानांतरित करने के लिए एम एस टी जी जोड़ की पूर्व संभाव्यता रिपोर्ट तैयार कर ली है। कोलकाता पोर्ट में पानी की कमी को सुधारने के लिए इस अतिरेक पानी के भाग को गंगा नदी में बढ़ाने के लिए प्रस्तावित किया गया है। वर्तमान में उपरोक्त जोड़ परियोजना संभाव्यता रिपोर्ट तैयार करने के लिए सर्वेक्षण एवं जांच के स्तर पर है, जिसके 2003 तक पूरा हो जाने का कार्यक्रम है। एम एस टी जी जोड़ के लिए पूर्व संभाव्यता रिपोर्ट रास्ते में 6.5 लाख हेक्टेयर सिंचाई क्षमता प्रदान करती है।

नहर का बहाव क्षेत्र ऊष्णकटिबंधी क्षेत्र में पड़ता है। सम्पर्क नहर के क्षेत्र में औसत सालाना वर्षा 4100 मिलीमीटर होती है। सम्पर्क नहर तिता एवं नीलपारा रिज़र्व वन से भी होकर गुज़रेगी, जिन्हें जलडापरा अभयारण्य के अंतर्गत शामिल कर लिया गया है। जलडापरा अभयारण्य गेंडे के निवास के तौर पर प्रसिद्ध है। तारसा एवं शंखोश नदियों के बीच के क्षेत्र को पूर्वी दोआर के नाम से जाना जाता है। अति उत्कृष्ट 886 वर्ग किलोमीटर का यह वन क्षेत्र वन्यजीवों के लिए एक अच्छा आश्रय है। नहर के मार्ग में आने वाले रिज़र्व वन में प्रमुख हैं – बक्सा बाघ रिज़र्व, जलडापरा अभयारण्य, धुमची, मोराघाट, डायना, अपर तांडु, अपलचन्द आदि। इसके अलावा नहर भूटान के 173.87 हेक्टेयर मिश्रित घने जंगलों से होकर गुज़रेगी। बक्सा बाघ रिज़र्व क्षेत्र में 290 हेक्टेयर ज़मीन अधिगृहीत की जानी है। बक्सा बाघ रिज़र्व क्षेत्र के अंतर्गत रायडेक एवं गाबुर बसरा रिज़र्व वन भी आते हैं। नहरों के लिए इस आरक्षित वनों से कुल 1245.16 हेक्टेयर ज़मीन अधिगृहीत की जानी है। नहर के मार्ग में 9 गांवों से 21503 लोगों की जनसंख्या प्रभावित होगी जिसमें से 8790 लोग अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति से संबंधित हैं। नहर के लिए अधिगृहीत की जाने वाली 2834 हेक्टेयर ज़मीन में 967.06 हेक्टेयर अति उत्कृष्ट चाय बागान हैं। इसके अलावा 1319.03 हेक्टेयर वनभूमि, 384.6 हेक्टेयर कृषि भूमि एवं 163.31 हेक्टेयर अन्य भूमि है।

‘साक्ष्य’ से साभार





दूरी छोटा सा शब्द है,
लेकिन जब राज व समाज
के बीच की दूरी बढ़ जाती
है तो समाज का कष्ट
कितना बढ़ जाता है इसका
अंदाज़ा लगाना मुश्किल हो
जाता है।

राजरोगियों की इवतरनाक रज़ामंदी

अनुपम मिश्र

अच्छे लोग भी जब राज के नज़दीक पहुंचते हैं तो उनको विकास का रोग लग जाता है, भूमण्डलीकरण का रोग लग जाता है। उनको लगता है सारी नदियां जोड़ दें, सारे पहाड़ों को समतल कर दें – बुलडोज़र चला कर, उनमें खेती कर लेंगे। मात्र यही ख्याल प्रकृति के विरुद्ध है। मैं बार-बार कह रहा हूं कि यह प्रभु का काम है, सुरेश प्रभु सहित देश के प्रभु बनने के चक्कर में इसे नेता लोग न करें तो अच्छा है। नदियां प्रकृति ही जोड़ती है। गंगा कहीं से निकली, यमुना कहीं से निकली। अगर ऊपर हैलिकॉप्टर से देखें तो एक ही पर्वत की चोटी से ठीक नीचे दो बिन्दु से दिखेंगे। वहां उनमें गंगोत्री और यमुनोत्री में बहुत दूरी नहीं है। प्रकृति उन्हें वहीं जोड़ देती। लेकिन सब जगह अलग-अलग सिंचाई करके दोनों कहां मिलें, यह प्रकृति ने तय किया था। तब वहां संगम बना। उसके बाद डेल्टा की भी सेवा करनी है नदी को।

‘जब दामोदर नदी पर बांध बन रहा था, तब कपिल भट्टाचार्य नाम के इंजीनियर थे। वे किसी वैचारिक संगठन से नहीं जुड़े थे। लेकिन वे नदी से जुड़े हुए आदमी थे। उन्होंने अपने विभाग से अनुरोध किया कि दामोदर नदी घाटी योजना को रोक लें। लोगों ने कहा कि तुम क्यों इसे रोकना चाहते हो। इतने करोड़ की योजना है। इससे यह लाभ, वह लाभ होगा। इससे औद्योगिक विकास होगा। भट्टाचार्य ने कहा था कि दामोदर का प्रवाह रोकोगे तो वहां से नीचे डेल्टा तक असर होगा। कोलकाता बंदरगाह नष्ट होगा। उसमें जहाज़ नहीं आ पाएंगे। उसकी गहराई कम हो जाएगी। जिस प्रवाह से सिल्ट बाहर आती है, उसे महंगे यंत्रों के ज़रिए बाहर निकालना पड़ेगा। करोड़ों रुपये खर्च होंगे, नदी की गहराई कृत्रिम तरीके से बढ़ाने के लिए। यह भी चार-पांच साल कर पाओगे। फिर तब तक इतनी मिट्टी आ चुकी होगी कि यह भी बंद करना पड़ेगा। तब आपके बंदरगाह बदलना पड़ेगा। तब तक बांग्लादेश नहीं बना था। भट्टाचार्य ने

यह भी कहा था कि इस बांध के कारण पड़ोसी देश के भी साथ आपके संबंध बिगड़ते जाएंगे।

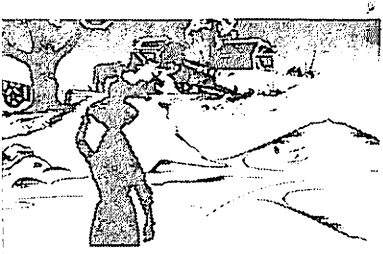
तट बंध और टेक्नोलॉजी से समुद्र का कोई संबंध नहीं होता, वह अपनी विशेष शक्ति रखता है उसमें मनुष्य हस्तक्षेप करे, विज्ञान के विकास के नाम पर तो सचमुच प्रकृति उसे तिनके की तरह उड़ा देती है। सुंदरवन ऐसे ही समुद्री तूफानों को रोकते हैं। पाराद्वीप का सुन्दरवन नष्ट हुआ इसलिए ओडीशा में चक्रवात आया। इसके आगे 'सुपर' विशेषण लगाना पड़ा था। अथाह जन-धन हानि हुई। अथाह बर्बादी। यह सब देखकर लगता है कि प्रकृति के खिलाफ़ अक्षम्य अपराध हो रहे हैं। इनको क्षमा नहीं किया जा सकता। इसकी कोई सज़ा भी नहीं दी जा सकती। नदी जोड़ना उस कड़ी में सबसे भयंकर दर्जे पर किया जाने वाला काम होगा। इसको बिना कटुता के जितने अच्छे ढंग से समझ सकते हैं, समझना चाहिए। नहीं तो कहना चाहिए कि भाई अपने पैर पर तुम कुल्हाड़ी मारना चाहते हो तो मारो लेकिन यह निश्चित पैर कुल्हाड़ी है। ऐसा कहने वालों के नाम एक शिलालेख में लिख कर दर्ज कर देने चाहिए और कुछ विरोध नहीं हो सके तो किसी बड़े पर्वत की चोटी पर यह शिलालेख लगा दें कि भैया आने वाले दो सौ सालों तक के लिए अमर रहेंगे ये नाम। इनका कुछ नहीं किया जा सका।

मैं सर विलियम वेलाँक नामक अंग्रेज़ अधिकारी को याद करना चाहूंगा। 1938 में बंगाल प्रेसीडेंसी के इंजीनियरों के सामने उन्होंने छः भाषण दिए। वेलाँक ने अपने सभी युवा अधिकारियों के सामने कहा था कि 70-80 साल में अंग्रेज़ों ने जो नहीं बनाई हैं, उनका आर्थिक लाभ एक पलड़े में रखो और नुकसान दूसरे पर, तो नुकसान का पलड़ा कहीं ज्यादा भारी है। हमने पूरे बंगाल की सोनार-संस्कृति को नष्ट किया है। वेलाँक ने कहा था कि उत्पादन घटा है नहरों के आने के बाद।

मध्य प्रदेश में तवा बांध को लेकर यही हुआ। 73-74 के समय विवाद के कारण नर्मदा पर बांध नहीं बन सकते थे तो तवा पर बांध बनाया गया। इस बांध के कारण खेतों में दलदल हो गया। खेती बरबाद हो गई। काली मिट्टी वाले इलाक़े में, जहां अनाज भारी मात्रा में होता था, तवाही मच गई। जर्मन विकास बैंक ने इस तवाही के कारण बदनामी को देखते हुए तवा बांध पर लगाए गए पैसे वसूलने की भी ज़रूरत नहीं समझी और चुपचाप खाता बंद

अकाल से भी ज्यादा भयंकर है अकेले पड़ जाना। संकट के समय समाज में एक-दूसरे का साथ देने और निभाने वाली जो परम्पराएं थीं, अब वे नष्ट हो चली हैं। संवेदना की जिस पूंजी के सहारे समाज बड़े-बड़े संकट पार कर लेता था, क्या हम उस पूंजी को बचा पायेंगे ?



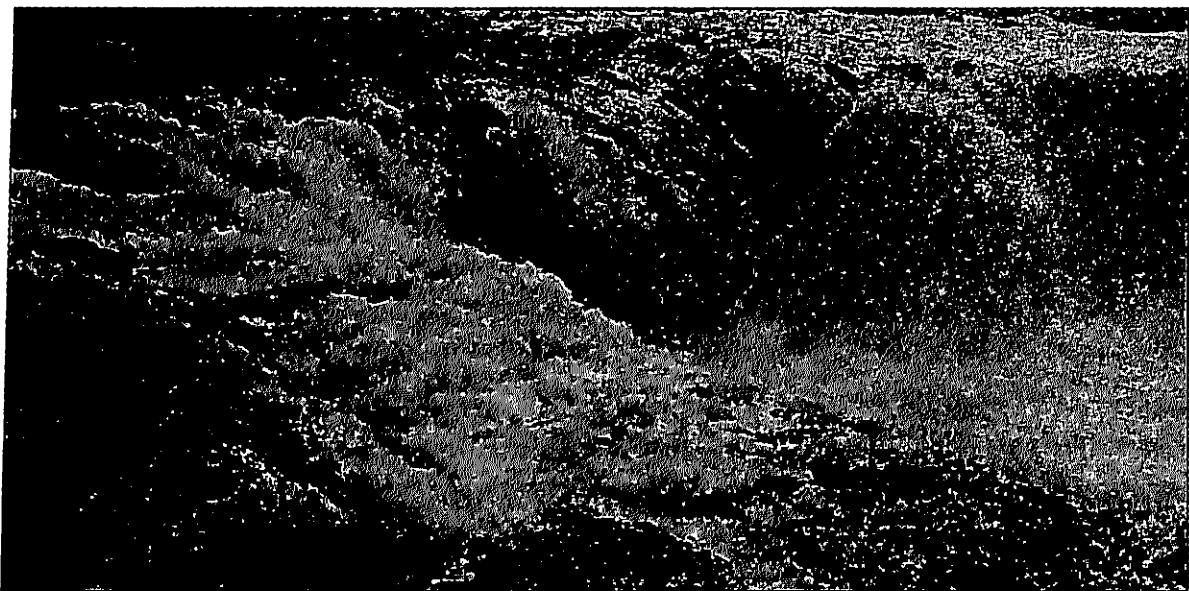


विकास ऐसा उत्पादन नहीं है जिसे आप आर्थिक उन्नति से हासिल कर लें। विकास वह प्रक्रिया है जो समाज के हर स्तर को - व्यक्ति, समाज और देश को पहले से अधिक स्वावलंबी बनाता है और उसे अपना भविष्य तय करने की और अधिक से अधिक आजादी देता है।

कर दिया और दृश्य से ही गायब हो गया। उस समय अकेले गांधीवादी बनवारी लाल चौधरी ने तवा बांध का विरोध किया। फिर बांध के कारण आई विपदा से मुक्ति के लिए मिट्टी बचाओ आंदोलन शुरू किया। ऐसा ही अभियान अब नदियों की रक्षा के लिए चलाना होगा।

‘वेलॉक ने अस्सी-नब्बे साल पहले कहा था कि नदियों के प्रवाह कम होने से उत्पादन घटा है। बाढ़ की सम्भावना बढ़ी है। खारापन, लवणीकरण इस इलाके में बढ़ा है। उन्होंने एक और आश्चर्यजनक तथ्य बताया था कि मलेरिया का प्रकोप इस इलाके में केवल नदियों को छोड़ने के बाद आया है। नदी जोड़ो योजना से पूरे डेल्टा के इलाके में यह सब कुछ और बढ़ेगा। आज्ञादी से थोड़ा पहले बंगाल के सिंचाई विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के सामने प्रो. मजूमदार का एक भाषण भी महत्वपूर्ण है। मजूमदार ने कहा था कि यह मानने की गलती या बेवकूफी न करो कि नदी का पानी समुद्र में ‘बरबाद’ जाता है। समुद्र में जाकर ये नदियां हम पर उपकार करती हैं, इसलिए इनको देवी माना गया है।

राज-रोग क्या होता है और इससे निपटने का एक ही तरीका होता है। जब राज हाथ से जाता है तो यह रोग भी चला जाता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण रामकृष्ण हेगड़े का है। कर्नाटक में पच्चीस साल पहले वेड़धी नदी

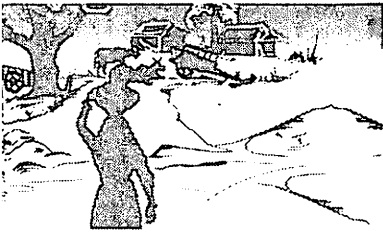


पर एक बांध बनाया जा रहा था। किसानों को इस बांध के बनने से उनकी खेती के चक्र के नष्ट होने की आशंका हुई। उन्होंने इसका विरोध किया। कर्नाटक के किसानों ने संगठन बना कर सरकार से कहा कि उन्हें इस बांध की ज़रूरत ही नहीं है। संपन्नतम खेती वे बिना बांध के ही कर रहे हैं और इस बांध के बनने से उनका सारा चक्र नष्ट हो जाएगा। हेगड़े उस आंदोलन के अगुवा बने। पांच साल तक वे इस आंदोलन के एकछत्र नेता रहे। बाद में राज्य के मुख्यमंत्री बने। मुख्यमंत्री बनने के बाद हेगड़े वेड़धी बांध बनाने के पक्ष में हो गए। लोगों ने कहा कि आप तो इस बांध के प्रमुख विरोधियों में से थे, उन्होंने कहा तब मैं सरकार में नहीं था। अभी मुझे पूरे कर्नाटक की ज़रूरत दिखाई देती है। क्षेत्र विशेष में अब मेरी दिलचस्पी नहीं है। उससे उनको नुकसान भी होगा तो भोगने दो। लेकिन कर्नाटक को इतनी बिजली मिलेगी जितनी ज़रूरत है। औद्योगीकरण होगा। हेगड़े के पाला बदलने के बावजूद किसानों का आंदोलन चलता रहा। हेगड़े का राज चला गया। उनका राज-रोग भी चला गया। लेकिन किसानों का आंदोलन चलता रहा। आंदोलन के कारण ही वह बांध आज भी नहीं बन सका। देश में इस तरह का यह पहला उदाहरण है।

जिनका दिल देश के लिए धड़कता है उन्हें नदी जोड़ो परियोजना पर प्रेमपूर्वक बात करनी चाहिए। ज़रूर कहीं कोई न कोई सुनेगा। यह दौर बहुत विचित्र है और इस दौर में सब विचारधाराएं और हर तरह का राजनीतिक नेतृत्व सर्वसम्मति रखता है सिर्फ़ विनाश के लिए, उन सब में रज़ामंदी है विनाश के लिए। और किसी चीज़ में एक दो वोट से सरकार गिर सकती है, पलट सकती है, बन सकती है, बिगड़ सकती है। लेकिन इस विकास और विनाश वाले मामले में सबकी गज़ब की सर्वसम्मति है। इस सर्वसम्मति के बीच में हमारी आवाज़ दृढ़ता और संयम से उठनी चाहिए। जो बात कहनी है, वह दृढ़ता से कहनी पड़ेगी। प्रेम से कहने के लिए हमें तरीका निकालना पड़ेगा। हमें अब सरकार के पक्ष को समझने की कोई ज़रूरत नहीं है। उसे समझने लगे तो ऐसी भूमिका हमें थका देगी। हम कोई पक्ष नहीं जानना चाहते। हम कहना चाहते हैं कि यह पक्षपात है देश के साथ, देश के भूगोल के साथ, इतिहास के साथ – इनको रोके।

जो देश कभी खुद सोन
चिरैया कहलाता था,
उसका सोना तो लुट ही
रहा है, चिरियों के उड़
जाने के दिन भी दिखाई
दे रहे हैं।





टूटेगा समाज

राजेन्द्र सिंह

जिस राज ने अपने कंधों पर देश के पर्यावरण की रक्षा का भार उठा लिया है, उसी के हाथों वह नष्ट भी हो रहा है।

राष्ट्रीय जल नीति की भूमिका में जल को व्यापार की वस्तु मान कर ही 'नदी जोड़ो' योजना 1 अप्रैल, 2002 को पारित हुई जलनीति का ही क्रियान्वयन है। इस नीति के पैरा 13 में पानी का मालिकाना, पट्टेदारी, परिवहन और निर्माण निजी कंपनियों को देने का निर्णय नदियों को जोड़ना ही तो है। नदियों को जोड़ने का मालिक बनने के लिए विश्व बैंक, आई.एम.एफ., बहुराष्ट्रीय कंपनियां एक हाथ से हमारे देश को देंगी, दूसरे हाथ में कंसल्टेंसी मशीनों के नाम पर वापस लेंगी। केवल इतना ही नहीं ब्रूट एग्रीमेंट डब्ल्यू.टी.ओ. के आदेशानुसार नदियों का मालिकाना और पट्टेदारी सब कुछ हासिल करेंगे। इसलिए नदियों को जोड़ने की वक्रालत करने से पहले हमें यह समझना होगा कि देश की नदियों को जोड़ने के लिए हमें कर्ज देने वाले न केवल हमारे परम्परागत जल प्रबंधन के ढांचे को तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं, बल्कि इस बहाने पूरी सामाजिक व्यवस्था को ही तोड़ने की साजिश रच रहे हैं।

'राष्ट्रीय जल नीति' की आड़ में गुलामी के नये रास्ते खोले जा रहे हैं। यह हमारे सांस्कृतिक, आध्यात्मिक जीवन के आधार पानी पर नियंत्रण की गुलामी है। जब पानी के लिए पैसा नहीं होगा, तब बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपनी मन मर्जी से एग्रीमेंट लिखवाएंगी। जबकि होना तो यह चाहिए कि नदियों को जोड़ने से पहले की बहस में राज्यों के मुख्यमंत्रियों को जोड़ने की बात चलायी जानी चाहिए। किस राज्य को कितना पानी देकर जोड़ा जायेगा, यह सब पहले तय हो जाये। तब हमें नदियों को जोड़ने का चरित्र समझ में आएगा।

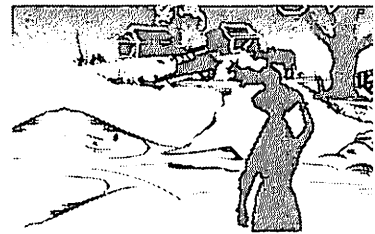
स्वतन्त्रता पूर्व देश भर में केवल 232 गांव ऐसे थे जहां पानी नहीं था, लेकिन 2003 तक के आंकड़ों के अनुसार यह संख्या बढ़कर 1,53,000 गांवों तक पहुंच गई है। क्या नदियों के जुड़ने से सबको पानी मिल पाएगा? सूखे और

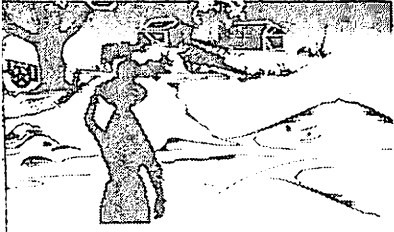
बाढ़ से हमें मुक्ति मिल पाएगी? क्या इन साधारण प्रश्नों का उत्तर हमारे नीतिकारों, योजनाकारों के पास है? मंडल-कमंडल, रोड शो, जैसे चुनाव के बाद नदियां जोड़ने से समाज तोड़ने का ही प्रपंच लगता है यह सब। क्या नदियां भी 'जम्मू-तवी' रेलगाड़ी की तरह चलेंगी? जिस नदी को जोड़ने से ज्यादा कर्ज मिलेगा, पहला दस्तखत उसी नदी को गिरवी रखने के लिए होगा। फिर वहां की नालियों में पैसा रूपी पानी कल-कल करता बहेगा। फिर हर-मुहल्ले, हर पड़ोस में लड़ाइयां शुरू होंगी। फिर जब लाखों लोग इस योजना के कारण लुट-पिट चुके होंगे तब संसद में बैठ कर देश सेवा में धुत नेतागणों में से उठ कोई गण इन झगड़ों को निपटाने के लिए न्यायपालिका की बात उठाएगा। फिर न्यायविद् कागज़ी सफ़र में नदियों के क्षेत्र का ऊपर से नीचे तक दौरा करेंगे, हो चुके झगड़े सुनेंगे, किसको, किसका, कितना पानी मिलेगा, इसके लिए जगह-जगह पानी के मीटर लगेंगे, पानी का बाज़ार उबलने लगेगा। फिर हमारी 'एक मात्र शाश्वत व्यवस्था' की नदियां जुड़कर दिल्ली स्थित 'लुटियन के टीले वाले बांध' में आन मिलेंगी। फिर नदी जोड़ो की आड़ में चलने वाला असली खेल शुरू होगा।

आज बेशक यह स्थिति काल्पनिक लगे, जैसे पांच वर्ष पूर्व बोलत बंद पानी की बिक्री पर लगती थी। लेकिन हमारे यहां आज पांच प्रतिशत लोग बोलतबंद पानी खरीद कर पी रहे हैं। यही हाल नदियों का होने वाला है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों यह पाप हमारी सरकारों के माध्यम से करवाने में जुटी हैं। इसलिए नदियों का जुड़ना, साधारण जन की जुड़ी अंजुलि से भी पानी छीनने की साज़िश है। हम सबके घरों का पानी छीनकर किसी एक विशेष की टंकी भरने का प्लान है। नदियों का जुड़ना ज्यादातर नेताओं को ही लालायित कर रहा है क्योंकि इसमें बहुत से लोगों की गरीबी दूर होने वाली है क्योंकि 30-40 वर्षों में होने वाले झगड़े में करोड़ों रुपयों की हरी-हरी नदियां इधर से उधर बहेंगी इसलिए हम सबको अपने देश का जल बचाने के लिए, इसका विरोध करना चाहिए। पंजाब के मुख्यमंत्री ऐसे मसलों से फूटने वाली आतिशबाज़ी का श्रीगणेश कर ही चुके हैं।

अगर सरकारों में गलती से भी कुछ समझदार लोग बैठे हैं तो उन्हें सामुदायिक जल, जंगल, ज़मीन के संरक्षण के प्रयासों को प्रोत्साहन देना चाहिए। जब समाज स्वयं मिलकर जल, जंगल, ज़मीन बचाने में जुटेगा तो ही नदियों में पानी सरस बह पायेगा। उसी से रोज़गार, पैदावार निकलने

पर्यावरण की रक्षा के लिए कानूनों की कोई कमी नहीं। लेकिन फिर भी जंगल कट रहे हैं, भूमि बंजर हो रही है, जल स्रोत और आकाश प्रदूषित हो रहे हैं।





पर्यावरण की क्रीमत पर होने वाला विकास जिस डाल पर बैठे हैं, उसी को काटने वाले कालिदास जैसी हालत में ले जाएगा।

लगेगी। दुःखी राष्ट्र में सुख की नदियां बहने लगेगी क्योंकि प्रकृति का सहज चलता खेल सरकारों के हाथों में नहीं दिया जा सकता। प्रकृति का खेल समाज के सद्चित्त किए प्रयासों के कारण ही टिकता है। पहले से टूटे-हारे समाज को नदियों का जोड़ना और अधिक तोड़ देगा लेकिन जब समाज ही जुड़ेगा तो नदियों की दयनीय हालत भी सुधरने लगेगी। हमारे देश की सारी नदियां बेहद चरित्रवान नदियां हैं। वे अपने से कट चुके समाज से नाराजगी भुला उन्हें पुनः धन-धान्य से मालामाल कर देंगी। नदियां कोई सड़कें, टेलीफोन की तारें नहीं कि उन्हें यहां-वहां जोड़ा जा सकता है यह सब तामझाम तो निर्जीव तामझाम है, नदियां तो सदैव सजीव होती हैं, माताएं कैसे निर्जीव हो सकती हैं नदियों का भी हमारी तरह जीवनकाल होता है, उनके जीवन की भी ज़रूरतें होती हैं। इसलिए इन्हें जोड़ना भारत के पर्यावरणीय वर्तमान और भविष्य के लिए गम्भीर खतरा उत्पन्न कर सकता है। नदियां जोड़ने से नदियों के जीन-बैंक का संतुलन भी बिगड़ जाएगा जिनसे असाध्य बीमारियां जन्म लेंगी। इसलिए सिर्फ बाढ़ से मुक्ति के कारण नदियों को जोड़ना समझ नहीं आता, जबकि नदियों के जुड़ने से बाढ़ का खतरा और अधिक बढ़ जाएगा।

देश का सबसे पहला हीराकुंड बांध कटक डेल्टा 5000 वर्ग मील के बाढ़ क्षेत्र से मुक्ति हेतु बनाया गया था। लेकिन आज तक यहां बाढ़ क्षेत्र एक इंच भी कम नहीं हुआ, वरन बढ़ता ही जा रहा है। इस बांध के बनने से 300 से अधिक गांव डूबकर लुप्त हो चुके हैं लेकिन बांध के निर्माण के 45 वर्ष



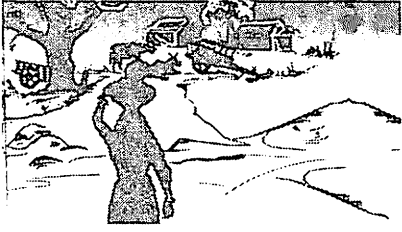
बाद भी बाढ़ क्षेत्र नहीं घटा। आज देश की नदियां प्रायः सूखी रहती हैं सिर्फ बरसात में ही यह सरक पाती हैं। इसीलिए नदियों को जोड़ने के लिए जो बांध बनेंगे वह भी हीराकुंड बांध की ही फोटोकॉपी होंगे। इसलिए देश को 'बस' समझकर चलाने वाले 'बे-बसों' को नदियां जोड़ कर पानी की समस्या हल करने का भ्रम नहीं पालना चाहिए।



आज़ादी के बाद से आज तक की सरकार बाढ़ और सुखाड़ का क्षेत्र घटा नहीं पायी जबकि देश के तमाम बांध बाढ़ और सुखाड़ से निजात दिलाने के लिए ही बने हैं। आज़ादी के बाद इन्हीं बांधों के कारण लगभग चार करोड़ लोग बे-घर हो चुके हैं इसलिए आज हमारे सभी बांध निर्दयी राक्षसों की तरह खड़े हैं जिन्हें कुछ वर्षों बाद हरसूदों की बली चाहिए। इसलिए हम सबको नदियों को जोड़ने के भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए। अच्छा यही होगा कि हम सब पानी बचाने के काम में जुटें, अपने पारम्परिक जल स्रोत बचाने में जुटें, तभी अच्छे परिणाम आने शुरू होंगे। राजस्थान की रूपारेल, अरवरी नदियां सिर्फ लोगों के पुनः जुड़ने के कारण जीवित हो उठी हैं। इनका बेसिन भी सुखाड़-बाढ़ मुक्त हो चुका है। यहां 1995-96 की अतिवृष्टि के बावजूद बाढ़ नहीं आयी। 1998 से लेकर 2003 तक यहां बहुत कम वर्षा हुई है फिर भी यहां सूखा नहीं पड़ा। आज यहां का समाज सुखी एवं समृद्ध है, सबको रोटी, सबके लिए पानी है। यह सब प्रकृति के सहज चक्र को यथावत् घूमते रहने में सहयोग के कारण हुआ है। यानी समाज के प्राकृतिक स्रोतों से सुमिलन के कारण सम्भव हुआ है। इसलिए सरकार की नदी जोड़ो के विरुद्ध एक 'सशक्त कूक' का बिगुल बजा, हम सबको अपनी नदियों से जुड़कर स्वयं उनका उद्धार करना होगा।

आधुनिक विद्या-केन्द्रों के पास कोई भी व्यवस्थित विचार तक नहीं है, जिसके अनुसार भारतीय शहरों में गंदगी के उत्पादन को घटाने और उत्पादित गंदगी के व्यवस्थित और बेहतर उपयोग का कोई राष्ट्रीय कार्यक्रम हो।





हर नदी में घाटों की सफ़ाई का स्वेच्छिक कार्य परम्परा से होता आया है। लोगों के अधिकार छिन जाने के बाद इन कामों में शिथिलता और बिखराव आया है। पर पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है।

सत्ता की धौंकनी से नहीं उठेगा भू-जल स्तर

राजेन्द्र सिंह

एक समय की बात है, जब अपने देश पर राज करने वालों ने वादा किया था कि वे 'राष्ट्रीय जल नीति' बनाएंगे लेकिन.. जल नीति के लिए भूमिगत जल का निरंतर गिरना एक मुख्य मुद्दा है। द्यूबवैल, सबमर्सिबलों के माध्यम से यानी अत्यधिक बोरिंग के कारण भू-जल का निरंतर और भयंकर दोहन हो रहा है। जितना जल पृथ्वी में समाता है उससे कई गुणा हम निकाल लेते हैं। देश के अधिकतर क्षेत्रों में भू-जल स्तर 2-3 मीटर तक गिर रहा है और यह अत्यन्त गम्भीर विषय है और इसे तुरन्त रोका जाना चाहिए।

देश का रूप बिगाड़ते हज़ारों प्रारूपों की तरह भूमिगत जल नियंत्रण के लिए क़ानून का ऐसा ही एक प्रारूप उस कैबिनेट के विचाराधीन रखा है जिस कैबिनेट ने कभी अपने देश को प्रेम से देखा तक नहीं। वैसे तो यह बिल राजस्थान के लिए बनाया गया है लेकिन जब पूरा देश ही रेगिस्तान बनने की ओर अग्रसर हो तो कई और मुद्दे भी सामने आए हैं जो पूरे देश के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं।

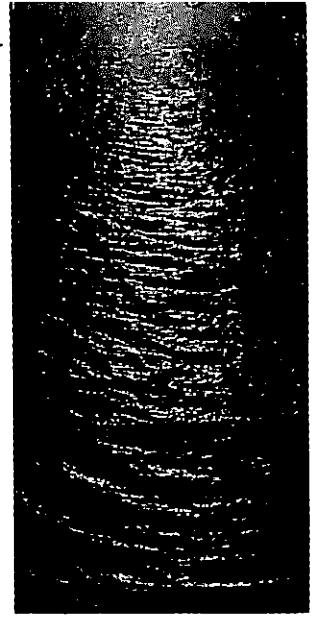
इस नए प्रारूप में नयी बोरिंग खोदने के लिए लाइसेन्स का प्रावधान है। यह लाइसेन्स किसान को ज़िला कलेक्टर से लेना होगा, साथ ही कलेक्टर को यह अधिकार भी रहेगा कि जहाँ पीने के पानी का अभाव हो वहाँ चालू बोरिंग बंद की जा सकती है। सरकार की नीयत बेशक़ अच्छी हो परन्तु नियन्त्रण का यह तरीक़ा ठीक नहीं क्योंकि इसमें कई ख़ामियाँ भी हैं। क्या ऐसा करने से भू-जल स्तर का गिरना रुक पाएगा? नयी बोरिंग के लाइसेन्स बेशक़ बंद कर दिए जाएँ लेकिन पुराने तो बे-रोक-टोक चलते ही रहेंगे। जो बोर आज 100 मीटर गहरा है उसे कल 150 मीटर गहरा बिना लाइसेन्स

के किया जा सकता है क्योंकि सरकार तो सिर्फ नए बोरिंग लगाना रोक सकती है। आखिर वर्तमान जल स्तर पुराने बोरिंगों के कारण ही तो गिर रहा है। जब तक वर्तमान बोरिंग द्वारा किए जाने वाले अतिदोहन को नहीं रोका जाएगा तब तक गिरते भू-जल-स्तर को कैसे रोका जा सकता है ?

इस प्रारूप के अनुसार पीने के पानी की कमी होने के कारण ही इन बोरिंगों को बंद किया जा सकता है जबकि पीने के पानी की सार्वजनिक बोरिंग खेती वाली बोरिंग से कहीं ज्यादा गहरे खोदे जा रहे हैं। इसलिए नए लाइसेंस जारी करने से वर्तमान दोहन पर नियन्त्रण नहीं लग पाएगा और जल-स्तर यूँ ही गिरता रहेगा।

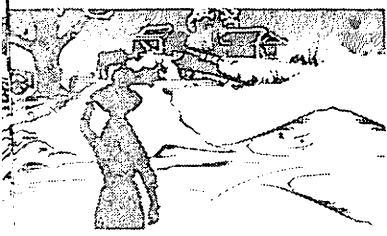
इस प्रारूप में लाइसेंस पद्धति की दूसरी खामी यह है कि इससे भ्रष्टाचार की बोरिंग और गहरी होगी क्योंकि कलेक्टर महाराज स्वयं कितने आवेदन देख सकते हैं? कलेक्टर से नीचे वाले एल-बो, ज्वाइंट यानी पटवारी वगैरह लाइसेंस दिलवाने के लिए अपने पंजे फैलाएंगे (जिन्हें पुराने शब्दकोषों में हाथ कहा जाता है) इसके साथ-साथ पुराने बोरिंग बंद करने की धमकी की आड़ में निरीह किसान से भी अच्छी खासी रकम वसूली जा सकेगी है जबकि देश का सीधा सादा किसान पहले ही आड़ी-तिरछी नीतियों से परेशान है, सरकारी तंत्र अलग से है। बिजली, ट्रेक्टर, लोन लाइसेंस के लिए पहले ही उसे घूस देनी पड़ती है और अब इसमें लाइसेंस बोरिंग पद्धति और जोड़ी जा रही है यानी किसान को अच्छी तस्वीर दिखाने के आड़ में भ्रष्टाचार की बोरिंग ही गहरी की जा रही है।

इस प्रारूप की तीसरी खामी यह है कि यह गरीब विरोधी है। गाँव के बड़े किसानों के पास पहले ही ज़मीन अधिक है, वे एक से अधिक बोरिंग पहले ही करवा चुके हैं। स्वतन्त्रता उपरान्त जैसे-जैसे छोटे किसान थोड़ा अपने पाँव पर खड़े होने की कोशिश कर रहे हैं, ऐसी अधकचरी नीतियाँ ही उनके पाँवों के नीचे से धरती खिसका रही हैं। बड़े किसानों के परिवारों में से अक्सर कई लोग विदेशों में हैं और वे अपने घरों में पैसा भी भेजते हैं लेकिन छोटे-किसानों की गर्दन कर्ज़ में निरन्तर कसती जा रही है और ये गर्दन आत्महत्याओं के बाद ही ढीली हो पाती है। आज भी अधिकतर बोरिंग बड़े किसानों के पास ही है, इस लाइसेंस पद्धति के बाद तो उनका एकाधिकार ही हो जाएगा। गर्दन फिर गरीब की ही जाएगी। जो किसान



नदियों और तीर्थों की
पवित्रता सामाजिक
पवित्रता का अंग है।
उसके पीछे कोई भौतिक
रहस्य नहीं है।





हमारी नदियों का प्रदूषण बेहद विकट हो चला है। प्रदूषित नदियों की एक लंबी सूची है, जिसे पढ़ते हुए लगता है कि हम मृतकों की कोई नामावली पढ़ रहे हैं।

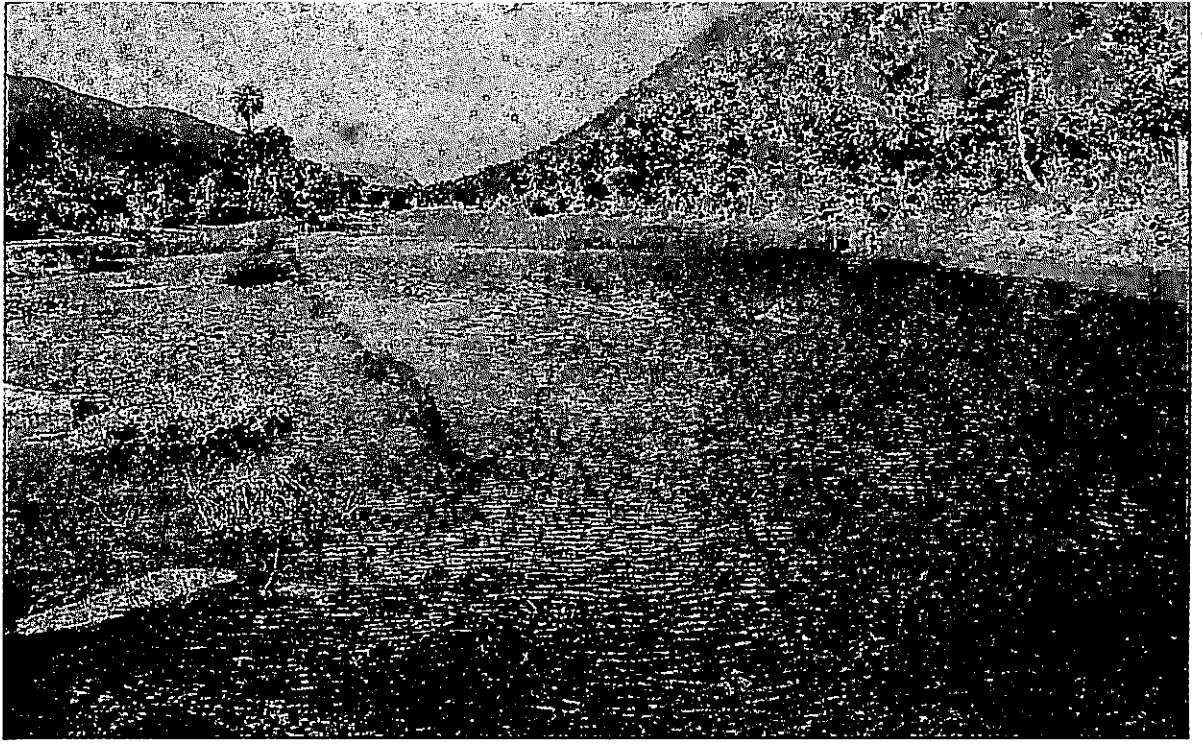
पहले से ही दो-तीन बोरिंग करवा चुका है, उसे लाइसेन्स की वैसे ही जरूरत नहीं रहेगी।

गरीब बोरिंग से पहले बिछने वाली भ्रष्ट पाइपलाइनों के लिए पैसा कहाँ से लाएगा? इसलिए इस प्रारूप से बड़े-छोटे की खाई पटने की बजाय और गहराती जाएगी। भू-जल संरक्षण के नाम पर छोटे किसान अपने सूखे खेत की सूखी मेढ़ों पर बैठ बादलों का इन्तज़ार करते रहेंगे लेकिन बड़ा किसान पूर्ववत् भू-जल का दोहन करता रहेगा। इसलिए यह प्रारूप स्वीकार्य नहीं हो सकता।

लेकिन फिर भी जल-स्तर की गिरावट तो रोकनी ही है। हमारा सुझाव यह है सरकार लाइसेन्स पद्धति लागू न करे। इसके स्थान पर देश भर में प्रत्येक ब्लॉक में बोरिंग की अधिकतम गहराई घोषित करे। जिन किसानों की बोरिंग घोषित गहराई से अधिक हो, उन्हें एक निश्चित सीमा के अन्दर उतनी ही गहराई को पाटना होगा, इससे उपरोक्त तीनों समस्याओं का समाधान हो जाएगा यानी जल-स्तर की गिरावट तत्काल रुक जाएगी। जब 100 मीटर से अधिक बोरिंग जाएगी ही नहीं तो जल स्तर 100 मीटर से नीचे कैसे जाएगा? इसमें प्रत्येक किसान को छूट भी होगी कि वह एक की बजाय चार बोरिंग भी करवा सकता है लेकिन गहराई वही 100 मीटर। इससे किसान को पानी तो मिलेगा साथ ही वह भ्रष्टाचार की बोरिंग से भी बच जाएगा।



इस नियन्त्रण प्रणाली का एक लाभ यह भी होगा कि पीने के पानी की बोरिंग ज्यादा गहराई तक जा पाएगी। यदि सिंचाई की बोरिंग 100 मीटर तक रहे तो पीने के पानी की बोरिंग 200 मीटर तक खोदी जा सकती है इससे पीने के पानी की कमी होने की सम्भावना कम होगी। सूखे में भी गहराई से सुरक्षित जल पीने के लिए उपलब्ध होगा। सरकार को ऐसे प्रारूप

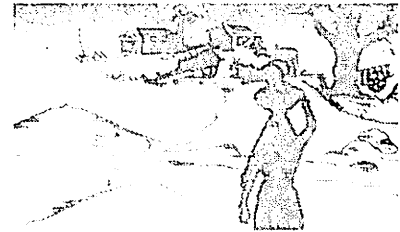


बनाते समय ऐसे पहलुओं पर गौर करना चाहिए।

राष्ट्रीय जल-नीति का दूसरा मुख्य मुद्दा जल भराव (रिचार्ज) का है। धरती परमात्मा द्वारा सृजित एक विशाल टंकी के समान है जिसमें वर्षा का जल भरता है जिसे हम बाद में अच्छी-बुरी तकनीकों से निकाल अपने उपयोग में लाते हैं। यह तो सर्वविदित है कि हम टंकी में जितना जल भरेंगे उतना ही निकाल पाएंगे। देश की समस्याएँ भयावह रूप से बढ़ती जा रही हैं, जनसंख्या कलस्टर बमों की तरह फटती जा रही है। आबादी के लिए खाद्यान्न भी चाहिए। खाद्यान्न उपजाने के लिए परमात्मा की इस टंकी से पानी भी अधिक निकालना होगा लेकिन यह तभी सम्भव है जब टंकी में निरन्तर पानी भरता भी जाए या भरा भी जाए।

वर्तमान में तो ऐसी कोई योजना दिखती नहीं, वर्षा का बहुत-सा जल बरसाती नदियों के रास्ते समुद्र में बह जाता है, निचले इलाकों में बाढ़ आ जाती है। यदि इसी व्यर्थ बहते पानी को धरती रूपी टंकी में डाल दिया जाए तो इसके अनेक लाभ होंगे। इससे बाढ़ का समाधान होगा, पानी की उपलब्धता बढ़ेगी। नदियों से भी छेड़छाड़ घटेगी।

नदियों और तीर्थों की पवित्रता सामाजिक पवित्रता का अंग है। उसके पीछे कोई भौतिक रहस्य नहीं है।



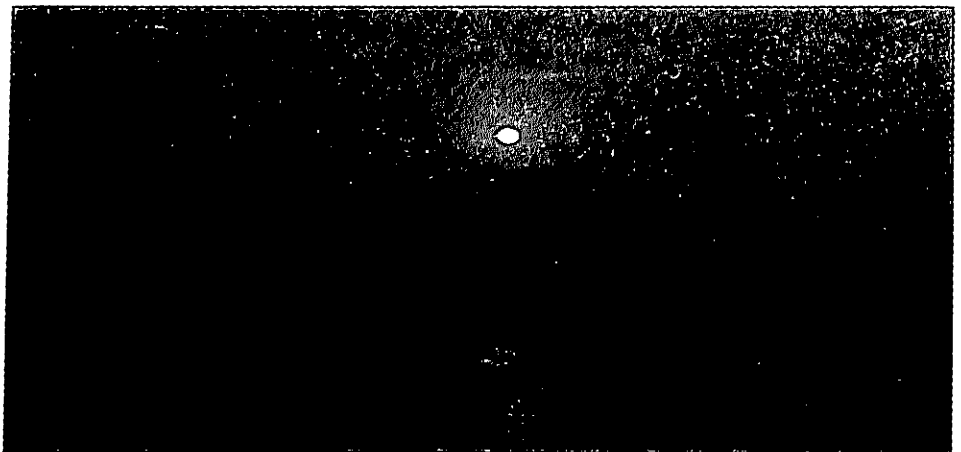


अभी कुछ ही पहले तक देश के शहर और गांव चरागाहें, खेत, जंगल, तालाब, कुओं और बावड़ियों से समृद्ध रहे हैं। पर सरकारी विकास कार्यक्रमों ने समाज के इस 'सामाजिक चरित्र' को छिन्न-भिन्न करके रख दिया है।

इसी प्रकार के कुछ अच्छे प्रयोग अमेरिका में टैनेसी वैली अथॉरिटी में किए गए हैं। वहां समस्या बाँध में मिट्टी के भराव की थी। मिट्टी ऊपर से कटकर आती थी और तालाबों-झीलों की क्षमता घट रही थी। इसे रोकने के लिए वहाँ की सरकार ने कानून बनाया कि प्रत्येक किसान अपने खेत पर अमुक ऊँचाई तक मेढ़बंदी करेगा। नतीजा यह हुआ कि वर्षा का जल हर खेत में ठहरने लगा। मिट्टी हर खेत में ही रुक गई और केवल साफ़ पानी ही बाँध में आया। हम भी ऐसा कुछ कर सकते हैं। हर किसान अमुक ऊँचाई तक मेढ़बन्दी करे ताकि फ़सल भी बचे और वर्षा का पानी भी बचे। इससे फ़सल भी अधिक होगी और भू-जल भी सुधरेगा।

ऐसा ही एक नियम यह भी बनाया जा सकता है कि प्रत्येक ट्यूबवैल के साथ जल भराव के उपाय किये जाएं। हमारी परम्पराओं में ऐसी अनेक तकनीकें उपलब्ध रही हैं जिनसे जल भराव अधिक होता है, इनमें छोटे चैक-डैम, एनिकेट, सब्सर्फेस स्ट्रक्चर, खडीन, जोहड़, पोखर और तालाब शामिल हैं। सरकार लाइसेन्स के लिए फोटो के साथ यह सब भी माँग सकती है इसका लाभ यह होगा कि जो लोग भूमिगत जल का अत्यधिक दोहन करते हैं उनके भराव का बोझ भी उन्हीं पर पड़ेगा।

भूमिगत जल आती-जाती सरकारों का मुद्दा नहीं, यह देश के खण्ड-खण्ड और अखण्ड देश का मुद्दा है यानी यह वैसा ही मुद्दा है जैसे सबको प्यास लगती है और पानी चाहिए, भूख लगने पर भोजन चाहिए। देश को अपने पैरों पर खड़े होने के लिए जितना अनाज चाहिए, उतना पानी भी चाहिए, लेकिन यह तभी सम्भव है जब हम प्रकृति से जितना लें उतना ही वापिस भी दें। इसलिए सरकारी अनीतियाँ बनाते समय अगर परम्पराओं में से भी कुछ समयसिद्ध और स्वयंसिद्ध नीतियाँ ढूँढ ली जाएँ तो धर्म और देश दोनों बच सकते हैं। उसे नीति भी तभी कहा जा सकता है।



सरकारी जल-नीति की हकीकत

राजेन्द्र सिंह

हमारे देश में जल भौतिक जीवन के लिए ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक विकास के लिए भी जरूरी माना गया है। ईश्वर द्वारा प्रदान इस अपार सम्पदा का सही उपयोग करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। हम भीतर बाहर से जल ही से जुड़े हैं। पीने के लिए, खाद्यान्न उत्पादन के लिए, उद्योग, बिजली उत्पादन इत्यादि के लिए भी जल ही चाहिए। जैसे जल के अनेक उपयोग हैं वैसे ही जल के स्रोत भी हैं। अनेक चिन्तनशीलों का मत है कि आने वाला समय जल-संकट का समय होगा और जल ही देशों में विवाद का कारण बनेगा।

इन्हीं सब विषयों पर समग्र दृष्टिकोण स्थापित करने के लिए सरकार ने 1987 में पहली जल-नीति की घोषणा की थी लेकिन इस जल-नीति के बनने के इतने वर्षों बाद भी जल प्रबन्धन सम्बन्धी अनेक समस्याएँ पूर्ववत् बनी हुई हैं। देश के कई हिस्सों में पिछले चार साल से सूखा पड़ा है, कई राज्यों में बाढ़ का प्रकोप निरन्तर और प्रतिवर्ष बढ़ता रहता है।

हमारी पवित्र नदियाँ दूषित हो चली हैं। प्राचीन कथा-कहानियों का गुणगान करने वाले संत भी नदियों की इस दयनीय हालत पर चुप्पी साधे हैं। भाखड़ा बाँध से लेकर अब तक बन रहे बड़े बाँधों के विस्थापितों को आज तक किसी प्रकार का उचित मुआवज़ा तक नहीं मिला। कुछ क्षेत्रों में जहाँ लोगों ने अपने प्रयासों से जल संसाधनों को सुधारने का प्रयास किया है, वहाँ एक मज़बूत अड़ों की तरह सरकारी टांग पहुँची है।

स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा ध्यानाकर्षण के बाद भारत सरकार ने भी महसूस किया था कि 1987 की राष्ट्रीय जल-नीति में कुछ कमियाँ रह गई हैं। इसी को आगे बढ़ाते हुए सरकार ने 'जल नीति प्रारूप 1998' बनाया। इस प्रारूप को 'राष्ट्रीय जल बोर्ड' ने भी स्वीकृति दे दी है। इस बोर्ड के अध्यक्ष

आज पानी के काम में विश्व बैंक तथा एशिया बैंक हमारी सरकारों को जो कर्ज़ दे रहे हैं, वे सब हमारे पानी पर अपने नियन्त्रण के पक्ष की नीति व कानून बनवाने में जुटे हैं।





कोई भी समाज शून्य में जीवित नहीं रह सकता। उसे अपने लोगों, अपने पशुओं, अपनी ज़मीन, अपने पेड़-पौधों, अपने कुएं, अपने तालाबों, अपने खेतों के लिए कोई न कोई व्यवस्था बनानी पड़ती है, जो समयसिद्ध और स्वयंसिद्ध हो।

केन्द्र सरकार के जल संसाधन मंत्रालय के सचिव ही होते हैं तथा सभी राज्यों के मुख्य सचिव इसके सदस्य होते हैं। केन्द्र सरकार द्वारा प्रस्तुत प्रारूप को अधिकारियों की स्वीकृति मिल चुकी है।

अगले तथा अंतिम चरण में इस प्रारूप पर राष्ट्रीय जल संसाधन समिति में विचार होता है। इस समिति के अध्यक्ष प्रधानमंत्री स्वयं तथा सदस्यों के रूप में मुख्यमंत्री स्वयं होते हैं। समिति द्वारा स्वीकार किए जाने पर इसे मान्यता मिल जाती है, लेकिन अफ़सोस जनहित से जुड़े इस विशाल मुद्दे पर यानी जल-नीति प्रारूप पर सार्वजनिक बहस नहीं हो सकी है न ही करवायी गई है। हकीकत यह है कि केन्द्र सरकार ने सवा अरब आबादी से जुड़े प्रारूप तक को भी गोपनीय रखा।

लेकिन जैसे ही जल-नीति का अध्ययन किया गया तो उसमें भी मोटे-मोटे सुराख निकले। यह नीति भी चंद उद्योगपतियों तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों की प्राथमिकता के आधार पर ही बनाई गई है। इसमें जन भागीदारी का प्रावधान कहीं नहीं है। जिन विसंगतियों के कारण 1987 की जल-नीति विफल रही थी, उनमें से ही अधिकतर विसंगतियां 1997 के प्रारूप में भी विद्यमान पाई गईं।

जल संसाधनों का प्रबन्धन देश के सम्पूर्ण राजनीतिक दर्शन से पृथक् नहीं होता, अर्थात् जब तक देश की मूल राजनीतिक दिशा जनता की स्वायत्तता की ओर नहीं मुड़ेगी, झुकेगी, तब तक जल-नीति में थोड़े बहुत प्रावधान किए जाने से कोई विशेष अंतर पड़ने की आशा नहीं दिखती।

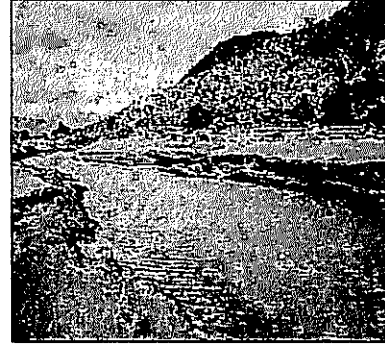
इसलिए सरकारी नीतियों में पड़ा थोड़ा अंतर हमारे लिए सार्थक सिद्ध हो सकता है। इसके अलावा देश की सोच भी इसी प्रकार की चर्चाओं से बदलती है। इसलिए यह आवश्यक है कि जनता तथा सरकार इस विषय पर खुली बहस करें।

जल-नीति का उद्देश्य

अन्य नीतियों की तरह जल-नीति के इस प्रारूप में उद्देश्य ही स्पष्ट नहीं। मूल भावना यह निकलती है कि मनुष्य अपने उपभोग के लिए पृथ्वी, जल तथा अन्य प्राकृतिक स्रोतों का उपयोग ठीक से करे। परमपिता ने सृष्टि के केन्द्र



में मनुष्य को रखा है लेकिन मनुष्य ने अपना परिचय सिर्फ एक भोगी के रूप में ही दिया है। इसलिए हमारा यह मानना है कि मनुष्य के समग्र विकास को केन्द्र में रखना चाहिए न कि निरन्तर बढ़ते भोग-विलास को। इसके साथ ही मनुष्य को ब्रह्माण्ड के एक अंग के रूप में ही देखा जाना चाहिए। अपने भोग के लिए प्राकृतिक संसाधनों का शोषण करने की बजाय मनुष्य को अपने जीवन को प्रकृति के सहज घूमते चक्र के अनुरूप ढालना चाहिए क्योंकि मनुष्य प्रकृति का ही एक अंग है, प्रकृति मनुष्य का अंग नहीं। जल-नीति का उद्देश्य होना चाहिए प्रकृति से तारतम्य बैठाते हुए मनुष्य के समग्र विकास में सहायक होना।

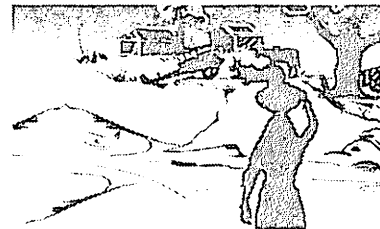


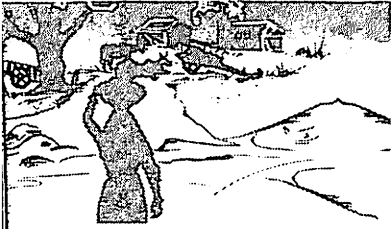
इस जल-नीति की सबसे गम्भीर कमी राज्यों के जल-अधिकारियों की चुप्पी है। प्रस्तावित प्रारूप केवल बड़े-बड़े निर्माण तथा केन्द्रीय तंत्र को ही अधिकारपूर्ण बनाने का प्रयास मात्र है। यह प्रारूप (बिल) पानी का निजीकरण करके कुछ विशेष लोगों को लाभ पहुँचाने और निर्धन को पीने के पानी से भी मोहताज करता दिखता है। पूरे दस्तावेज़ में साधारण जन के संरक्षण की झलक कहीं नहीं झलकती।

समाज के हितों की अनदेखी करके बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उद्योगों को बेरोक-टोक जल मिल सके, ऐसी व्यवस्था इस जल-नीति में की जा रही है। जल को जीवन के लिए प्रकृति-प्रदत्त नहीं मानकर मूल्यवान जल से चंद कंपनियां ही मूल्य कमा सकें, ऐसा करने हेतु यह प्रारूप बनाया जा रहा है। इस प्रारूप के पास होने के बाद जल-दर्शन, जल-संस्कृति, जल-तीर्थ सहेजने वाला समाज उन बहुराष्ट्रीय कंपनियों की ओर ताकता रहेगा जो देश का जल का हथिया कर पानी बाज़ार खड़ा करने की योजना बना रही हैं।

हमें सबके साथ होने वाले इस धोखे को रोकने हेतु जागृत होकर अपनी संस्थाओं, राज्य सरकारों के माध्यम से या व्यक्तिशः अपने-अपने सुझाव भारत सरकार को भेजने होंगे, जिससे हमारे पूर्ण मानव समाज तथा जीव जगत तक को सहज रूप से स्वच्छ व ताज़ा जल हमेशा उपलब्ध होता रहे। शामलाती पानी का शोषण व प्रदूषण तथा जल संरक्षण करने वालों को प्रोत्साहन देने वाली जल-नीति बनवाने के कार्य में हम सब मिलकर जुटें।

आज हमारी शिक्षा ने हमें पानी बचाने के मामले में इतना शिक्षित अवश्य कर दिया है कि आधी रात को दूल्हा पम्प द्वारा पड़ौसी का पानी खींच कर चुपचाप तसल्ली से सो जाओ।





चिन्ताशीलों को सुनने की आदत भी डालनी होगी

नोट- श्री कपिल भट्टाचार्य एक विलक्षण अभियंता थे। उन्होंने फरक्का बराज और दामोदर घाटी परियोजना का विरोध उस समय किया जब ज्यादातर वैज्ञानिक, इंजीनियर और बुद्धिजीवी इसके पक्ष में जुटे थे। इसी विरोध के कारण उन्हें अपनी नौकरी से हाथ भी धोना पड़ा था। नवम्बर 1989 में उपेक्षा एवं एकांत की पीड़ा झेलते हुए यह देशभक्त इंजीनियर इस दुनिया से उठ गया। यह लेख उन्होंने आज से लगभग 28 वर्ष पूर्व लिखा था।

दा दामोदर-घाटी परियोजना को बने हुए अनेक वर्ष बीत चुके हैं। जिस समय यह परियोजना बन रही थी, उसी समय मैंने इसके दोषों और इससे होने वाले भयंकर परिणामों के बारे में देशवासियों को सचेत किया था। मैंने कहा था कि इस परियोजना के कारण पश्चिम बंगाल के जल को निकालने वाली मुख्य नदी हुगली भी जाएगी और फिर देश में भयानक बाढ़ आएगी। हुगली नदी भरने से कलकत्ता बन्दरगाह में आने वाले बड़े समुद्री जहाजों का आना भी संभव नहीं हो सकेगा। मेरे दृढ़ प्रतिवाद और चेतावनी के बावजूद तत्कालीन कांग्रेसी केंद्र एवं राज्य सरकारों ने मिलजुल कर दामोदर घाटी परियोजना को लागू किया।

दामोदर नदी में साल भर छोटी-छोटी बाढ़ों के कारण जो उपजाऊ मिट्टी जमा होती है, उसे आषाढ़ में आने वाली बड़ी बाढ़ बहाकर समुद्र में पहुंचा देती है। सावन-भादों और आश्विन महीने में हुगली के निचले हिस्से में भाटा की गति जितनी तेज होती है, उतनी तेज ज्वार की गति नहीं होती। फलतः समुद्र से आने वाली रेत नदी के मुहाने पर जमा होती है और इस रेत को भी दामोदर और रूपनारायण नदी में आने वाली बाढ़ बहा देती है। मैंने उस समय चेतावनी दी थी कि अगर इस स्वाभाविक प्रक्रिया को बाधा पहुंचाने की चेष्टा की गई तो दामोदर और रूपनारायण नदी की बाढ़ की गति धीमी पड़ जाएगी जिससे नदी के मुहाने पर जमने वाली मिट्टी साफ़ नहीं हो पाएगी और जगह-जगह नदी में टापू निकल आएगा। 1948 से 1952 तक लगातार मैं इस सच्चाई से सरकार एवं देशवासियों को अवगत कराता रहा लेकिन न सरकार और न ही परियोजना के प्रबन्धकों ने कोई समर्थन किया और न ही मेरे तर्कों को उन्होंने काटा। अपनी झूठी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए उन लोगों ने इस परियोजना को लागू किया।



पंचैत और मैथन के बांध बनने के तुरत बाद ही मेरी भविष्यवाणी सच निकली और 1956 में ही कलकत्ता बंदरगाह की गहराई भयंकर रूप से घट गई। पश्चिम बंगाल के भागीरथी एवं हुगली के मैदान और दामोदर नदी के निचले हिस्सों में भयानक बाढ़ आई। दामोदर घाटी परियोजना बनने से पूर्व द्वितीय महायुद्ध के समय दामोदर की बाढ़ से मात्र 50 वर्ग मील जल प्लावित हुआ था। 1956 के इस जल प्रलय में पश्चिम बंगाल का एक-तिहाई हिस्सा यानी 10930 वर्गमील क्षेत्र बाढ़ के विनाश से प्रभावित हुआ। 1959 की बाढ़ के समय यह देखा गया था कि भागीरथी और हुगली नदी की सर्वोच्च जल-निकासी क्षमता काफ़ी घट चुकी थी। ऐसा दामोदर घाटी परियोजना की वजह से हुआ। इसके अलावा जलोशी, चुरनी, मयूराक्षी, अजय, दामोदर नदी की जल निकासी क्षमता 50 हजार क्यूसेक थी। 1959 में देखा गया कि यह क्षमता घटकर 20 हजार क्यूसेक रह गई है। फलतः पहले जो बाढ़ दो-तीन दिन से लेकर सप्ताह भर तक रुकती थी वह अब महीने से भी अधिक समय तक रुक सकती है। 1970-71 में देखा गया कि बाढ़ और अधिक दिनों तक रुकी रही, इस कारण बहुत बड़ा क्षेत्र जल अभाव का शिकार बना रहा।



वैज्ञानिकों और इंजीनियरों ने दामोदर घाटी परियोजना के खिलाफ़ जो प्रतिवाद किया था, बाद के दिनों में इसे नकारा नहीं जा सका। 1960-61 में बड़े-बड़े समुद्री जहाज़ों के यातायात के लिए कलकत्ता से 60 मील दक्षिण हल्दिया में एक नये बंदरगाह की नींव रखी गई और यह तय किया गया कि फरक्का के निकट गंगा में डैम बनाकर नहर की सहायता से भागीरथी में कुछ जल प्रवेश कराया जाएगा, जबकि मैंने सुझाया था कि दामोदर घाटी परियोजना को सुधार कर उसकी सिंचाई परियोजना को छोड़कर उसी पानी को नियमित रूप से रूपनारायण नदी की मार्फ़त निम्न हुगली में प्रवेश कराया जाए। मगर फिर झूठी मर्यादा की रक्षा के लिए मेरे इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया गया। परिणामस्वरूप दामोदर घाटी परियोजना एक धोखा साबित हुई। अंततः मेरे द्वारा सुझाई गई वैकल्पिक सिंचाई पद्धति लिफ्ट इरीगेशन को ही अपना पड़ा।

नदियों तथा अन्य जल स्रोतों से सिंचाई का काम भारत में हजारों वर्षों से होता आया है। पर यह सिंचाई व्यवस्था समाज नियंत्रित थी। नदियों-तालाबों के रख-रखाव की भी ज़िम्मेदारी इसलिए समाज की थी, क्योंकि इन साधन स्रोतों पर अधिकार उसी का था।

हम लोग यानी वैज्ञानिक-इंजीनियरों ने यह भी कहा था कि फरक्का में बांध बनने के बाद परिस्थिति और भी जटिल होगी। पहली बात तो यह है कि सूखे महीनों में फरक्का से भागीरथी को 40 हजार क्यूसेक पानी की जो





परम्परा से जल-क्षेत्रों का स्वामित्व क्षेत्रीयजनों को प्राप्त था। केवटों-मल्लाहों को जल-क्षेत्रों पर विशिष्ट अधिकार प्राप्त थे। गांवों को अपने-अपने क्षेत्र के जल स्रोतों, सरित-सरोवरों पर सामान्य अधिकार थे ही।

आवश्यकता है, वह कभी पूरी नहीं हो पाएगी। 40 के दशक में मैं हावड़ा में पीपुल्स इंजीनियरिंग नामक एक कारखाने का इंजीनियर था जिसमें जहाजों का निर्माण और मरम्मत का काम होता था। रेलवे के फेरी जहाजों की मरम्मत का काम मेरे जिम्मे था। इन जहाजों के नाविकों की सहायता से ही गंगा के जल प्रवाह को गरमी के दिन में साहेबगंज और मनिहारी के पास नापा गया था। यहां की गंगा के जल प्रवाह की जानकारी अधिकारियों को थी। बावजूद इसके वे लोग फरक्का बराज परियोजना के माध्यम से भागीरथी में 60 हजार क्यूसेक जल प्रवेश कराने की बात प्रचारित करने लगे। ये अधिकारीगण बड़ी चतुराई से बाद में यह कहने लगे कि चूंकि गंगा की उपनदियों का पानी उत्तरप्रदेश और बिहार की सिंचाई में खर्च किया जा रहा है। इस कारण भागीरथी को 40 हजार क्यूसेक का जल प्रवाह मिलना संभव नहीं होगा। फरक्का बराज परियोजना में सौ करोड़ से अधिक रुपए अपव्यय करने के बाद इसके अवकाश प्राप्त अभियंता कहने लगे हैं कि फरक्का परियोजना असफल होगी जबकि मैंने फरक्का परियोजना के प्रस्ताव के समय ही इसकी असफलता की घोषणा की थी। उस समय पश्चिम बंगाल के कांग्रेसी नेताओं ने जनमत को भ्रमित कर फरक्का परियोजना के लिए केंद्र सरकार पर दबाव डाला था। विरोधियों ने भी मेरे तर्क को मान लिया था। लेकिन जनमत के डर से वे भी परियोजना के समर्थन में सरकार पर दबाव डालने लगे। उस समय के एक समाचारपत्र के संपादकीय ने मुझे पाकिस्तानी गुप्तचर तक घोषित किया था जिसके लिए निम्नलिखित कारण गिनाए गए :

1. फील्ड मार्शल अयूब खान ने मेरी किताब खरीदकर तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के पास भेजी थी। पश्चिम बंगाल सरकार ने मेरे पीछे सी.आई.डी. को लगा दिया और अंततः 1962 में मुझे पीपुल्स इंजीनियरिंग की नौकरी तक छोड़ देनी पड़ी।
2. मेरा तर्क था कि पद्मा नदी में ज्वार-भाटा होता है। अतः फरक्का बराज द्वारा सूखे के दिनों में गंगा का जल प्रवाह अवरुद्ध होने पर ज्वार द्वारा लाई गई मिट्टी से पद्मा नदी का प्रवाह इसलिए बदल जाएगा क्योंकि ज्वार की मिट्टी उस नदी को भर देगी। बाद में ब्रह्मपुत्र नदी की बाढ़ भी पद्मा की धारा में बहकर भैरवमाथा, भंगा, जलंगी, चुरनी, इच्छामति आदि नदियों के मार्फत पश्चिम बंगाल में बाढ़ लाएगी और 1971-72 में सचमुच में फरक्का बांध का निर्माण होते ही पूर्व शंका

के अनुसार बाढ़ आई। फरक्का बांध के कारण राजशाही और हार्डिज पुल के मध्यवर्ती इलाक़े में आने वाले 4-7 वर्षों में भयानक स्थिति होगी तथा भविष्य में कलकत्ता जलमग्न हो सकता है। मेरी यह शंका तर्कसंगत है और इस शंका की ओर जनमत का ध्यान आकृष्ट किया गया, लेकिन सरकारी अधिकारियों के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी।

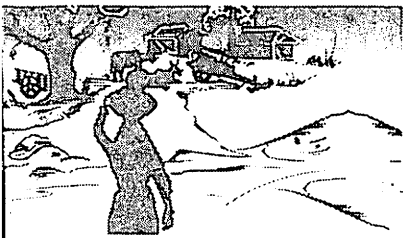
- मेरी सबसे बड़ी आप बीती यह थी कि बराज का तलहट कंकरीट का होगा। सूखे दिनों में गंगा की धारा तलहट से नीचे बहेगी। इस कारण बाढ़ के समय गंगा का जल प्रवाह जो गंगा के तल को 50 फीट से 150 फीट तक गहरा कर देता था, अब संभव नहीं होगा। ज़ाहिर है कि गंगा के जल प्रवाह की क्षमता में अत्यधिक कमी आएगी। मोकामा के राजेन्द्र पुल के पास गंगा का सर्वोच्च जलप्रवाह तीस लाख क्यूसेक मापा गया था किंतु फरक्का परियोजना में उसे घटाकर सत्ताइस लाख क्यूसेक किया गया। मेरे साधारण हिसाब के मुताबिक जब कोशी जैसी बृहद उपनदी फरक्का में समाहित होती है तब इसमें कम से कम 40 लाख क्यूसेक जल प्रवाह की व्यवस्था होनी चाहिए थी। मगर वास्तविकता तो यह है कि अब इसके अनुरूप व्यवस्था संभव नहीं है।

गंगा का यह अतिरिक्त जल कहां जाएगा? मुझे यह समझने में देर नहीं लगी। इस पानी से मालदह और मुर्शिदाबाद ज़िले में हर साल बाढ़ की तबाही होगी। पटना, बरौनी, उत्तर मुंगेर, भागलपुर और पूर्णिया ज़िले भी हर साल डूबेंगे। गंगा की खाई क्रमशः भरती जाएगी, बराज के पानी के प्रवाह की गति धीमी होगी और साद बराज के गर्भ में जमा होती जाएगी। मैंने 40 के दशक में ही दृढ़तापूर्वक इस भयावह परिणाम की ओर इंगित किया था।

1971 में जब बाढ़ आई तो देखा गया कि फरक्का बराज अपनी घोषित क्षमता 26 लाख क्यूसेक जल प्रवाह का निकास भी नहीं कर रहा है। उस वर्ष उसकी निकासी क्षमता मात्र 23 लाख क्यूसेक थी। इसे सौभाग्य ही कहा जाए कि 1971 के वर्षाकाल में उत्तरी बंगाल के क्षेत्र में औसत से 5 प्रतिशत कम वर्षा हुई, नहीं तो बाढ़ से और भी भयानक तबाही मचती। पद्मा नदी की बाढ़ महानंदा से प्रवाहित होकर मालदाह शहर डुबा देती है।

नदियों-वनों आदि को पवित्र मानने वाली भारतीय दृष्टि की अंतर्निहित राजनीतिक दृष्टि है हर नदी को गंगा मानना, मन चंगा तो कठौती में गंगा मानना, नदियों-वनों को सम्पूर्ण राष्ट्र यानी समाज की सम्पत्ति मानना। उन्हें राज्य के नाम पर राज्यकर्ताओं के स्वेच्छाचारी प्रबन्ध के अधीन वस्तु नहीं मानना।





राष्ट्रीय विकास यदि सचमुच राष्ट्रीय दृष्टि से हो, तो वह विवेकपूर्ण होगा। अभी विकास के नाम पर जो हो रहा है, वह तो बदहवास लूट है। कुछ लोग जाने किस हड़बड़ी में राष्ट्र को लूटना, बरबाद करना, बिगाड़ना, क्षत-विक्षत कर देना चाहते हैं।

महानंदा के किनारे बांध देने से उसकी जल निकास की क्षमता घट जाएगी। पश्चिम बंगाल में बाढ़ नियंत्रण के लिए जो नीम-हकीम सुझाव दिए जा रहे हैं, उनसे समस्याओं का समाधान न होकर वह और भी जटिल हो जाएगी। मालदाह ज़िले को बचाने के लिए फरक्का के पास गंगा के किनारे बांध की लम्बाई बढ़ाई गई, इससे पूर्णिया ज़िले में कोशी नदी के मुहाने से गंगा की बाढ़ प्रवेश करेगी और पूर्णिया और मालदाह ज़िले पर बाढ़ का क्रहर बरपेगा। भविष्य में धीरे-धीरे इसी रास्ते में गंगा की नई जल धारा तैयार होगी जो फरक्का बराज को पार कर बांग्लादेश में प्रवेश करेगी। बरसात में दामोदर घाटी परियोजना से पानी छोड़ने के बाद दामोदर के निचले हिस्से में जो बाढ़ आएगी, उस बांध को ऊंचा उठा नहीं रोका जा सकेगा। क्योंकि बांध की ऊंचाइयों की भी एक निश्चित सीमा होती है और यह पूरी तरह भौगोलिक, आर्थिक और राजनैतिक परिस्थिति पर निर्भर है। लोगों को विस्थापित कर जो बांध बनाए जा रहे हैं, उससे पुनर्वास की समस्याएं जटिल होती जाएंगी। निश्चित सीमा रेखा तक बांध को ऊंचा करने पर भी अतिरिक्त जल अतिवृष्टि के समय ही छोड़ा जाएगा जिसके भयंकर परिणाम होंगे और फिर उसकी जलधारा भी मिट्टी से जल्दी भर जाएगी।

प्रस्ताव उठा कि मुन्डेश्वरी नदी के किनारे तटबंध बनेंगे। मगर ऐसे बांध के निर्माण में यहां की नदी की तलछट भर जाएगी जैसा कि दामोदर में हुआ फिर अतिवृष्टि के समय बांध के टूटने से प्रबल बाढ़ आने की संभावना बनी रहेगी। ये सब तथ्य जानते हुए भी अधिकारी वर्ग वही करेंगे जो प्रस्ताव में आया है। वजह यह कि नेता लोग अपने धन की ताकत बढ़ाने के लिए जल्दी-जल्दी कुछ कर देना चाहते हैं। जनता की अनभिज्ञता इसमें मददगार साबित होती है। भविष्य में जो नुकसान होगा उस पर कोई ध्यान नहीं देना चाहता। इसके अलावा ठेकेदार एवं इंजीनियरों को बेहिसाब पैसा कमाने का भी रास्ता खुल जाता है।



‘नमक सत्याग्रह’ के बाद अब ‘जल सत्याग्रह’ की ज़रूरत

ध्रुव शुक्ल

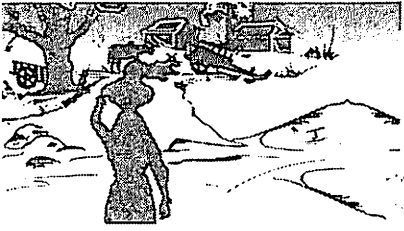
सबकी ज़रूरत की चीज़ नमक पर जब फिरंगियों ने कर लगाया तो महात्मा गांधी नमक क़ानून तोड़ने दांडी कूच पर निकल पड़े थे। वे गुलामी के दिन थे जब बापू के नेतृत्व में हमारे पूर्वज सेनानियों को सागर किनारे तक जाने के लिए लंबी यात्रा करनी पड़ी थी। आज़ाद भारत में अब एक अनिवार्य ‘जल सत्याग्रह’ की ज़रूरत आन पड़ी है, जिसके लिए अपने घर से कहीं दूर नहीं जाना है बल्कि अपने ही पड़ोस, गांव और शहर में पानी के पक्ष में खड़े होकर सत्याग्रही हुआ जा सकता है।

जो जहां रहता है वह इस बात का पता लगा सकता है कि हमारे पुरखों ने जो कुएं खोदे थे, वे आज किस हाल में हैं। हो सकता है वे घसक गए हों, उनकी जगत टूट रही हो या मलबे और कचरे से पुरकर उनकी झिरें ओझल होती जा रही हों। जो तालाब हमारे पूर्वजों ने वर्षों मेहनत करके बनाए होंगे, कहीं वे उथले तो नहीं हो गए हैं। कहीं हमारी ही बहाई गंदगी उन्हें बदबूदार तो नहीं बना रही है। अनेक गांवों में कुछ प्राकृतिक झिरियां, नाले और छोटी नहरियां बहा करती हैं। इनमें से कुछ बारहमासी भी होती हैं। कुछ का पानी गर्मी के मौसम में कम होने लगता है। बरसात आने पर वे फिर खिल उठते हैं। इन पानी के स्रोतों की पहचान, जो जहां है वहीं रह कर सकता है। कहीं-कहीं पुरानी बावड़ियां अभी भी हैं जो अपनी गहराई में पानी को बचाए हुए हैं। इन अकेली पड़ गई और भुतहा होती जाती बावड़ियों में कभी झांककर ही देख आएं। शायद ये फिर हमारे काम आ सकें।

नए कुएं तो ज़रूरत के अनुसार बनते ही रहते हैं और उन्हें खोदने वाले कई बार असफल भी होते हैं क्योंकि अब धरती में पानी काफ़ी नीचे चला गया है। नए तालाब भी अपनी गहराई को पूरी तरह पानी से भर नहीं पाते। क्योंकि नए ज़माने के बहुत से चतुर लोग पानी के बहाव की पारम्परिक दिशा का ठीक ज्ञान भी कहां रखते हैं। कहीं भी गड़ढा खोद लेने से तालाब

हमारे राजरोगी अपने
पानी पर कब्ज़ा ऐसे
हाथों में दे रहे हैं जिनसे
आने वाले कल में वे
वापिस नहीं ले सकेंगे।





जो लोग प्राकृतिक जल-स्रोतों को बचाने का कोई प्रयत्न नहीं करते, वे धार्मिक कैसे हो सकते हैं? इस प्रश्न के उत्तर की खोज में धर्म की दुकानदारी चलाने वालों को अभी से जुटना होगा।

नहीं बन जाता। हमारे पूर्वजों ने गांवों और शहरों में पानी की जो जगहें निर्धारित की थीं, वे आज भी प्रामाणिक हैं। अगर वहां स्रोत सूख गए हैं तो सबसे पहले हम उन्हें ही जिंदा क्यों न कर लें। जो सबके जीवन का आधार है उसे तो सबको मिलकर ही बचाना होगा। क्योंकि दुनिया में कुछ मुट्टी भर लोग ऐसे भी हैं जिन्हें पानी को बचाने की उतनी चिन्ता नहीं, जितनी बचे हुए पानी को बेचकर पैसा कमाने की है। नदियों को जोड़ने की जो चर्चा आजकल चलाई जा रही है उस पर अगर गहराई से सोचें तो वह संसार में पानी पर एकाधिकार करने की एक सोची-समझी चाल लगती है। जो धरती पर रेत और दलदल को बढ़ाएगी, बिन बुलाई बाढ़ें पैदा करेगी और किसी एक ताकतवर की तरफ पानी के बहाव को मोड़ देगी। पानी सबकी ज़रूरत है उसका मनमाना इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

यह बहुत जागरूक होकर पानी के साथ अपने रिश्ते पर गहराई से विचार करने का समय है। पिछले पचास सालों में हमारे मेहनती किसानों ने दूसरों के कहने में आकर कुछ ऐसे खाद और बीज अपनाए जिनकी फ़सलें ज्यादा पानी मांगती हैं। इस कारण आधुनिक विधियों से धरती माता की कोख में भरा उज्ज्वल पानी जल्दी-जल्दी उलीचा गया। अधिक लाभ कमाने की इच्छा से पानी की हत्या की जाती रही। यह दुष्कर्म आज भी जारी है। गांधीजी कहते थे कि 'किसान तो हमारी धरती का नमक हैं।' अब हमें इससे भी आगे जाकर अपने आदरणीय किसानों से कहना चाहिए कि आप तो धरती का जल भी हैं। आपके पसीने की बूंदों से ही माटी में नमक का स्वाद है और जल भी है। हमारे पूर्वज किसान कभी नमक के लिए बापू के पीछे चल पड़े थे। अब 'जल सत्याग्रह' के लिए उन्हें खुद आगे आना होगा।

क्या यह सम्भव नहीं कि सब लोग 'जल सत्याग्रह' करते हुए अपना पानी साथ लेकर चलने की आदत डाल लें। बात-बात में संकल्प का जल अपनी अंजुली में उठाने वाले देश के लोग अपना पानी साथ लेकर क्यों नहीं चल सकते। पर वह पानी नहीं जो बोतलों में बिकता है बल्कि वह पानी जिसे हम अपने घर से लेकर ही यात्रा पर निकलें। आंखों का पानी मरने लगे तो बाज़ार से पानी खरीदकर आंखें नहीं भरी जा सकती। बल्कि अपने ही भीतर संसार के प्रति संवेदना का वह स्रोत खोजना होगा जिसके कारण सबकी आंखें छलछला आती हैं। यही वह स्रोत है, जिससे कुएं भर सकते हैं, तालाब सूखने से बचाए जा सकते हैं। सारी नदियां निरंतर बहती रह सकती हैं।

“नदियां जोड़ने वालों

सत्याग्रह करते पानी की ‘कूक’ सुनो”

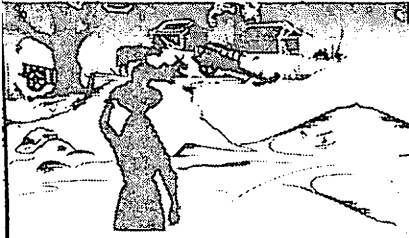
ध्रुव शुक्ल

बूँदों को देखो तो लगता है कि जैसे वे पानी के बीज हों। वर्षा धरती में पानी ही तो बोती है। पहले झले के पानी की एक-एक बूँद को पीकर धरती की गोद हरियाने लगती है। जैसे हरेक बूँद से एक अंकुर फूट रहा हो, जैसे धरती फिर से जी उठी हो। बरसात आते ही वह फूलों, फलों, औषधियों और अन्न को उपजाने के लिए आतुर दिखाई देती है। कोई धरती से पूछे कि उसे सबसे अधिक किसकी याद आती है तो वह निश्चित ही कहेगी कि पानी की। वह पानी से ऊपर उठकर ही तो धरती बनी है। वह पानी को कभी नहीं भूलती। वह तो पानी की यादों में डूबी हुई है। ग्रीष्म ऋतु में झुलसती हुई धरती को देखो तो लगता है कि वह जल के विरह में तप रही है। उससे धीरे-धीरे दूर होता जल और उसकी गरम सांसों एक दिन बदली बनकर उसी पर छाने लगती हैं और झुलसी हुई धरती के श्रृंगार के लिए मेघ पानी लेकर दौड़े चले आते हैं।

वर्षा के शुभागमन का स्वागत करने के लिए कविवर भवानी प्रसाद मिश्र हमें एक कविता लिखकर दे गए हैं। ‘पहिला पानी’ आते ही उस कविता की याद आती है ‘पहले झले का पानी जैसे अकास-बानी। दुनिया में उसने भर दी लो हर तरफ जवानी। हर एक अधमरे को बदली नचा गई रे, बरसात आ गई रे’। वर्षा आते ही चिड़िया की चहक खुल जाती है। वे घर के आंगन में दाना चुगने आती हैं। उनके पर उड़ान की नई ताज़गी से भर उठते हैं। सूखे झाड़ों पर नई पत्तियां झिलमिलाने लगती हैं। नालों, नदियों और झरनों के सूखे गान फिर वापस लौट आते हैं। किसानों को खेत बुलाते हैं। घर की छपरी में आल्हा का गान और ढोलक की थाप गूंजती है। जीने के गीत की सरगम पानी के बिना पूरी नहीं होती। संगीत में जैसे सात सुर होते हैं, एक स्वर सप्तक होता है, वैसे ही पानी के कई स्वर सप्तक हैं जिनमें पानी के

जब समाज और सेवा दो अलग-अलग शब्दों की तरह टूटते हैं तो बीच बची खाली जगह से सोशल वर्कर्स की घुसपैठ होती है। इन्हीं सोशल वर्कर्स में से तरक्की करके कुछ लोग एन.जी. ओज़ बनते हैं, फिर इन एन.जी. ओज़ को समाज की बजाए कम्प्यूटर की वैबसाइट्स में दूढ़ना पड़ता है।





पिछले दो सौ वर्षों की उथल-पुथल ने समाज को चलाने वाले नियमों को, अनुशासन को काफी हद तक तोड़ा था। समाज को जो चीजें टिकाती थीं, संचालित करती थीं, उनकी प्रतिष्ठा को इस दौर ने नष्ट किया। पुरानी व्यवस्थाएं टूटीं, लेकिन इनके बदले कोई नई कारगर व्यवस्थाएं उनकी जगह नहीं ले पायीं।

स्वर डूबे रहते हैं। जैसे जलतरंग के सात कटोरे हों, जिनमें से संगीतकार एक-एक स्वर बड़े ही सधे हाथों से उठाता है। ऐसे ही पानी के सप्त सरोवर, सप्तनद और सप्त समुद्र हैं, जिनमें से एक आचमन जल उठाने पर पूरे पानी का विन्यास झंकृत होता है। सूरज की सतरंगी किरणें भी तो हौले-हौले धरती से जल को ऊपर उठाती हैं, उतना ही वापस कर देती हैं। वैदिक ऋषिगण ऋचाएं गुनगुनाते हुए कहते हैं कि जब मेघ वर्षा करते हैं तो जल निनाद करते हुए बहता है।

जल जीवन का आधार है और सबसे प्राचीन मार्ग भी वही है। जो हमें न जाने कब से किनारे लगाता आ रहा है। हम ही अपने लिए सूखी गलियां खोजते और सड़कें बनाते पानी से दूर आ बसे हैं। पर पानी कहां हमारा पीछा छोड़ने वाला है। हम भले ही अपना रास्ता भूल जाएं, पानी तो अपना मार्ग जानता ही है। उसे अच्छी तरह याद है कि उसे कहां भरना है। भले ही हमने उसके किसी तालाब को पूरकर कॉलोनी बना ली हो, पर वह तो वहीं आकर भरेगा, हमें डुबोएगा, क्योंकि हमने पानी की जगह पर अतिक्रमण कर लिया है। पानी हमारे खिलाफ किसी अदालत में नहीं जाता, वह उसके रास्ते में आ गई अदालत को ज़रूर डुबो देता है। वह हर बरसात में हमारे द्वार पर दस्तक देता है कि मेरे तालाब, मेरी क़ब्ज़ायी नदियों की जगह खाली करो। मुझे अपने आस-पास बसेरा करने की साफ-सुथरी जगह दो। अब पानी उन सब व्यक्तियों, व्यापारियों और व्यवस्थाओं के खिलाफ़ आन्दोलन पर है कि मेरे रास्ते से हटो। मेरा रास्ता मत हथियाओ, मुझे अविरल बहने दो। कुइयों में, पोखर में, ताल में भरने दो। कुओं में आहिस्ता-आहिस्ता रिसने दो। पर्वत से मुक्त झरने दो। मुझे बांधते क्यों हो। क्यों मेरे रास्ते मोड़ते हो। मुझमें अपने पाप धोने वाले तुम कौन होते हो। मेरे रास्ते में गंदी नालियों के मुंह क्यों खोलते हो। अपनी पूजा के बासे फूल मुझमें क्यों बहाते हो। मुझमें डूबो, तैरो, पार हो जाओ, पर मुझे मत सताओ। आए दिन सड़कों और चौराहों पर मतलबी क्रिस्म के लोग जब धरने देते हैं तो उनकी तरफ कोई देखता तक नहीं। सब जान गए हैं कि इस तरह के लोग सत्याग्रही नहीं बल्कि 'गप्पयाग्रही' होते हैं। वे तो सिर्फ़ अपने लिए लड़ते हैं। पर पानी से बड़ा सत्याग्रही कौन होगा जो सबके हित के लिए अपनी राह बहता है। अगर वह आज गुजरात, मुम्बई में आंदोलित है, हमारे रास्ते रोक रहा है, हमारी बस्तियां डुबा रहा है तो हमें कुछ देर ठिठक पानी की इस सत्याग्रही 'कूक' को सुनना चाहिए।

58 हज़ार करोड़ की 'अप्राकृतिक आपदा' जैसी योजना का विकल्प 75 रुपये की पुस्तक आज भी खरे हैं तालाब

सुरेन्द्र बांसल

आज हमारे शासक वर्ग के पास किताबों में पढ़ाए जाने वाले उस कौए जितनी समझ भी नहीं बची, जिस 'प्यासे कौए' की कहानी स्वतन्त्रता के बाद देश के सरकारी और उजली ड्रेस वाले सभी स्कूलों की पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाई जाती रही है। हम सबने देखा कि जैसे ही देश की सरकार अथवा राज्य सरकारों पर सरकारें गिरने का खतरा मंडराने लगता है, तो प्रधानमंत्री से लेकर मुख्यमंत्री तक स्वयं को बेचारा यानी किसान बघारने लगते हैं। हालांकि उनके सार्वजनिक जीवन में किसानों की आचरण की कोई झलक कभी दिखायी नहीं देती और न ही उनके राज्यों में ऐसी कोई योजना ही दिखाई देती है जो किसानों के सचमुच हित में हो या भू-जल स्तर को सामान्य करती दिखायी देती हो। पंजाब-हरियाणा का उदाहरण बिल्कुल स्पष्ट है। किसान मुख्यमंत्रियों या किसानों के पक्ष में राज करने का बिगुल बजाने वाले ये दो राज्य आज गिरते भू-जल स्तर के कारण सबसे अधिक संकट में हैं।

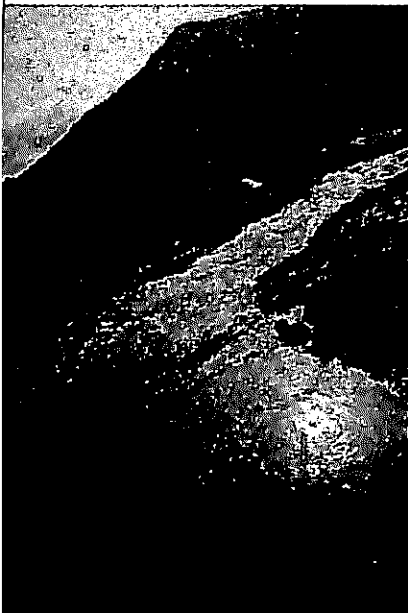
दिल्ली के गांधी शान्ति प्रतिष्ठान से छपी 1993 में एक पुस्तक जिसने देश के सभी राज्यों में हज़ारों कार्यकर्ताओं के मन-आत्मा को न केवल प्रभावित किया बल्कि अपने क्षेत्रों का कर्मठ कार्यकर्ता भी बनाया। दिल्ली से छपकर 'आज भी खरे हैं तालाब' नामक पुस्तक देश-विदेश तक जा पहुंची लेकिन सरकारों के दियों तले हमेशा की तरह अन्धेरा ही रहा। जिस 75 रुपये की पुस्तक के कारण लाखों लोग अपने जल स्रोतों से जुड़ गए उसी देश की सरकारें जल स्रोतों से लोगों को तोड़कर नदियां जोड़ने की बात कर रही है। सबको आपस में जोड़ने वाली भारतीय संस्कृति जैसी सरल और गहरी पुस्तक आखिर सरकारों को क्यों नहीं दिखती ?

आज राष्ट्रपिता जीवित होते
तो नमक सत्याग्रह की
75वीं वर्षगांठ पर देश का
जल बचाने के लिए अपनी
ही सरकारों के खिलाफ़
जल सत्याग्रह की भी
शुरुआत करते।





राष्ट्रीय प्राकृतिक जल की कमी एक सुविदित तथ्य है। फिर भी शहरों में शौच की ऐसी व्यवस्था जारी है, जो इस जल का भीषणतम दुरुपयोग करती है।



लेकिन फिर भी, हम सबका यह दायित्व है कि बेशक हमारे पास ढोल खरीदने के पैसे न हों, बहरे शासक वर्ग के समक्ष कनस्तर अवश्य पीटना चाहिए, ताकि उन्हें दिखे कि एक 75 रुपये की पुस्तक ने कैसे व्यवस्थाओं, रोज़ी-रोटी कमाने में ही थके-टूटे लोगों में कैसे अपनी समयसिद्ध और स्वयंसिद्ध परम्पराओं के प्रति कैसा नया उत्साह भर दिया है। आइए 'आज भी खरे हैं तालाब' पुस्तक के साथ उन राज्यों, कार्यकर्ताओं के द्वार-दरवाजे तक चलें जहां-जहां इस पुस्तक ने अलख निरंजन कहा है।

संसार में बहुत कम ऐसी पुस्तकें होती हैं जो न केवल पाठक तलाशती हैं बल्कि उन्हीं तलाशे पाठकों को कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ताओं के रूप में भी बदलती हैं। ऐसी ही एक पुस्तक है श्री अनुपम मिश्र द्वारा लिखित, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित 'आज भी खरे हैं तालाब'। इस पुस्तक ने न केवल हज़ारों, लाखों पाठक तलाशे बल्कि उन्हीं तलाशे पाठकों को कर्मठ, समर्पित सामाजिक कार्यकर्ताओं के रूप में भी ढाला। लाखों पाठकों को अपनी वसुंधरा से जोड़ते हुए अपनी मिट्टी, अपने जंगल, अपने तालाबों से जोड़ा और उन्हें बचाने के लिए प्रेरित किया। पुस्तक छपने के मात्र दस वर्षों के सफ़र में ही लगभग सारे ही देश में 'आवारा मसीहा' बन कर गुज़र रही है। अनुपम जी के ढाई आखर वाले प्रेम से ओत-प्रोत आलेख, दिलीप चिंचालकर द्वारा मनोयोग से बनाए रेखाचित्र, शीना के शोध और मंजुश्री के संयोजन में तैयार यह बेहद सुरुचि सम्पन्न पुस्तक निर्जल प्रदेशों में मेघदूतम बनकर बरसती जा रही है।

पूरे भारतवर्ष में तालाबों की, पानी के प्रति सम्मान की कैसी भव्य संस्कृति अपने इस देश में थी उसको 'आज भी खरे हैं तालाब' पुस्तक अंजुलि में भरे आचमन के जल में उन भव्य परम्पराओं के दर्शन दर्शाती है। तालाबों के निर्माण की विधियों के साथ-साथ अनुपम जी की लेखनी बेहद सहजता और सरलता के साथ उन गुमनाम, विस्मृत, बिसार दिए गए नायकों को भी ससम्मान फूलों की माला पहनाकर सबके दर्शनों के लिए बाहर निकाल लाती है जिन्हें लक्ष्यहीन पढ़ाई-पढ़ गए समाज ने पिछड़ा समझ नाक-मुंह सिकोड़ लिया है।

पुस्तक का पहला संस्करण 1993 में निकला था। इसका पांचवां संस्करण 2004 में अभी-अभी निकला है। देश की समय-सिद्ध और स्वयं-सिद्ध

और बेहद खरी पद्धतियों की तरह यह पुस्तक उतनी ही सचातन, उतनी ही नूतन बनी हुई है। अनुपम जी स्वयं इस पुस्तक की कामयाबी के बारे में स्वीकारते हुए कहते हैं, 'यह पुस्तक 1993 में जब पहली बार छपी, तब से लेकर जगह-जगह लोगों ने अपने पुराने तालाबों को बचाने और नए तालाबों के निर्माण का काम शुरू किया है। यह काफ़ी बड़ी श्रृंखला है - इसे गिनाना शायद अब सम्भव नहीं। अनुपम जी दोहराते हैं कि 'हम ऐसे समस्त प्रयासों को शीश नवाते हैं क्योंकि इन्हीं प्रयासों के चलते धीरे-धीरे हमारे माथे में जमी गाद कम हुई है और आज राज और समाज को फिर लगने लगा है कि तालाब तो हमेशा से ही खरे हैं।'

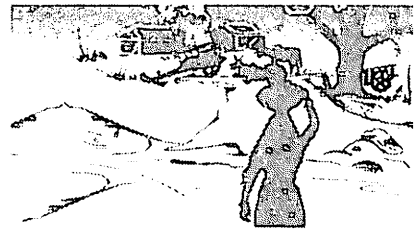
मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित, जल के प्रताप को देशभर में छिड़कने वाले जल प्रपात राजेन्द्र सिंह भी मानते हैं कि राजस्थान में 'तरुण भारत संघ' के कार्यक्षेत्र के भव्य काम को सफल बनाने में इस पुस्तक का बहुत बड़ा योगदान रहा है। लोगों को तो यह पुस्तक अपनी पुस्तक लगनी ही थी, सरकारी अधिकारियों तक को जो नौकरी का पहला दस्तखत और पहली तनख्वाह के बाद प्रत्येक काम से ऊबने लगते हैं, उनके माथे से भी इस पुस्तक ने तयोरियां हटाई हैं। हर जगह इस पुस्तक ने लोगों को अपने-अपने क्षेत्रों के तालाबों तक 'राजू गाइड' की तरह हंसते-गाते पहुंचाया है।

मध्यप्रदेश में सागर ज़िले के कलेक्टर श्री बी.आर. नायडू (आई.ए.एस.) जिन्हें हिन्दी भी ठीक से नहीं आती थी, किताब पढ़कर पूरे हौंसले से भरकर जगह-जगह लोगों से कहते कि अपने तालाबों पर काम शुरू करो, बस आप काम शुरू करो, प्रशासन आज नहीं तो कल चेतगा। श्री नायडू की छोटी सी अलख सागर ज़िले के लगभग 1000 तालाबों को निरंजन कर गई। इसी तरह शिवपुरी ज़िले के लगभग तीन सौ चालीस बिसरे तालाबों की सुध ली गई। मध्य प्रदेश के ही सीधी और दमोह के कलेक्टरों ने अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में इस पुस्तक की सौ-सौ प्रतियां बंटवाईं।

इसी प्रकार गुजरात के हीरा व्यापारी जो केवल अपने हीरों की चमक के पार कुछ नहीं देख पाते थे, तालाब बचाने के लिए आगे आए। उन्हें लगा कि मात्र हीरों की ही चमक ज्यादा लम्बा जीवन प्रदान नहीं कर पाएगी। इन व्यापारियों ने तालाब बचाने के लिए पूरा अभियान चलाया। राजस्थान का समाज जो बरसात का पानी बचाने में सबसे दक्ष समाज रहा है उसको भी



जिस देश के समाज में कुछ सैकड़ों वर्षों से पानी की रजत बूंदों को जगह-जगह समेट कर, सहेज कर रखने की एक परम्परा ने कुछ लाख कुंडियाँ, कुछ लाख बावड़ियाँ, कुछ लाख टांके, कई हज़ार कुईयाँ और लाखों तालाब बनाये हों उसी देश की सरकारें अब अपने देश के पानी की बोली लगाने पे उतारू हैं।





आज की अपेक्षा है कि सरकारों की भूमिका की पुनर्व्याख्या की जाए। यह पूरे समाज के लिए एक बड़ी चुनौती है। पिछले कुछ वर्षों में कुछ संस्थाओं और आंदोलनों ने यह सिद्ध किया है कि अनेक कठिनाइयों के बावजूद चीजें सुधारी जा सकती हैं, इसके लिए अगर साधना हो तो साधन भी जुट ही जाते हैं।

इस पुस्तक ने नई ऊर्जा दी। राजस्थान के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने इसी पुस्तक से प्रेरणा पाकर राज्य भर में सैकड़ों अभियान चलाए हैं।

जयपुर ज़िले के लापोड़िया गांव ने इसी पुस्तक से प्रेरणा पाकर न सिर्फ़ वहां के तालाब बचाए बल्कि वहां की चरगाघाहें, गोचर भी बचाए। ऐसे ही संघर्षों से उन्हें श्री लक्ष्मण सिंह उर्फ 'बना जी' जैसा नायक भी मिल गया। आज अकेला लापोड़िया गांव केवल अपने तालाब, गोचर बचाने से ही जयपुर डेयरी को सालभर में 30 लाख रुपये का दूध दे रहा है। लक्ष्मण सिंह के नेतृत्व में हजारों गांववासियों को गांव में ही क़ारोबार उपलब्ध हुआ है। सब नौजवान गांव के तालाब तथा गोचर बचाने में जुटे हैं। ऐसे प्रयासों से लगभग नब्बे गांवों से बिल्कुल पलायन रुक चुका है।

उत्तरांचल में पौढ़ी-गढ़वाल के उफ़रेखाल इलाक़े के 'दूधातोली लोक विकास संस्थान' के श्री सच्चिदानन्द भारती इस पुस्तक से इतना अधिक प्रभावित हुए कि वे सब काम छोड़ तालाब धुन को ही 'रामधुन' समझ जुट गए। पहाड़ों में पुरानी पड़ चुकी चालें (पहाड़ों में बरसात का पानी रोकने की पारम्परिक पद्धति का नाम) पुनः सजीव होने लगी। श्री सच्चिदानन्द भारती के प्रयासों के कारण अब तक उनके क्षेत्र में लगभग 10,000 चालें बन चुकी हैं।

अहिंदी भाषी राज्य कर्नाटक, वहां इस पुस्तक का प्रभाव सीधे राज्य सरकार पर हुआ। उन्होंने वहां तालाबों के जीर्णोद्धार का काम सीधे अपने हाथ में लिया। वहां एक अर्द्धसरकारी संगठन 'जल-संवर्धन योजना संघ' बनाया गया। अब यहां विश्व बैंक की मदद से तालाब बचाने की बहुत बड़ी योजना की रूपरेखा तैयार की है।

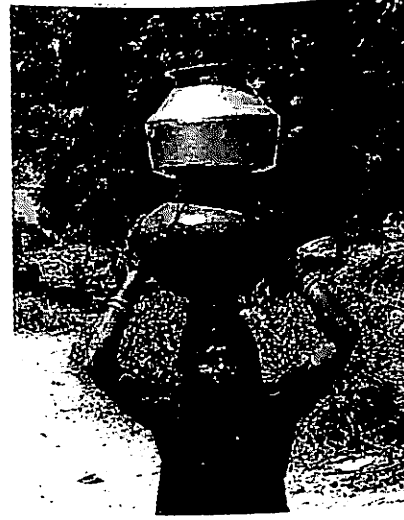
इसी प्रकार 'हरित क्रांति' के जेहादी नारे के बाद बंजर होने की ओर अग्रसर पंजाब के एक बेरोज़गार युवक ने 'तरकश' नामक पत्रिका में इस पुस्तक का पंजाबी अनुवाद धारावाहिक रूप में छपवाया। बाद में उसी युवक ने बेहद आर्थिक संकट के बावजूद इसे पंजाबी भाषा में पुस्तक रूप में छपवाया। पहला संस्करण 500 प्रतियों का था जो महीने भर में समाप्त हो गया। अब वही बेरोज़गार युवक हरियाणा के शाहाबाद मारकण्डा से इसका दूसरा संस्करण (2000 प्रतियों का है।) 'हमारा पर्यावरण' नामक संस्था तले छप

रहा है। उसकी योजना है कि 'पंजाबी' अनुवाद का यह दूसरा संस्करण पंजाब, हरियाणा के प्रमुख पंजाबी लेखकों, संतों, महंतों, गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी एवं सनातन धर्म सभाओं, गांव-गांव बनी नौजवान सभाओं, प्रमुख पंजाबी गायकों तथा कुछ बड़े उद्योगपतियों तक पहुंचाया जाए ताकि पंजाब-हरियाणा का लगातार गिरता भू-जल स्तर उठाने में कुछ जागरूकता बढ़ायी जा सके।

बंगाल का क्रिस्सा भी मजेदार है। हथियार गिराए जाने से सुखियों में आए छोटे से क्रस्बे पुरुलिया की एक घुमक्कड़ पत्रकार निरुपमा अधिकारी अकाल क्षेत्र का दौरा करती-करती एक ऐसे गांव में ठिठकी जहां उसे हरियाली दिखी, उसने जिज्ञासावश कुछ गांववासियों से पूछा कि इसका कारण क्या है? गांववासियों ने बताया कि हमारे यहां कुछ तालाब अभी ज़िंदा हैं। यही बात उनकी प्रेरणा बनी। उनके एक कहानीकार मित्र श्री श्याम अविनाश ने उन्हें 'तालाब' वाली यही पुस्तक भेंट की और निरुपमा पढ़ने के बाद तन-मन-धन से इसका अनुवाद बंगला में करने में जुट गईं। बहुत अभावग्रस्त होने के बावजूद उन्होंने बंगला संस्करण छपा और बंगला अनुवाद अब दूसरी बार छपकर आ चुका है। निरुपमा ने इस पुस्तक के प्रति ठीक वैसी ही श्रद्धा दिखाई जैसी एक समय बंगाल की महिलाओं ने शरत् चन्द्र की पुस्तकों के प्रति दिखाई थी। अब उनके एक मित्र श्री मुखर्जी इस पुस्तक के अंग्रेज़ी अनुवाद में जुटे हैं।

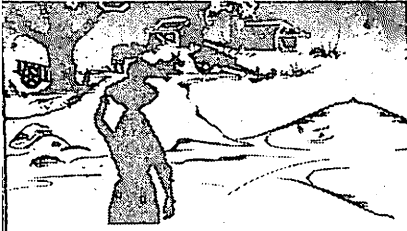
प्रत्येक राज्य से गुजरते हुए इस पुस्तक के क्रिस्से महाराष्ट्र भी पहुंचे। वहां औरंगाबाद के प्रसिद्ध इंजीनियर श्री माधव चितले, जो कभी दिल्ली में जल-संसाधन मंत्रालय में सचिव भी रह चुके थे, उनके हाथ यह पुस्तक लगी। उन्हें लगा कि इसका तुरन्त मराठी में अनुवाद होना चाहिए हालांकि यह पुस्तक आज की इंजीनियरिंग शिक्षा पद्धति के विरुद्ध है लेकिन फिर भी 'औरंगाबाद संस्कृति मंडल' ने इसे मराठी में छपा।

गुजरात भूकंप में ध्वस्त हो चुकी एक संस्था ने भी इस पुस्तक को छापने का बीड़ा उठाया। श्री दिनेश भाई सांघवी ने इस पुस्तक का अनुवाद करके स्वयं को धन्य पाया। इसी श्रृंखला में गुजराती के समाचर पत्र 'जन्म भूमि प्रवासी' ने पुस्तक को धारावाहिक रूप में छपा।



“गंगा भारत की आत्मा है उसका पानी अमृत है, ऐसा पूरा देश हज़ारों वर्षों से मानता आ रहा है लेकिन हमारे देश की संवेदनहीन राजधानी इस अमृत का प्रयोग अपने बाथरूम, शौचालय साफ करके 'गंगाजल' के प्रति श्रद्धा का भाव नष्ट करने में जुटी है।





सरकार नदियों को जोड़ने की बात तो अवश्य कर रही है, लेकिन इससे पड़ोस, गली, मोहल्ला सभी बिखर जायेंगे।

देशभर में नेचर लिडकने के बाद यह पुस्तक एक फ्रांसीसी हिन्दी विदुषी ऐनी मोती के हाथ लगी, उन्होंने इसका फ्रेंच अनुवाद कर दक्षिण अफ्रीकी मरु-प्रदेशों में पानी के लिए जूझते लोगों को सौंपा, जहां यह पुस्तक उनके मरु प्रदेशों की मृगतृष्णा झुठलाने के 'गिरमिटिए' का काम कर रही है।

निस्संदेह 'आज भी खरे हैं तालाब' 'आवारा मसीहा' बनकर अपनी मसीहाई बांटती जा रही है। गांधी शांति प्रतिष्ठान ने 1993 से 2004 तक इसके पांच संस्करणों में कुल 23000 प्रतियां छापी हैं लेकिन देश की अनेक संस्थाओं ने, कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने सीमित-असीमित साधनों द्वारा इसे एक लाख छब्बीस हजार तक पहुंचा दिया है। देश में आज़ादी के बाद और दूसरी किसी पुस्तक का ऐसा उदाहरण नहीं मिलता जिसे देश के लोगों ने शिरोधार्य किया और उससे प्रेरणा ले अपनी उन मृतःप्राय परम्पराओं के पास पहुंचे जो पिछले 200 वर्षों की अटपटी शिक्षा के कारण और व्यवस्थाओं की अव्यवस्थित धूल से अट चुकी थीं। एक मज़ेदार बात यह भी है कि प्रत्येक सप्ताह दिल्ली जैसे महानगर के दरियागंज इलाक़े में सजने वाले रविवारीय पुस्तक बाज़ार में पिछले दस वर्षों में इस पुस्तक की एक भी प्रति सड़क पर बिकने के लिए नहीं आई है।

भारत ज्ञान-विज्ञान परिषद् दिल्ली ने इसकी पच्चीस हजार प्रतियों का एक संक्षिप्त संस्करण छापा। मध्य प्रदेश जन सम्पर्क विभाग ने पच्चीस हजार प्रतियां छापकर सभी पंचायतों, ज़िला प्रशासन और नगर निकायों में निःशुल्क बांटी। भोपाल के राज्य संसाधन केन्द्र ने भी पांच सौ प्रतियां छापीं और वितरित कीं। अहमदाबाद की 'उत्थान माहिती' नामक संस्था ने पांच सौ प्रतियां छापकर बांटी। नागपुर के 'स्वराज्य प्रकाशन समूह' ने भी हिन्दी में पांच हजार प्रतियां प्रकाशित कीं। बिहार के जमालपुर इलाक़े की एक संस्था 'नई किताब' ने भी ग्यारह सौ प्रतियां प्रकाशित कर इसे जनसाधारण तक पहुंचाया। अब नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से इसे तेरह भाषाओं में एक साथ प्रकाशित किया जा रहा है। देश के लगभग आठ रेडियो स्टेशनों से इसका धारावाहिक प्रसारण हो चुका है। 'कपार्ट' की सुहासिनी मुले ने इस पुस्तक पर लगभग बीस मिनट की फिल्म भी बनवाई है। सीमा राणा द्वारा बनाई फिल्म दूरदर्शन पर सात-आठ बार प्रसारित हो चुकी है। भोपाल (मध्य प्रदेश) की पर्यावरण की एकमात्र पत्रिका 'नेचर टुडे' के सम्पादक श्री शब्बीर क्लादरी ने इस 'अकालजयी' पुस्तक के सम्मान में अपनी पत्रिका

में इस पुस्तक को ज्यों का त्यों छाप कर दूर-दूर तक पहुंचाया। अब श्री कादरी ने इस पुस्तक का उर्दू अनुवाद भी किया है, जिसे मध्य प्रदेश जनसम्पर्क विभाग के सहयोग से छपा गया है।



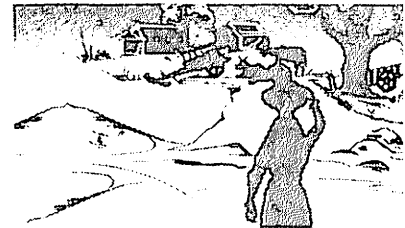
पंजाब में नाभा स्थित 'महरम पब्लिकेशन' के मुख्य सम्पादक श्री बी.एस. बीर इस पुस्तक को अपनी प्रमुख पत्रिका 'मॉडर्न खेती' में धारावाहिक रूप में छाप रहे हैं। अलीगढ़ से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'हमारी धरती' ने भी इसका धारावाहिक प्रकाशन शुरू कर दिया है। प्रो. आर.पी. शोख का एक प्रसिद्ध शेर है :

मैं वो बूंद जिसके खूं के बड़े रेगज़ार प्यासे।
अय नदी के बहते पानी मुझे अपने साथ रखना।

एक समय था जब मनुष्य जाति नदियों, मीठे जल स्रोतों में अपनी मातृ छाया ढूंढती थी लेकिन भगदड़ी विकास की खो-खो के इस दौर में हमने स्वयं अपने जल स्रोत उजाड़ लिए हैं, लोग जल स्रोतों के किनारों से उजाड़े जा रहे हैं। इस बेहूदे विकास में हमारी शिक्षा पद्धति, हमारे नीतिकार, योजनाकार और बिन पैदी के वो सब नेता जिनके दिमागों में सिर्फ़ रेगज़ार ही रेगज़ार भरे हैं, कहीं भी कोई हरियाली नहीं, इसमें सब शामिल हैं। आज़ादी के बाद बनाए गए बांधों के कारण लगभग चार करोड़ लोग उजाड़े जा चुके हैं। नदियों को जोड़ने से भी ऐसे ही प्रकरण सामने आएंगे।

दिल्ली के बड़े-बड़े सभागारों में जहां हिन्दी लेखक सफ़ेद कपड़े पहन हिन्दी किताबों को न पढ़ने वाले पाठकों का रोना रोते हुए अपने भाषणों के जाले लगाते रहते हैं वहीं अनुपम मिश्र की यह पुस्तक उन सब लेखकों के सामने से बेहद प्रेमपूर्वक, बड़ी विनम्रता से हाथ हिलाते हुए बारम्बार निकलती रहती है, यह याद दिलाते हुए कि मात्र 'कागद कारे' करने का कोई अर्थ नहीं होता, 'ढाई आखर प्रेम का' भी होना चाहिए।

राष्ट्रीय जल नीति द्वारा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि पानी की पहली ज़रूरत देशवासियों की है अथवा उन विदेशी कम्पनियों की जो हमारा पानी हमें ही बेचेंगी।



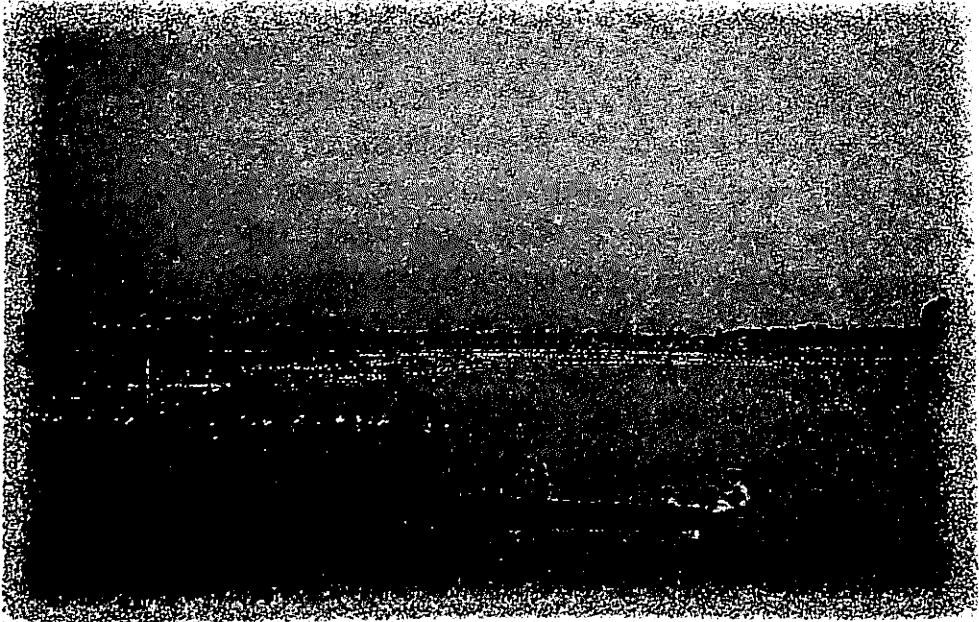


आधुनिक विद्या-केन्द्रों के पास कोई भी व्यवस्थित विचार तक नहीं है, जिसके अनुसार भारतीय शहरों में गंदगी के उत्पादन को घटाने और उत्पादित गंदगी के व्यवस्थित और बेहतर उपयोग का कोई राष्ट्रीय कार्यक्रम हो।

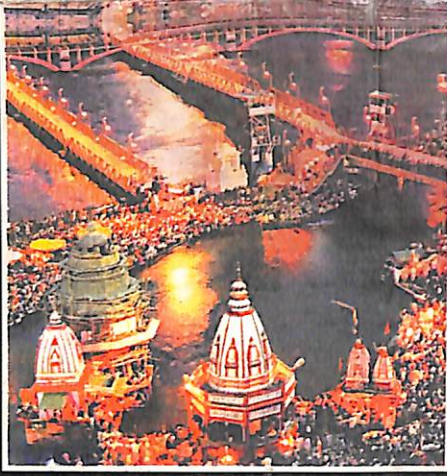
श्री अनुपम मिश्र ने 'आज भी खरे हैं तालाब' पुस्तक के माध्यम से भटकी हुई नैकियों को माँझा है। भगवान उन्हें देश के प्रत्येक राज्य के प्रत्येक कोने में गाँये जाने वाले लोकगीतों जितनी आयु प्रदान करें। जिस पुस्तक के कारण अपने जल स्रोतों से लाखों लोग जुड़ गए हों, वहीं नदी जोड़ो जैसी आतकी योजना बनाने वाले योजनाकारों के खास पानी के लिए भटकते प्यासे कौए जितनी भी समझ नहीं बची है कि ऐसी पुस्तकों में और पुस्तक के कारण अपने जल स्रोतों से जुड़े लोगों के मन में झांक ही लें।

नोट : आज देश का जल संकट में है इसलिए वे समस्त 'जल सत्याग्रही' जिनका दिल देश के लिए, अपने समाज के लिए धड़कता है, आने वाली पीढ़ियों की चिन्ता रखता है, वे अपने पारम्परिक जल स्रोतों की संभाल के लिए यह पुस्तक निम्न पते से सीधे 75/- रुपए में मंगवा सकते हैं ताकि नदियां बिकने से पूर्व अपने जल को बचाने के प्रति एकमुश्त हो हम मुड़ी भींच सकें।

श्री अनुपम मिश्र, पर्यावरण कक्ष
221, गांधी शांति प्रतिष्ठान, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-2



हमें खोजना ही चाहिए कि अपना समाज कैसे चलता था, आज कैसे चल रहा है और इसे आगे कैसे चलाया जा सकता है, ये सब सोचे बिना, हम सब पर मुसीबत आने वाली है। गांधी जी के शब्दों में "पता नहीं हम अपना यह कर्तव्य कब पूरा करेंगे। इसे नहीं निभा पाए तो हमारे समाज पर मुसीबत आने वाली है और यह आनी ही चाहिए, अगर समाज अपने को सुधारता नहीं है।"



“देश का मूल्य केवल ज़मीन, पानी और उसके ऊपर का आकाश ही नहीं है, बल्कि देश में बसे हुए मनुष्य भी हैं। यह जिस तरह हमें जानना चाहिए, उसी तरह हमारी देशभक्ति में केवल मानव-प्रेम ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी जैसे हमारे स्वजनों का प्रेम भी शामिल होना चाहिए।

नदी, पहाड़, पर्वत श्रेणी और उसके उत्तुंग शिखरों से तथा इन सबके ऊपर चमकने वाले तारों से परिचय बढ़ाकर हमें भारत-भक्ति में अपने पूर्वजों के साथ होड़ चलानी चाहिए। हमारे पूर्वजों की साधना के कारण गंगा के समान नदियां, हिमालय के समान पहाड़, जगह-जगह फैले हुए हमारे धर्म क्षेत्र, पीपल या बड़ के समान महावृक्ष, तुलसी के समान पौधे, गाय के जैसे जानवर, गरुड़ या मोर के जैसे पक्षी, गोपीचंदन या गेरू के जैसी मिट्टी के प्रकार - सब जिस देश में भक्ति और आदर के विषय बन गये हैं, उस देश में संस्कारों की और भावनाओं की समृद्धि को बढ़ाना हमारे ज़माने का कर्तव्य है। हम अपने प्रिय-पूज्य देश को साहित्य द्वारा और दूसरे अनेक रचनात्मक कामों से सजाएंगे और नयी पीढ़ी को भारत-भक्ति की दीक्षा देंगे”

काका कालेलकर



तरुण भारत संघ